MR. CHAIRMAN: Thank you.

श्री रामजी लाल सुमन : सभापति महोदय, यह दिशाहीन सरकार है और इन्हें कुछ पता नहीं है। मैं एक ही निवेदन करना चाहता हूँ :-

"अपनी हालत का ख़ुद एहसास नहीं है मुझ को,
मैं ने औरों से सुना है कि परेशान हूँ मैं।"

बहुत-बहुत धन्यवाद!

MR. CHAIRMAN: The hon. Member, who has just spoken, is a very senior Member of the House. He was my senior Minister in 1990.

PANEL OF VICE-CHAIRPERSONS

MR. CHAIRMAN: I have to inform the hon. Members that the following Members have been nominated to the existing Panel of Vice-Chairpersons for this Session:

1. Shri Tiruchi Siva (DMK)
2. Shri Rajeev Shukla (INC)

5.00 P.M.

MOTION OF THANKS ON THE PRESIDENT'S ADDRESS — *Contd.*

MR. CHAIRMAN: Now, Shri Lahar Singh Siroya to speak.

श्री लहर सिंह सिरोया (कर्नाटक): माननीय सभापति महोदय, मुझे राष्ट्रपति महोदया के अभिभाषण पर पेश किए गए धन्यवाद प्रस्ताव पर बोलने हेतु अवसर देने के लिए मैं आपको हृदय से धन्यवाद प्रकट करता हूँ।

[**उपसभाध्यक्ष (श्री राजीव शुक्ला**) *पीठासीन हुए।*]

महोदय, मेरे बोलते समय आप पधारे, मैं आपका भी स्वागत करता हूँ और आभार मानता हूँ। मैं इस गरिमामयी सदन में खड़े होकर खुद को सौभाग्यशाली और धन्य महसूस कर रहा हूँ कि आज मुझे अपनी बात रखने का अवसर देश की सबसे बड़ी पंचायत में मिला है।

महोदय, हमारी राष्ट्रपति जिस विनम्र पृष्ठभूमि से उठकर हमारे प्रजाप्रभुत्व के प्रजादंड को धारण करने के लिए आगे आई हैं, उनके प्रति मेरे मन में बहुत सम्मान है। मैं उनके संबोधन के लिए और सरकार के तीन मूल मंत्रों - 'सबका साथ, सबका विकास', 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' और 'विकसित भारत' पर दृढ़ता से ध्यान केंद्रित करने के लिए उनका धन्यवाद करता हूँ। मुझे पूरा विश्वास है कि ये तीनों विषय भारत को सामाजिक और आर्थिक रूप से गौरव का अवसर प्रदान करते हुए उसे सफलता के शिखर पर ले जाएंगे।

पिछले सप्ताह संसद के मेरे कुछ सहयोगियों ने संसद के संयुक्त सत्र को संबोधित करने हेतु राष्ट्रपति के यहां आने पर सेंगोल की आलोचना की थी, जो अब संसद का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन गया है। महोदय, मैं आपके माध्यम से यह बताना चाहता हूँ कि मैं साउथ इंडिया से आया हूँ और साउथ इंडिया में सबको मालूम है कि सेंगोल प्रजाधर्म और न्याय का प्रतीक है, यह राजदंड का प्रतीक नहीं है। यह प्रजादंड हमारे सामने हमेशा रहेगा। यह हम सबको यह याद दिलाता रहेगा कि हमें प्रजा के लिए काम करना है, किसी परिवार के लिए नहीं, अपने लिए नहीं, बल्कि राष्ट्र के लिए काम करना है। यह हमेशा हमको याद दिलाता रहेगा, क्योंकि हमारी ग्रैंड ओल्ड पार्टी की याददाश्त बहुत कमजोर हो चुकी है। वह राजदंड को अपने परिवार का राजदंड मानकर चलती है और यह आज खरगे जी की बातों से परिलक्षित हुआ। जिन खरगे जी का हम आदर करते हैं, उनको कर्णाटक की 6 करोड़ जनता ने चुनकर यहाँ पर भेजा है और पूरा देश उनकी तरफ देख रहा है, वे बड़े अनुभवी नेता हैं, #

उपसभाध्यक्ष (श्री राजीव शुक्ला): सम्मानित सदस्य, आप लीडर ऑफ अपोजिशन पर जो यह व्यक्तिगत आक्षेप लगा रहे हैं, यह आप ऐसे नहीं लगा सकते। ...(**व्यवधान**)... आप राष्ट्रपति के अभिभाषण पर बोलिए। ...(**व्यवधान**)... आप इसको राजनीतिक रूप से इस्तेमाल मत कीजिए। ...(**व्यवधान**)...

श्री लहर सिंह सिरोया: कोई बात नहीं, उपसभाध्यक्ष जी हमारे पुराने मित्र हैं। ...(**व्यवधान**)... अगर कुछ भी बुरा लगा हो, तो इसको मैं वापस लेता हूँ। सर, इसके साथ ही मैं यह कहना चाहता हूँ कि पिछले सप्ताह विपक्ष के मेरे मित्र संविधान की प्रति लहरा रहे थे। वे एक * कहानी गढ़ने की कोशिश कर रहे थे कि वे इसके रक्षक हैं और बाकी हम सब लोग इसको समाप्त कर देना चाहते हैं। उनकी याददाश्त कमजोर हो गई है, उनकी याददाश्त के लिए कुछ दवाई करनी पड़ेगी। मैं उनको याद दिलाना चाहता हूँ कि 1975 में संविधान का गला किसने घोंटा? मैं इसके बारे में बहुत विस्तार में चर्चा नहीं करना चाहता, क्योंकि समय की कमी है। लेकिन जिस तरह से जयप्रकाश नारायण को और यहां बैठे हमारे पूजनीय नेताओं को जेल में डाला गया था, वह बड़े शर्म और दुःख की बात है। आज हम एक-दूसरे की वाहवाही कर रहे हैं, उस पर पर्दा डालने की कोशिश कर रहे हैं, उसको भूलने की कोशिश कर रहे हैं और यह भ्रम फैला रहे हैं कि वे संविधान के रक्षक हैं,

---

Withdrawn by the hon'ble Member

* Expunged as ordered by the Chair.

जबकि वे संविधान के सबसे बड़े घातक हैं। मैं धारा 356 का उल्लेख नहीं करना चाहता हूँ कि उसका कब-कब और कैसे-कैसे उपयोग किया गया है।

हमारे डीएमके के साथियों को याद होना चाहिए कि 1998 में किस तरह से गुजराल साहब की सरकार गिराई गई थी। हमारे डीएमके के मित्रो, आप यह याद रखिए कि वह सरकार केवल इसलिए गिराई गई थी कि जैन कमीशन में डीएमके का नाम आने की वजह से यह कहा गया था कि अगर उनको नहीं हटाया गया तो हम सरकार से समर्थन वापस लेंगे। जब उस समय की गुजराल सरकार ने राइटली ही डीएमके को हटाने के लिए हामी नहीं भरी तो उस सरकार को गिरा दिया गया और किस तरह से उनको प्रताड़ित किया गया, ये सब हमारे डीएमके के साथी भूल गए हैं। महोदय, करुणानिधि को जेल में किसने डाला? आम आदमी पार्टी के हमारे मित्र जेल जाने वालों की सूची गिना रहे थे, लेकिन वे भूल गए कि ए.राजा और कनिमोझी को जेल में किसने डाला। तब हम तो नहीं थे! महोदय, ये भूल जाते हैं कि इनके बगल में जो पार्टी बैठी है, इसने 2011-12 में एक आंदोलन चलाया था और एक narrative स्थापित किया था। एक * या सच्चा narrative स्थापित किया जाता है। इस सरकार को हटाने के लिए किस तरह से आंदोलन हुआ था और कौन-कौन लोग उस आंदोलन से जुड़े थे, यह एक सोच का विषय है। वही ताकतें आज फिर narrative स्थापित करने के लिए आ गई हैं। मैं उनका नाम नहीं लेना चाहूँगा। जो लोग उस समय आम आदमी पार्टी से जुड़े हुए थे, उन्हीं लोगों ने आज एक ऐसा narrative स्थापित किया कि यह down हो रहा है, यह turn around हो रहा है। ऐसा एक * भ्रम फैलाकर उन्होंने यह narrative स्थापित करने की कोशिश की कि संविधान समाप्त हो जाएगा। ...(**समय की घंटी**)...महोदय, दो मिनट और दीजिए, प्लीज़। महोदय, ये जो जेल जाने की बात कर रहे हैं। मैं कांग्रेस के साथियों को याद दिलाना चाहूंगा कि # को जेल में भेजा किसने। मेरे पास सबूत है, मैं authenticate करता हूं। मैं सब लेकर आया हूं। यह आंदोलन किसने शुरू किया था? ...(**व्यवधान**)... यह आंदोलन किसने प्रारम्भ किया था? शराब घोटाले के ऊपर आंदोलन किसने प्रारम्भ किया था, आरोप किसने लगाया था? ...(**व्यवधान**)... आप बैठिए। ...(**व्यवधान**)... मैं yield नहीं कर रहा हूं। ...(**व्यवधान**)... महोदय, मैं yield नहीं कर रहा हूं। ...(**व्यवधान**)... शराब घोटाले के लिए पहला आरोप किसने लगाया?

उपसभाध्यक्ष (श्री राजीव शुक्ला): लहर सिंह जी, एक मिनट।

श्री लहर सिंह सिरोयाः महोदय, मैं yield नहीं कर रहा हूं। महोदय, शराब के घोटाले का आरोप कांग्रेस ने लगाया था। यह कौन सी वाशिंग मशीन थी, जिसमें पूरी की पूरी पार्टी धुल गई। ...(**व्यवधान**)... इन्होंने इन पर आरोप लगाया ...(**व्यवधान**)... आज ये इकट्ठे हो रहे हैं। ...(**व्यवधान**)... आप बैठ जाइए, आप कौन होते हैं मुझे बोलने वाले?

उपसभाध्यक्ष (श्री राजीव शुक्ला): लहर सिंह जी ।

#Withdrawn by the hon'ble Member.

श्री लहर सिंह सिरोयाः महोदय, ऐसा नहीं हो सकता, इन लोगों ने मेरा समय खराब कर दिया है ...(**व्यवधान**)... अभी बहुत कुछ कहना है। ...(**व्यवधान**)... महोदय, मैं एक कहानी कह कर अपनी बात समाप्त करूंगा। ...(**व्यवधान**)...

उपसभाध्यक्ष (**श्री राजीव शुक्ला**): लहर सिंह जी, एक मिनट के लिए बैठ जाइए। ...(**व्यवधान**)... जो लोग सदन में नहीं हैं, वे अपने आपको defend नहीं कर सकते हैं। परम्परा यह है कि उन पर आरोप नहीं लगा सकते हैं। इस बात का थोड़ा ख्याल रखिए। ...(**व्यवधान**)... आपका क्या प्वाइंट ऑफ ऑर्डर है?

श्री लहर सिंह सिरोयाः ठीक है, आपकी बात मान ली है।

श्री प्रमोद तिवारी: महोदय, 258 में मेरा प्रश्न था कि ...(**व्यवधान**)...

उपसभाध्यक्ष (**श्री राजीव शुक्ला**): आप एक मिनट में अपनी बात समाप्त कीजिए। मैं लहर सिंह जी को ज्यादा टाइम दे रहा हूं।

श्री लहर सिंह सिरोयाः महोदय, मैं एक बात और कहना चाहता हूं। मुझे एक छोटी सी कहानी याद आ रही है, उस कहानी को कह कर मैं अपनी बात समाप्त करूंगा।

उपसभाध्यक्ष (**श्री राजीव शुक्ला**): आप जल्दी कीजिए। आपका 7 मिनट का समय हो गया है, ज्यादा समय हो गया है।

श्री लहर सिंह सिरोयाः महोदय, बहुत छोटी सी कहानी है। एक आदमी के खिलाफ कोर्ट में मामला चल रहा था, तो उसने सोचा कि मैं हार जाऊंगा, तो उसने अपने साथियों को तैयार किया कि जैसे ही कोर्ट में फैसला आए, फैसला चाहे कुछ भी आए, आप लोग ज़िन्दाबाद-ज़िन्दाबाद के नारे लगा देना। जैसे ही कोर्ट में उसके खिलाफ फैसला आया, उसके 100-50 लोगों ने जमा होकर ज़िन्दाबाद-ज़िन्दाबाद के नारे लगा दिए, जो बेचारा जीतने वाला था, वह confuse हो गया। उसे 10 दिन के बाद मालूम पड़ा कि वह तो केस जीत गया है। इन हारने वालों ने नारा ऐसा लगाया, जैसे ये जीत गए हों। इनको mathematics नहीं आती है ...(**व्यवधान**)... ये उछलने लगे और ये नाचने लगे। ...(**व्यवधान**)... उपसभाध्यक्ष जी, ये कैसे नाचने लगे, जैसे नकली मोर नकली पंख लगाकर नाचता है।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI RAJEEV SHUKLA): Next speaker is Shrimati Sudha Murty. Is it your maiden speech, Madam? No, it is not maiden speech! Please, go ahead.

SHRIMATI SUDHA MURTY (Nominated): Respected Vice-Chairman, this is my first speech. It may not be a maiden speech. How much time do I have?

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI RAJEEV SHUKLA): Five minutes.

SHRIMATI SUDHA MURTY: I am not a politician and I do not know how to talk for or against, neither of them. I have been nominated by the hon. President of India. I am really grateful to her, and, of course, our Prime Minister, who announced my name on 8th of March, which is the International Women's Day, as a *nari shakti*. I have always worked for the poor and I am always on the field. So, my experience is entirely different from both sides of the House. I have been given only five minutes, and being a teacher, for me, five minutes is extremely small slot. However, I will try to do only two things. I am also an author. So, I always like to give analogy, *sanskrit shloka* and describe. It may not be possible to do that right now. Maybe, sometime later, if you give me maiden speech of fifteen minutes at least, I will be able to do that, Sir. यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः। That is what our ancestors used to say. "Where women are respected, that is the place where Gods reside." I want to tell you that the most important thing for the woman in general is her health because she always neglects her health and takes care of the family. And because of that, many women suffer in real life with cervical cancer. They will come to the hospital only when it is in the third or fourth stage. Being a daughter of a doctor and a sister of a doctor, I am aware of this. I have worked for 30 years with Infosys Foundation in this particular area. I want to give a suggestion. There is a vaccination which is given to girls between the age of 9 and 14. This is known as cervical vaccination. If the girls take that, it can be avoided. May I request the House to incorporate that vaccination for the benefit of our girls? Because prevention is better than cure. My father being a doctor always used to tell me that when a mother dies in the hospital, it is counted plus one, but for the family, a mother is lost forever. Maybe a man can get another wife, but the children will never get another mother. Mother plays an important role and cervical cancers are more in the latter part of life. My request is that our Government should look into this matter. They have handled a very big vaccination drive during COVID; so, this may not be very difficult. You can vaccinate our girls in the teenage years from 9-14. This is my first point.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI RAJEEV SHUKLA): Who has developed the vaccine?

SHRIMATI SUDHA MURTY: This vaccination was developed in the West. It has been there for a long time. It has been given for the last 20 years. I tried one batch ten years back with the Government of Tamil Nadu, under Dr. V. Shanta, Director, Adyar

Cancer Institute. It worked very well. I am sure it is not expensive. Today, it costs Rs.2,400 for a person like us who are in the field. But the Government can intervene and negotiate the price. For any business, it will be a win-win situation. They should also make certain money. But you can bring it down to Rs.700-800. We have such a large population. It will benefit our girls in future.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI RAJEEV SHUKLA): Ashwini *ji*, please convey it to the Health Minister, Shri Jagat Prakash Nadda.

SHRIMATI SUDHA MURTY: The second point about which I am going to talk is very dear to my heart. I may exceed one minute or two minutes, Sir.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI RAJEEV SHUKLA): No problem, Madam.

SHRIMATI SUDHA MURTY: That is regarding tourism in India. We always think that Ajanta & Ellora, Brihadisvara and Taj Mahal are the few places which everybody should see. That is really not true. Our country is vast. There is a very famous saying in *Subhashita*, 'बहुरत्ना वसुंधरा 'I Mother Earth has many, many diamonds, but we always neglect and care only for one. In India, we have 42 World Heritage Sites. But we have 57 sites which are pending. We should bother about those 57 sites. Only some of those I would like to mention here because there is no time. These are very important sites. I have personally visited these sites. Being a grand-daughter of a schoolteacher and a history teacher, for the last sixty years, I have been doing a lot of research in our own culture, in our temples and monuments in India. Whatever I have done, in a nutshell, I want to tell. There is a marvellous statue of Bahubali at Shravanabelagola which is a gem. It is in Karnataka. There are a group of monuments in Mandu in Madhya Pradesh. These are very, very beautiful monuments. There are caves. You take prototype of any temple in India. It is done in Badami, Aihole and Pattadakal. These are in northern part of Karnataka. I belong to that area. I am very proud of it. You see Lingaraja Temple. You see any temple in India. You look at Konark Temple. Prototyping had been done in 575 A.D. in Karnataka. These three places are not in the World Heritage Sites. If you go towards east, you have Tripura State which has fantastic sculptures known as Unakoti. Nobody knows who has done that. They are 1,500 years old. Then, you have natural roots bridge in Mizoram, in the Eastern part of India, which is God's gift to us. We go to other countries and see but we never value it; we have diamond in the hand but we search for broken glass pieces. There is a complex of temples in Srirangam. People from South India must

have seen them but I am sure that people from Northern and Eastern part of India must not have seen them. They are marvellous. They are as good as Brihadeeshwara Temple of Thanjavur, which is a world heritage site. There are beautiful Mughal Gardens in Kashmir. We always go and see the film shooting but we will never realize that they are not in the list of world heritage sites. The advantages of putting them in the list of world heritage sites are many. Firstly, the package should be done very well so that people can come and see them. The package should be done conveniently so that you have good toilets and good roads and tourists can come. It will increase revenue for our country. There are many advantages. I will speak about them in my maiden speech.

Sir, we have beautiful desert gardens in Rann of Kutch. People can see it only in certain months of the year. We should take advantage of that. Buddha was a great person. We are very proud of Him. Whichever country I go, they ask me, "Are you from the land of Buddha?" I always say, "Yes". He preached His first sermon in Sarnath, very near to Varanasi. It is a group of old monuments at Sarnath, which are 2,500-year old. It is not in the list of world heritage sites. Lothal of Gujarat is equivalent to Mohenjodaro-Harappa in Pakistan. We can't go there but we have Lothal and Dholavira. Dholavira is a world heritage site but not Lothal. Lothal was a big port. You should go and see how ships used to come there. It should come in the list of world heritage sites. We have forts of Maharashtra where हर-हर महादेव बच्चा-बच्चा बोला था। That is where Shivaji said, '*Jai Mahadev*' before every fight. There are Jal Durga, Van Durga, normal forts and the whole series where forts faced sea and also gave a great history to India, particularly to Great Shivaji in Maharashtra. That should come in the list of world heritage sites. There is a beautiful island on the River Brahmaputra in Assam. They call it Majul. My spellings may be wrong. ...(*Interruptions*)... Okay. It is Majuli. If you had seen it in some other country, they would have made it as the number one destination for wedding or entertainment or just to go and enjoy. But, 90 per cent of the people are not even aware of it. When you see the old Parliament, you say that these westerners had come and built this building; people from the UK came and built it. Sir, it is nothing but prototyping of a monument built a thousand years back in Madhya Pradesh. It is 30 kilometres from Gwalior. It is called Mitaoli; it is Chausath Yogini Temple. It is exactly the replica of that but in a prototyping. There are Padavali and Mitaoli. There is one more set of temples on the Chambal River which were saved because of dacoits. They are world class temples. The list is unending but I want to conclude with a famous Gumbad of Karnataka, that is, Gol Gumbad. It was ruled by Adil Shahi from about 1400 AD to 1685 AD. It is one of the marvellous things produced in India where you can have

sound echoed seven times. My list has 57 but my time is limited. This is an opportunity. As a young girl, I used to look at Rashtrapati Bhavan and Rajpath. I used to feel that those people are lucky who go there, who can talk and who can express. I never knew that one day will come in my life when I can stand and talk about what I believe in. I want to conclude with a *shloka* which our ancestors taught us or my grandfather taught us when I was young. He used to say, 'Whatever work you do, *beta*, do it with your mind, with *buddhi* and with 100 per cent concentration'. We are in a country where there is so much diverse culture but still we are all one, as we say, five fingers make a *mutthi*. We all have that character which is very much Indian character. We may differ in dress, food, language, etc. but we are all one. I want to serve in my tenure of Rajya Sabha with one single motto:

"कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा ।
बुद्ध्यात्मना वा प्रकृतेः स्वभावात् ।
करोमि यद्यत्सकलं परस्मै ।
नारायणयेति समर्पयामि ॥"

It is not my husband Narayana Murthy, it is *Narayana* the God or the God whom you believe in. It need not be *Narayana,* it could be anybody. So, single-minded, with my mind, with my *buddhimatta,* with my concentration, with my whatever the age I have -- I am going to be 74 -- but God willing I would put my 100 per cent in Rajya Sabha and work. *Jai Hind! Jai Bharat Mata!*

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI RAJEEV SHUKLA): Thank you, Madam. You made very valuable suggestions. Both the suggestions were very valuable and you spoke very well. *...(Interruptions)...*

श्री रामचंद्र जांगड़ा: महोदय, मेरा नाम बोला गया था, मैं थोड़ी देर के लिए बाहर गया था, क्या 5 मिनट मिल सकते हैं?

उपसभाध्यक्ष (श्री राजीव शुक्ला): किस चीज़ के लिए? ...(**व्यवधान**)... No, no. *...(Interruptions)...* She has got eleven minutes. So, do you want to speak? *...(Interruptions)...* नहीं, अभी आपका नंबर नहीं है, अभी दूसरे का नंबर है। मैडम, आप बहुत अच्छा बोली हैं। You truly spoke like a President's nominee and made valuable suggestions. *...(Interruptions)...* Now, A.D. Singh*ji* but Dr. Fauzia Khan has made a request that she wants to speak first as she has to catch a flight. So, Madam, please hurry up.

डा. फौजिया खान (महाराष्ट्र): सर, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद। अब के चुनाव के मेंडेट ने देश को कुछ स्पष्ट संदेश दिए हैं। जो पहला मेंडेट है, वह यह है कि जनता संविधान से खिलवाड़ नहीं होने देगी। जिस स्वतंत्रता के लिए हज़ारों जानें कुरबान की गई थीं, उस Indianness को वापस लाने के लिए यह mandate है। Number two, सरकार की marginal majority इस बात का सबूत है कि इस देश के कमजोर, पिछड़े, महिला, दलित, अल्पसंख्यक ने यह स्पष्ट रूप से दिखाया है कि इस देश का बहुत बड़ा हिस्सा हम ही हैं, नंबर 3 यह है कि यह mandate इस बार सरकार को accountable रहने की अपेक्षा दिखलाता है। सर, न marketing, न सपने, न guarantee, लेकिन अब की बार दिखाए सपने करने ही होंगे साकार। सर, अब सरकार को एक concrete roadmap देना होगा। पिछले दस वर्षों में निश्चित रूप से इस सरकार की कई उपलब्धियाँ रही हैं, जो हमें हर जगह, हर दिशा और हर तरफ दिखी हैं और स्पष्ट रूप से दिखती रही हैं। ये उपलब्धियाँ media में, hoardings पर, petrol pumps पर, परीक्षा पर चर्चा में, मन की बात में, vaccination के certificates पर, गरीबों के अनाज के packets पर, चंद्रयान पर, Russia-Ukraine war रुकवाने में, देव स्थानों में, हर जगह दिखी हैं और स्पष्ट रूप से दिखी हैं। सर, उपलब्धियों का गुणगान होना ही चाहिए, पर प्रकृति का नियम है कि nothing is ever perfect. सर, ये imperfections ही हैं, जो हमें perfection की तरफ लेकर जाते हैं, परंतु इसके लिए हमें अपने imperfections दिखने चाहिए। हमने H.G. Wells, की एक पुस्तक पढ़ी थी, जिसका नाम है - "The Invisible Man" - अदृश्य। सर, इसमें एक वैज्ञानिक एक ऐसी दवा बनाकर पी लेता है, जिससे वह अदृश्य हो जाता है, invisible हो जाता है। मुझे लगता है कि सरकार के पास भी कुछ ऐसी दवा होगी, जिससे स्वयं की विफलताएं, दूसरों की पीड़ा, दूसरों का दर्द आदि सब अदृश्य हो जाते हैं और केवल स्वयं की उपलब्धियाँ ही नज़र आती हैं। हर पीड़ा अदृश्य।

सर, महंगाई, बेरोज़गारी, किसानों की बढ़ती आत्महत्याएं, नदी में तैरती हुईं लाशें - सब अदृश्य। रेलवे अपघात के पीछे छिपी negligence - अदृश्य। सर, roads में crack, water leakages, bridge collapses, airport की छतें गिर रही हैं और उसके पीछे छिपा भ्रष्टाचार - अदृश्य। देश की महिलाओं की पीड़ा - अदृश्य, महाराष्ट्र की पीड़ा - अदृश्य है। आरक्षण की मांग को लेकर जो महाराष्ट्र दहक रहा है, गाँव-गाँव में लोग एक-दूसरे के दुश्मन हो गए हैं, उस प्रश्न का निवारण कहाँ है? महाराष्ट्र में तो नहीं है, वह इसी पार्लियामेंट में है, लेकिन यह भी अदृश्य है। सर, करोड़ों विद्यार्थियों की पीड़ा अदृश्य है। नीट की परीक्षा की इन्क्वायरी की बात तो की है, लेकिन इन 24 लाख विद्यार्थियों के भविष्य का क्या होगा, जिन्होंने इस बार नीट दिया है। इस बारे में हर बात अदृश्य है। सर, एक आश्चर्य की बात यह है कि इस विशाल देश में से एक राज्य ही अदृश्य हो गया है -मणिपुर। मॉब लिंचिंग्स होती रहीं, बुल्डोजर्स चलते रहे, परंतु यह पीड़ा न सोशल मीडिया पर दिखी, न मन की बात में दिखी। सर, अगर पीड़ा दिखाई न दे, अगर चीखें सुनाई न दें, अगर विफलताएं समझ न आएं, तो जवाबदेही का तो प्रश्न ही नहीं उठता है, माफी का तो सवाल ही नहीं है। पिछले दिनों में हमारे नेता देश से माफी माँगते थे, अगर कोई गलती हो जाती थी या कोई दुर्घटना हो जाती थी, तो अपना पद भार छोड़ देते थे। ऐसे बहुत नाम लिए जा सकते हैं - लाल बहादुर शास्त्री जी से लेकर बहुत सारे नाम हैं, जैसे आज एल. के. आडवाणी जी होंगे या केजरीवाल जी होंगे। ...(**व्यवधान**)...

ڈاکٹر فوزیہ خان (**مہاراشٹر**): سر، آپ کا بہت بہت شکریہ۔ اب کے چناؤ کے مینڈیٹ نے† دیش کو کچھ واضح پیغام دیا ہے۔ جو پہلا مینڈیٹ ہے، وہ یہ ہے کہ جنتا سمودھان سے کھلواڑ نہیں ہونے دیگی۔ جس آزادی کے لیے ہزاروں جانیں قربان کی گئی تھیں، اس Indianness کو واپس لانے کے لیے یہ مینڈیٹ ہے۔ نمبر دو، سرکار کی marginal majority اس بات کا ثبوت ہے کہ اس دیش کے کمزور، پچھڑے، مہیلا، دلت، اقلیتوں نے یہ واضح روپ سے دکھایا ہے کہ اس ملک کا بڑا حصہ ہم ہی ہیں، نمبر 3 یہ ہے کہ یہ مینڈیٹ اس بار سرکار کو accountable رہنے کی اپیکشا دکھلاتا ہے۔ سر، نہ مارکیٹینگ، نہ سپنے، نہ گارنٹی، لیکن اب کی بار دکھائے سپنے کرنے ہی ہونگے سرکار۔ سر، اب سرکار کو ایک concrete roadmap دینا ہوگا۔ پچھلے دس سالوں میں نِشچت روپ سے اس سرکار کی کئی اُپ لبدھیاں رہی ہیں جو ہمیں ہر جگہ، ہر دِشا اور ہر طرف دکھی ہیں اور اسپشٹ روپ سے دکھتی رہی ہیں۔ یہ اُپ لبدھیاں میڈیا میں، بورڈنگ پر، پیٹرول پمپ پر، پریکشا پر چرچہ میں، من کی بات میں، ویکسینیشن کے سرٹیفکیٹ پر، غریبوں کے اناج کے پیکیٹس پر، چندریان پر، روس یوکرین جنگ رکوانے میں، دیو استھانوں میں، ہر جگہ دکھی ہیں اور اسپشٹ روپ سے دکھی ہیں۔ سر اُپ لبدھیوں کا گن گان ہونا ہے چاہیئے، پر قدرت کا اصول ہے کہ .nothing is ever perfect سر، یہ imperfections ہی ہیں، جو ہمیں perfection کی طرف لیکر جاتے ہیں، لیکن اس کے لیے ہمیں اپنے imperfections دکھنے چاہیئے۔ ہم نے H.G. Wells کی ایک کتاب پڑھی تھی، جس کا نام ہے "The Invisible Man" ادشیے۔ سر، اس میں ایک سائنس داں ایک ایسی دوا بناکر پی لیتا ہے، جس سے وہ ادشیے ہوجاتا ہے، invisible ہوجاتا ہے۔ مجھے لگتا ہے کہ سرکار کے پاس بھی کچھ ایسی دوا ہوگی، جس سے خود کی وِفلتائیں، دوسروں کی پیڑا، دوسروں کا درد وغیرہ سب ادشیے ہوجاتے ہیں اور صرف خود کی اُپ لبدھیاں ہی نظر آتی ہیں۔ ہر پیڑا ادشے۔

سر، مہنگائی، بے روزگاری، کسانوں کی بڑھتی آتم ہتیائیں، ندی میں تیرتی ہوئی لاشیں، سب ادشیے۔ ریلوے اپگھات کے پیچھے negligence ادشے۔ سر، roads میں crack, water leakages, bridge collapses, airport کی چھتیں گر رہی ہیں اور اس کے پیچھے چھپا بھرشٹاچار، ادشے۔ دیش کی مہیلاؤں کی پیڑا ادشے، مہاراشٹر کی پیڑا ادشے ہے۔ آرکشن کی مانگ کو لیکر جو مہاراشٹر دہک رہا ہے، گاؤں گاؤں میں لوگ ایک دوسرے کے دشمن ہوگئے ہیں، اس پرشن کا نِوارن کہاں ہے؟ مہاراشٹر میں تو نہیں ہے، وہ اسی پارلیمنٹ میں ہے، لیکن یہ بھی ادشے ہے۔

سر، کروڑوں وِدیارتھیوں کی پیڑا ادشے ہے۔ نیٹ کی پریکشا کی انکوائری کی بات تو کی ہے، لیکن ان 24 لاکھ وِدیارتھیوں کے مستقبل کا کیا ہوگا، جنہوں نے اس بار نیٹ دیا ہے۔ اس بارے میں ہر بات ادشے ہے۔ سر، ایک حیرت کی بات یہ ہے کہ اس وشال دیش میں سے ایک راجیہ ہی ادشے ہے۔ سر، ایک حیرت کی بات یہ ہے کہ اس وشال دیش میں سے ایک راجیہ ہی ادشے ہوگیا ہے منی پور۔ ماب لنچنگ ہوتی رہیں، بلڈوزرس چلتے رہے، لیکن یہ پیڑا نہ سوشل میڈیا پر دکھی، نہ من کی بات میں دکھی۔ سر، اگر پیڑا دکھائی نہ دے، اگر چیخیں سنائی نہ دیں، اگر وِفلتائیں سمجھ نہ آئیں، تو جواب دہی کا تو سوال ہی نہیں اٹھتا ہے، معافی کا تو سوال ہی نہیں ہے۔ پچھلے دنوں میں ہمارے نیتا دیش سے معافی مانگتے تھے، اگر کوئی غلطی ہوجاتی تھی یا کوئی درگھٹنا ہوجاتی تھی، تو اپنا پد بھار چھوڑ دیتے تھے۔ ایسے بہت نام لیے جاسکتے ہیں۔ لال بہادر شاستری جی سے لیکر بہت سارے نام ہیں، جیسے آج ایل کے آڈوانی جی ہونگے یا کیجریوال جی ہونگے---(مداخلت)---

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI RAJEEV SHUKLA): Let her speak. *...(Interruptions)...* Let her finish. *...(Interruptions)...*

DR. FAUZIA KHAN: I am just finishing. Sir, accountability cannot be delegated.

उपसभाध्यक्ष (**श्री राजीव शुक्ला**): आडवाणी जी का भी नाम लिया है। ...(**व्यवधान**)...

† Transliteration in Urdu script.

DR. FAUZIA KHAN: If a leader rightfully takes credit for a success, a true leader, Sir, never refrains from accepting accountability for a failure, for a lapse and for a mistake by anyone in the chain of responsibility. सर, मैं इतना ही कहूँगी। हम चाहते हैं कि अबकी बार ऐसी सरकार हो, जो जवाबदेही ले। मैं अपनी बात एक गाने पर खत्म करना चाहती हूँ।

"हकीकत छुप नहीं सकती बनावट के उसूलों से
खुशबू आ नहीं सकती कभी कागज के फूलों से।"

سر، میں اتنا ہی کہوں گی۔ ہم چاہتے ہیں کہ اب کی بار ایسی سرکار ہو، جو جوابدہی ہے۔ †میں اپنی بات ایک گانے پر ختم کرنا چاہتی ہوں۔

حقیت چھپ نہیں سکتی بناوٹ کے اصولوں سے
خوشبو آ نہیں سکتی کبھی کاغذ کے پھولوں سے

उपसभाध्यक्ष (श्री राजीव शुक्ला): आपने बड़ा पुराना शेर पढ़ा है। श्री ए.डी. सिंह।

SHRI A.D. SINGH (Bihar): Sir, thank you, Mr. Vice-Chairman, Sir, for giving me an opportunity to speak on the Motion of Thanks on the hon. President's Address. I keenly heard the President's Address to both the Houses of Parliament where I was sitting. But, I feel that it was more a praise of the Government and it lacked clarity and direction on which side the Government is going. From fifth largest economy, we are going to become the third largest. पर हम यह जो थर्ड लारजेस्ट इकोनॉमी बन जाएंगे, वह किसके लिए बन जाएंगे? वह जो 800 मिलियन लोगों को पाँच किलो अनाज दे रहे हैं, जिसे लेकर सरकार बड़े गर्व से बोलती है कि ये हम सबको खिला रहे हैं, यह सबसे शर्म की बात है। ...(**व्यवधान**)... गर्व नहीं, शर्म की बात है, क्योंकि आप पिछले दस सालों में उन्हें कोई काम नहीं दिलवा पाए। ...(**व्यवधान**)... अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनने से कोई फायदा नहीं है। जो सच्चाई है, सच्चाई है। ...(**व्यवधान**)... हमारे बिहार में जो पाँच किलो अनाज मिलता है, उसके लिए गाँव में मजदूर नहीं मिलते हैं, क्योंकि कोई काम करना नहीं चाहता है। जहाँ तक इकोनॉमी की बात है, तो सरकार बोलती है कि हम लोग किसानों की इनकम बढ़ाएंगे। What measures they have taken, I fail to understand. Even in the last ten years, they failed to see that 30 to 40 per cent of the vegetables and fruits and almost ten per cent of the total agricultural produce go to waste in this country. It is because of lack of cold chain. Around 74 million tonnes of food is lost in India every year, which is 22 per cent of the total food output or ten per cent of the total food in horticulture put together in 2022-23. On the one hand, there is hunger and malnutrition and on the other hand, because of lack of cold chain, the fruits and vegetables are getting destroyed. अगर यह cold chain का एक छोटा काम सरकार कर दे, चाहे पब्लिक प्राइवेट पार्टनरशिप में ही कर दे, तो इससे फार्मर्स की definitely इनकम बढ़ेगी और देश में malnutrition कम होगा। Some cooperative like Amul

† Transliteration in Urdu script.

model or IFFCO model can really save a lot of agricultural products from being perished. Our agricultural growth is 1.4 per cent as per the latest provisional estimates of the Ministry of Statistics and Programme Implementation. There is a lot of 'feel good' in business circle about GDP growth and agriculture engages about 45 per cent of workforce. If the growth in agriculture is 1.4 per cent, one can imagine what is happening to the persons who are engaged in agriculture. अब थोड़ा irrigation पर बात कर लेते हैं। Particularly, in Punjab and Haryana, the Government has to encourage farmers to diversify in some other crop or on the cropping pattern, which is not being done. What will happen in the next 10-15 years is that the water table will go down. We are marching towards desertification. We have 18 per cent of the world population and 4 per cent of water resources. So water conservation में हम क्या कर रहे हैं? For example, in south of Bihar, there is always a water shortage. We can see the recent problem in Bangalore. All over India, what the Government is doing to enhance the groundwater level or to save water for drinking or agriculture purposes? As per DG, ICAR, rice is grown in India in 45 per cent rain-fed area and 55 per cent in irrigated area. The average usage of water to produce one kilogram of rice is 1,500 liters. The situation is alarming in Punjab and Haryana where there is indiscreet use of ground water. Even Delhi is going through water crisis. Days are not far away when there will be no water in many States and cities for irrigation and drinking. Efficient water management practices such as rainwater harvesting, water conservation, crop rotation, reduction in wastage and pollution, improved irrigation techniques and watershed management have to be adopted.

Let us see the rural demand. Rural demand is absolutely at the lowest level. As per NSO Household Consumption Expenditure Survey, the average per capita monthly expenditure in rural areas is only Rs. 3,773 in 2022-23. There is little purchasing power in the rural houses. We need to increase the purchasing power in rural areas by giving them work. But alternatively, we are giving them 5 kg ration and the Government thinks that that is enough for them for their livelihood. There had been largely stagnation or even marginal decline in the wages in the rural areas during the second term of NDA. In the rural areas, there is no demand. If you increase the demand, more employment will be generated. Unfortunately, labour-intensive areas are not being focused. The focus is only on the capital-intensive areas such as railways, highways, power infrastructure. The focus should be on rural infrastructure, basically, small projects so that rural employment can be generated. Now coming back to micro small and medium enterprises...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI RAJEEV SHUKLA): A.D. Singh*ji*, are you the only speaker from your party or there is other speaker also?

PROF. MANOJ KUMAR JHA: I have spoken. He is the only one.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI RAJEEV SHUKLA): Okay; then, you continue.

SHRI A.D. SINGH: Sir, micro, small and medium enterprises contribute more than 29 per cent to the GDP and responsible for 50 per cent of exports from India. The MSME are facing a lot of challenges after demonetization and COVID, such as financial constraints, compliance of regulatory issues, technological advancement, low productivity, shortage of skilled labour, concerted efforts from policy makers, financial institutions, industry associations and other stakeholders required to create enabling environment to the growth of the MSMEs.

Then, we also have to save our heritage from declining. The traditional handloom weavers of our country carry a rich culture and heritage for the generations together, but with the advances of technology, the art of traditional handloom weaving is drying up. The condition of handloom weavers in Bihar, particularly, in Bhagalpur is horrifying. The traditional handloom viewers of our country carry a rich culture and heritage for the generations together. But, with the advances of technology, that art of traditional handloom's weaving is drying up. The condition of handloom weavers, particularly, in Bhagalpur in Bihar is horrifying. Lakhs of weavers were there and now only a few thousands are remaining. Similar is situation in Varanasi in UP.

Now, coming to suicide committed by students in coaching center. There are lakhs of students who are undergoing coaching for various competitive exams in MBBS, IIT, etc., particularly, in Kota. It is very unfortunate and painful that every now and then, we hear these young students committing suicide under the pressure of studies. This is a poor reflection on our education system and social structure. I also want to state something on the judicial system in this country. The Preamble of the Constitution has placed justice, social, economic and political on the highest pedestal above all other basic structures. There are approximately five crore pending cases in the Supreme Court, High Court and Subordinate courts. It takes an average of 15 years for a civil case to reach a conclusion. In the Supreme Court, criminal cases are taking around eight years. This also results in overcrowded prisons as under-trials languish for years without a verdict. The Government is the biggest litigant...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI RAJEEV SHUKLA): Five crore cases in entire country, not in the Supreme Court.

SHRI A.D. SINGH: Yes. Sir, the Government is the biggest litigant; poorly drafted orders have resulted in litigation; less budgetary allocation to judiciary, which is just 0.8 per cent to 0.9 per cent of the GDP; also, ratio of Judges are very low, and every case gets prolonged by one of the litigants asking for dates. So, even, for example, a case under Section 138, which is cheque bouncing case, as per Supreme Court's direction, it should be finishing in six months. It takes years - 5 years, 8 years, for it to come to a conclusion.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI RAJEEV SHUKLA): That new law, Negotiable Instrument Act is not working!

SHRI A.D. SINGH: Sir, I beg your pardon.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI RAJEEV SHUKLA): That new law, Negotiable Instrument Act is not working!

SHRI A.D. SINGH: A very important aspect also is the Muslim representation. The Muslim population in the country is 15 per cent. Out of the 240 MPs of the ruling side, there is not a single Muslim MP. एक तरफ हम लोग 'सबका साथ, सबका विकास' की बात कर रहे हैं,

उपसभाध्यक्ष (श्री राजीव शुक्ला): किसी भी पार्टी को अपना अधिकार है कि वह जिसको चाहे, nominate करे। इसको राजनीतिक दलों के ऊपर छोड़ देना चाहिए।

श्री ए.डी. सिंह : मुझे पता है, मैं बिल्कुल सहमत हूँ, लेकिन उन्हीं के slogan के चक्कर में मैं बोल रहा हूँ कि 'सबका साथ, सबका विकास और सबका विश्वास' ...(**व्यवधान**)... उनका बिल्कुल रोल है। ...(**व्यवधान**)... सबका विकास हो ही रहा है।

एक चीज़, जो माननीया राष्ट्रपति महोदया को बोलनी चाहिए थी, वह थी, what is the healing touch we are giving to the State of Manipur? हमारी जो सरकार है, वह तो मणिपुर का नाम ही भूल गई है। जिस तरह का ethnic strife वहाँ चल रहा है, it may spread to other North-Eastern States of India.

दूसरी बात मैं यह कहना चाहूँगा कि कश्मीर में इनके हिसाब से सुख और शांति है, तो वैली में उन्होंने क्यों नहीं अपना candidate खड़ा किया और कोई जीता? कश्मीर में अवाम आज भी बिल्कुल परेशान है। उसके दिल को जीतने के लिए ...(**व्यवधान**)...

श्री दीपक प्रकाश (झारखंड): आप अपनी पार्टी के बारे में बताइए। ...(**व्यवधान**)...

श्री ए.डी. सिंह: आप उधर देख कर बोलिए। ...(**व्यवधान**)...

उपसभाध्यक्ष (**श्री राजीव शुक्ला**): एक मिनट, एक मिनट। ...(**व्यवधान**)...

श्री ए.डी. सिंह: कश्मीर में हम लोग अवाम का दिल जीतने के लिए कुछ भी ऐसा नहीं कर रहे हैं।

उपसभाध्यक्ष (**श्री राजीव शुक्ला**): आप शांत रहिए, उनकी speech समाप्त हो रही है। वे जम्मू-कश्मीर के बारे में बोल रहे हैं।

श्री ए.डी. सिंह: आज भी कश्मीर में जो अवाम है, वह दिल्ली की सल्तनत से खुश नहीं है। हम वहाँ के लोगों का दिल जीतने के लिए कोई effort नहीं कर रहे हैं। वहाँ पर ऐसा है कि सरकारी संस्था का कुछ भोज होता है, ...(**समय की घंटी**)... तो पता चलता है कि आगरा से cooks बुलाए गए हैं, जबकि कश्मीरी व्यंजन इतना अच्छा है कि I don't want to specify about people. But, I think I have given enough. Thank you very much.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI RAJEEV SHUKLA): Now, Shri Ajit Kumar Bhuyan.

SHRI AJIT KUMAR BHUYAN (Assam): Hon. Vice Chairman Sir, kindly allow me to speak at least for five minutes. Sir, we had very high expectations from the President's Address to the Joint session of Parliament in the light of people's mandate of 2024. What is the message of Manipur, Nagaland, Meghalaya and Mizoram where NDA could not open its account in the just concluded Lok Sabha polls? Is this Government punishing them for their total rejection? Sir, when a Government is formed, that Government takes care of all, but here, what we see is that two very important aspects of the region have been completely ignored from the President's address.

Sir, the Manipur ethnic conflict and Naga Framework Agreement signed in 2015 by the Government have been totally ignored and the intent of the Government demonstrates that the Government of the day is very insensitive to the plight of the suffering masses of the North East region. As I represent Assam in this House, I very humbly like to submit that Assam has been suffering from flood devastated problems and there has been a demand from all shades of political affiliation that the floods in Assam should be declared a national problem so that this issue can be addressed at

the national level on war-footing, but despite repeated assurances, nothing has been said in the President's address.

Sir, the financial situation of all eight States of the region is in a very bad shape and not a word has been said in the speech on how to make the region in comfortable financial discipline. Talking big things and doing lip service to the region will further alienate the region from the mainstream of the country and that is why I strongly urge the Government with folded hands that when the Prime Minister replies, he must address the Manipur conflict solution as well as his commitment to the Naga Framework Agreement besides other pertinent issues of the region.

Sir, I would like to caution the leadership of the Ruling Party that the Chief Minister of Assam must be restrained from creating communal division as the region was never like that, but his speech against a particular religious group may further alienate and that can be a big national loss. The targeting of particular religious groups and thus their alienation may cost the nation especially when the region is very vulnerable with bordering China and other hostile nations bordering the region.

Sir, several Chief Ministers of the region expressed strong reservations against the Chief Minister of Assam for his involvement in the polity of the region which people resented...*(Interruptions)*...

THE VICE CHAIRMAN (SHRI RAJEEV SHUKLA): One second Mr. Ajit, he wants to say something.

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF EXTERNAL AFFAIRS; AND THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF TEXTILES (SHRI PABITRA MARGHERITA): Sir, hon. Member has mentioned about the name of Assam Chief Minister. ...*(Interruptions)*...

SHRI AJIT KUMAR BHUYAN: Sir, let me finish. ...*(Interruptions)*...

SHRI PABITRA MARGHERITA: Just a while ago, the same incidence had happened when someone took name of Shri Arvind Kejriwal. So, it was decided not to mention a person's name who is not present here. But, right now he is alleging with some false allegations and taking Assam Chief Minister's name. ...*(Interruptions)*...

THE VICE CHAIRMAN (SHRI RAJEEV SHUKLA): He is mentioning about the State Government, he has not taken the name of the Chief Minister. ...*(Interruptions)*...

SHRI AJIT KUMAR BHUYAN: Sir, I can authenticate it. ...*(Interruptions)*...

SHRI PABITRA MARGHERITA: No Sir, it is not a matter of authentication. ...*(Interruptions)*...

SHRI AJIT KUMAR BHUYAN: Sir, several Chief Ministers of the region have expressed strong reservations against the Assam Chief Minister. ...*(Interruptions)*...

SHRI PABITRA MARGHERITA: Sir, the person is not present here and with false allegations, he is trying to...*(Interruptions)*...

SHRI AJIT KUMAR BHUYAN: For his involvement in the polity of the region, people resented through votes as he openly targeted the particular religious group who are in the majority there.I want to caution the Government; I want to help the Government. So, Sir, please allow me to say something on the plight of lakh of students who appeared in NEET exam this year.The deficit trust in the minds of students is a big challenge and if this situation is not addressed to the satisfaction of students, the national interest will be compromised as talented and meritorious students will be left out and mediocre and undeserved students will get through. This loss of human resources will have very bad impact on the quality of medical education. Sir, in the last ten years, 70 such leakages have taken place but I am sorry to say that no concrete corrective measure has been initiated. The demand by the opposition parties in both houses for the structured debate on the very pertinent issue of unfair means of leakage could have been a good attempt to find a solution, but that was not allowed by the Government.

Thank you, Sir, for allowing me to speak.

SHRI SANDOSH KUMAR P (Kerala): Mr. Vice-Chairman, Sir, thank you. I have some good reasons to oppose this Motion of Thanks on the President's Address. The President spoke for the Government, of course. But that one-hour long speech was full of untruth, half-truths and baseless claims. The fact is that the people of this country resoundingly rejected the politics of BJP, the politics of hatred, the politics of divisionism, the politics of cronyism. Of course, somehow they could manage. I think, this may last up to the Bihar elections. The Prime Minister, who is always showing his '56-inch', is now walking with political crutches of JD(U) and TDP, the history of which, of course, you know. The thing is that this Government is not going to last.

Sir, why have the people of the country practically rejected BJP and its politics? The BJP has become a hub of important people from other parties. It is their own business and I don't want to comment on that. We must note the extent of arrogance they have shown. On 24th of January this year, the Union Cabinet in its extraordinary meeting--they themselves declared it a Millennium Cabinet--adopted a resolution. In that resolution, it was stated Mr. Modi to be the liberator of the soul of this country! This shows how arrogant they are and how these people are disconnected from the reality. How can they describe a man, the Prime Minister, a liberator of the soul of this country? What does it mean? They don't know what the soul of this country is.

To show another example of the extent of their arrogance, I would like to say that the Union Finance Minister--of course, she is a well-known figure, a well educated Minister--soon after the verdict on electoral bonds, within days, her reply was, 'We will re-start it.' The Supreme Court rejected with reasons the concept of electoral bonds, which had helped the BJP in a big way. Within days, the Finance Minister of the country stated, 'No, we are not going to accept it, we will re-establish it!' This shows the extent of arrogance of the ruling dispensation.

Sir, now coming to another point, NEET, it is already spoken. I would like to know whether this National Testing Agency is a national toppler agency to destabilise everything? There are 1,100 cases registered against NTA since its inception in 2017. Almost all papers of the examinations got leaked. I demand the dismantling of this NTA. In fact, NEET is also not required. The States should get the authority. This NDA is a 'national demolition alliance' and it started this national toppler agency and it must be abandoned.

Sir, let me conclude by talking about Manipur. How can the President of the country speak without mentioning the word, 'Manipur'? They lost both seats in Manipur! But, even then its great Chief Minister is continuing there! I would like to ask: Has the BJP become so insensitive political party? So, Manipur has become pain for all of us. We have to address the issue properly and it is our responsibility.

With these words, I would like to conclude. Thank you.

श्री सामिक भट्टाचार्य (पश्चिमी बंगाल): सर, बहुत-बहुत धन्यवाद कि हमको अवसर मिला। हम राष्ट्रपति महोदया के अभिभाषण का स्वागत करते हैं। मैं पश्चिमी बंगाल से हूँ। मैं जब छात्र अवस्था में था, तब मैंने जनता एक्सपेरिमेंट को फेल होते देखा था। तब पूरे हिन्दुस्तान में एक ही आवाज़ थी कि वोट उसी को दो, जो पांच साल सत्ता में रह सके, one who can govern. यह श्रीमती गांधी की तस्वीर थी। उसके बाद क्या हुआ, यह सबकी जानकारी में है। राजीव जी कलकत्ता गए, चारों तरफ पोस्टर्स लगे, जिन पर लिखा था - Today's leader tomorrow's hope. हम लोग पश्चिमी

बंगाल में यही सुनते-सुनते बड़े हुए। जो हो रहा था, what was happening, everything was extra territorial-driven! सब यूएसए के नीचे आकर काम कर रहे थे। हम लोग कांग्रेस का यही स्लोगन सुनते-सुनते बड़े हुए कि "न जात पर न पात पर, मुहर लगाइए हाथ पर।" पश्चिमी बंगाल में कांग्रेस के हाथ पर मुहर लगाने के बाद हावड़ा के केंदुआ गांव में, जो कि एक छोटा सा गांव है, वहां सीपीआई (एम) ने कांग्रेस कार्यकर्ताओं का हाथ काट लिया था। कांग्रेस के जितने कार्यकर्ता थे, वे खुलेआम यह बोल रहे थे कि सीपीआई (एम) ने 50,000 कांग्रेसकर्मियों का खून कर दिया, मर्डर कर दिया। साथ-साथ, सीपीआई (एम) का कहना था कि पिछले दिनों में 10,000 सीपीआई (एम) कार्यकर्ता कैडर्स का बलिदान कांग्रेस के कारण हो गया। आप पश्चिमी बंगाल के किसी भी कोने में चले जाइए, वहां आपको छोटी-छोटी शहीद वेदी मिलेगी, जिसके नीचे लिखा हुआ है - "कॉमरेड अमर रहे। खून कौन किया? कांग्रेस के गुंडों ने इसको मार दिया।" वे सालाना एक बार उसके सामने खड़े होकर रेड सैल्यूट देते हैं। उसने जिंदगी भर कांग्रेस की आर्थिक नीतियों की आलोचना की। आज खरगे जी के सामने मैं यही बोलना चाहता हूँ कि क्या हुआ? आप लोग किसके साथ समझौता करके भाजपा का विरोध कर रहे हैं? जिन लोगों ने कभी भारतवर्ष को 28 टुकड़ों में बांटकर ब्रिटिश सरकार को स्वतंत्रता देने का प्रस्ताव दिया था, आज *"हवा के साथ-साथ, घटा के संग-संग, ओ साथी चल!"* हम लोग एक साथ चलेंगे। आप लोग किसके बारे में बात कर रहे हैं? तृणमूल कांग्रेस का जन्म किसलिए हुआ? तृणमूल कांग्रेस की ममता जी खुलेआम यह बोलती थीं कि Congress working as a 'B' team of CPI(M). आज पश्चिमी बंगाल की सत्ता में सीपीआई (एम) है। कांग्रेस ने इसको in a clandestine manner रख दिया! उसी के कारण तृणमूल कांग्रेस का जन्म हुआ। तृणमूल कांग्रेस को यह समझने में आठ साल लग गए कि भाजपा एक साम्प्रदायिक पार्टी है।

श्री इमरान प्रतापगढ़ी: नहीं, हम लोग पहले समझ गए थे।...(**व्यवधान**)...

श्री सामिक भट्टाचार्य: आप लोग पहले समझ गए हैं, मैं आ रहा हूँ। सर, "जय संविधान।" ...(**व्यवधान**)...

कई माननीय सदस्य: "जय संविधान।" ...(**व्यवधान**)...

श्री सामिक भट्टाचार्य: मैं आपके साथ हूँ। "जय संविधान।" ...(**व्यवधान**)...

कई माननीय सदस्य: "जय संविधान।" ...(**व्यवधान**)...

श्री सामिक भट्टाचार्य: आप नेहरू जी की उस स्पीच को याद कीजिए। In the Constituent Assembly, Jawaharlal Nehru gave a speech. He said, 'The State will be neither religious nor non-religious, but it will be free from all religions, dogmas and doctrines.' शाह बानो मामले के समय में क्या आप नेहरू जी की बात को भूल गए थे? 42nd अमेंडमेंट - क्या पंडित जवाहरलाल नेहरू, डा. भीमराव अम्बेडकर उस सेक्युलरिज़म शब्द से, सोशलिज़म शब्द

से परिचित नहीं थे? कौन से तरीके से 42nd अमेंडमेंट हुआ और आपने उसे insert कर दिया! जो लोग इधर बैठे हुए हैं, जो लोग आज बोल रहे हैं कि मोदी जी को fractured mandate मिला - मोदी एक सोच है, उस सोच को आप मार नहीं सकते। आप हिन्दुस्तान के सामने खड़े होकर कौन से saffronization की बात कर रहे हैं! On 19th July, 2022, an article was published in the *Indian Express*: 'Pythagorean Geometry in Vedic-era texts, centuries before Pythagoras'. खरगे जी, मैं आपसे हाथ जोड़कर निवेदन करता हूं। वर्ष 2016 से लेकर आज तक भारतीय जनता पार्टी के 200 कार्यकर्ताओं की मौत हो गई, पिछले चुनाव से लेकर अभी तक जितने कार्यकर्ता मारे गए, उनमें 80 परसेंट एस.सी./एस.टी. कम्युनिटी के हैं, minority के कार्यकर्ता हैं, क्या आपने एक बार भी ट्वीट किया? खरगे जी, हमारी बात को छोड़ दीजिए, पिछले पंचायत चुनाव में आपकी पार्टी के 10 कार्यकर्ताओं की मौत हो गई। * जी ने इसके बारे में open statement दिया। क्या आपने एक भी ट्वीट किया? क्या कांग्रेस के किसी भी आला नेता ने ट्वीट किया? वे * की बात करते हैं। In spite of all political differences,* विपरीत स्थिति में कांग्रेस को जिता कर लाए थे। सिर्फ अपने आपको नहीं, बल्कि वे स्वर्गीय प्रणब मुखर्जी जी के चुनाव के मैनेजर थे।

उपसभाध्यक्ष (श्री राजीव शुक्ला): भट्टाचार्य जी।

श्री सामिक भट्टाचार्य: सर, allow me to speak for two-three more minutes.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI RAJEEV SHUKLA): Bhattacharya*ji*, Shri * is not a Member of this House. So, he cannot defend himself. If you are taking an individual's name, he is not here to defend himself. Now, finish in thirty seconds.

श्री सामिक भट्टाचार्य: सर, मैं * जी की बात करता हूं, वे बड़े नेता हैं। हमारे प्रदेश से आते हैं।। have every right to mention his name in this august House. सर, वे कांग्रेस के एक बड़े नेता हैं।

उपसभाध्यक्ष (श्री राजीव शुक्ला): हां, लेकिन आपको रूल्स से जाना पड़ेगा।

श्री सामिक भट्टाचार्य: सर, * जी को पिछले म्युनिसिपल चुनाव में ...(**व्यवधान**)...

उपसभाध्यक्ष (श्री राजीव शुक्ला): आपका बोलने का समय समाप्त हो जाएगा। आप जल्दी अपनी बात समाप्त कीजिए। आप ढाई मिनट ज्यादा बोल चुके हैं।
श्री सामिक भट्टाचार्य: सर, ठीक है, मैं नाम नहीं ले रहा हूं।

---

* Withdrawn by the hon'ble Member.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI RAJEEV SHUKLA): Bhattacharya*ji,* you finish it quickly because I have already given you three minutes extra. ...*(Interruptions)*...

श्री सामिक भट्टाचार्य: क्या हाल है जनाब का, क्या ख्याल है कांग्रेस का - वह भी तो सोचना चाहिए। Sir, casteism does not exist in West Bengal like Constitution does not exist in Great Britain. हमारा पश्चिमी बंगाल political untouchibility और casteism से अलग है। हम लोगों ने बचपन से ही सुना।

जन्मना जायते शूद्रः संस्कारात् भवेत द्विजः।
वेद पाठात् भवेत् विप्रः ब्रह्म जानातीति ब्राह्मणः।।

सर, मैं कल खरगे जी का भाषण सुन रहा था। बहुत सारे ऋषि भारत में पैदा हुए, उनमें एक मनु भी था। उन्होंने एक आंदोलन किया - आप करिए अभी।

(MR. CHAIRMAN in the Chair)

फिलीपींस में जो मनु जी का स्टेच्यु है, उसको हटा दिया जाए। वे आकर जनता के सामने यह बोले। जिस भाषा में विपक्ष के नेता देश के प्रधान मंत्री के ऊपर आक्रमण कर रहे हैं, ...(**समय की घंटी**)... यह सही नहीं है। आपकी जो स्थिति है, विपक्ष की जो स्थिति है, वे जो चुनाव लड़े, उसका हिसाब एक ही था। Sir, please give me just one more minute to conclude.

6.00 **P.M.**

सर, मेरा यह कहना है कि ...(**व्यवधान**)...

MR. CHAIRMAN: One minute. Hon. Member, when the Chair says something, you must listen to the Chair.

SHRI SAMIK BHATTACHARYA: Yes, Sir.

MR. CHAIRMAN: I have to make an announcement.

Hon. Members, it is now 6.00 p.m. and the Discussion has not been concluded. If the House agrees, we may sit beyond 6.00 p.m. today to allow a few more speakers to participate in this debate. Do I have the leave of the House to extend the sitting beyond 6.00 p.m.?

SOME HON. MEMBERS: Yes.

MR. CHAIRMAN: Thank you. Please conclude.

श्री सामिक भट्टाचार्य : सर, मेरा कहना यह है कि आज पश्चिमी बंगाल में एससी/एसटी कम्युनिटी के ऊपर, माइनॉरिटीज़ के ऊपर आक्रमण हो रहा है। भारतीय जनता पार्टी के नौ कार्यकर्ता मारे गए हैं, एक मुस्लिम महिला के ऊपर अत्याचार हुआ। सर, मैं एक बात बोलकर कन्क्लूड करना चाहता हूं। आज से 100 साल पहले कलकत्ता यूनिवर्सिटी के वी.सी. आशुतोष मुखर्जी हुए थे। ...(**व्यवधान**)...

MR. CHAIRMAN: Please conclude.

SHRI SAMIK BHATTACHARYA: In the convocation meeting, he says, "Ministers may come and go, chancellors may blossom and perish, but my university, fellow graduates of the university will go on forever." उस समय के महामहिम राज्यपाल श्री जगदीप धनखड़ जी, आज आप यहां बैठे हुए हैं, आपको देखकर क्या बोला? ...(**व्यवधान**)...

MR. CHAIRMAN: Mr. Nagar.

SHRI SAMIK BHATTACHARYA: The State Government does not want…. Vice-Chancellor बोल रहा है कि I met you. *…(Interruptions)…* That is why you are not a welcome guest here. ऐसी स्थिति पश्चिमी बंगाल की है। There is a total breakdown of constitutional machinery…

MR. CHAIRMAN: Please take your seat. Now, Shri Mayankbhai Jaydevbhai Nayak.

श्री मयंक भाई जयदेव भाई नायक (गुजरात): सभापति जी, आज मुझे गर्व है और हमारी राष्ट्रपति जी ने जो अभिभाषण दिया है, उसके लिए मैं उनका आभार प्रकट करता हूं। माननीय मोदी जी की सरकार ने इस देश में ओबीसी समाज के लिए, पिछड़े वर्ग के लिए बहुत सारे काम किए हैं। ओबीसी आयोग को बंधारणीय दर्जा देने का काम जो पिछली सरकारों ने नहीं किया था, ओबीसी कमीशन को बंधारणीय हक देने का काम मोदी जी की सरकार ने किया है और हम यह डंके की चोट पर कह सकते हैं। ओबीसी में छोटे-छोटे समाज हैं, उनके उत्थान के लिए अनेक योजनाएं लाई गई हैं। मगर माननीय प्रधान मंत्री जी ने एक 'प्रधानमंत्री विश्वकर्मा योजना' लाकर जो समाज के छोटे-छोटे लोग हैं, उनकी उन्नति कैसे हो, उसके लिए भी प्रयास किया। न केवल कागज पर लागू करने के लिए, बल्कि जिले-जिले, तहसील और पूरे देश में इस योजना को लागू करने के लिए आदरणीय प्रधान मंत्री जी ने और राज्यों की सरकार ने इसका गठन भी किया है। यह सरकार आने वाले दिनों में देश कैसा हो, उसका एक रोड मैप बनाकर चल रही है, 2046 में जब भारत के 100 वर्ष पूर्ण होंगे, उसका भी रोड मैप बनाकर आगे बढ़ रही है। इस सरकार द्वारा गरीब, किसान, मजदूर और सबके लिए जो आरोग्य की सेवा है, उसके लिए आयुष्मान कार्ड के आधार पर पांच

लाख रुपये की मेडिकल सहायता की विशेष योजना लागू की है। माननीय प्रधान मंत्री जी जब गुजरात के तत्कालीन मुख्य मंत्री थे, तब उन्होंने वहां अमृतम कार्ड के जरिए दो लाख रुपये से गरीबों की सेवा कैसे हो, उसके हिसाब से उन्होंने यह योजना गुजरात में भी लागू की थी और उस योजना को पूरे देश में लागू करने से करीबन 55 करोड़ लोगों को इस सेवा का लाभ मिल रहा है। अब इस नई सरकार में 70 साल से ज्यादा उम्र वालों को भी इस योजना का लाभ मिलने वाला है। मैं माननीय प्रधान मंत्री जी और इस सरकार का तहेदिल से आभार व्यक्त करता हूं कि जो आरोग्य की सेवा में उन्होंने काम किया है, उससे देश के सभी लोगों को, सभी जाति और धर्म के लोगों को इसका लाभ मिलता है। माननीय प्रधान मंत्री जी जब गुजरात के तत्कालीन मुख्य मंत्री थे, वहां अमृतम कार्ड के जरिए दो लाख रुपए से गरीबों की सेवा कैसे हो, उसके हिसाब से उन्होंने गुजरात में योजना लागू की थी। उसी योजना को पूरे देश में लागू करके करीबन 55 करोड़ लोगों को इस सेवा का लाभ मिल रहा है। इस नई सरकार ने 70 साल से भी ज्यादा उम्र वालों को भी इस योजना का लाभ दिया है। मैं माननीय प्रधान मंत्री जी और उनकी सरकार का तहे दिल से आभार व्यक्त करता हूं कि जो आरोग्य की सेवा में उन्होंने काम किया है, उसका लाभ पूरे देश में सभी लोगों को, सभी जाति, सभी पंथ, सभी धर्म के लोगों को मिलता है।

गुजरात के अंदर 108 की योजना के अंदर माननीय प्रधान मंत्री जी ने, जब वे गुजरात के तत्कालीन मुख्य मंत्री थे, तब पूरे गुजरात में एम्बुलेंस का एक नेटवर्क बनवाया था। गुजरात के अंदर 24 घंटे थ्री फेज बिजली का प्रोविज़न किया था। उसके बाद उसको पूरे देश में लागू किया। माननीय प्रधान मंत्री जी की इस दूर दृष्टि के कारण गांव, गरीब, किसान, मजदूर के बच्चे गांव में रहकर कम्प्यूटर और मोबाइल के माध्यम से जो शिक्षा मिलती है, उसको ले रहे हैं। उन्होंने ही व्यवस्था की थी कि गरीबों के बच्चे लाइट में पढ़ सकें, आगे बढ़ सकें तथा अच्छी शिक्षा प्राप्त कर सकें।

कल माननीय खरगे जी ने कहा था कि माननीय मोदी जी चुनाव प्रचार में एस.सी., एस.टी., ओबीसी और पाकिस्तान की बात करते हैं। हमें पाकिस्तान के साथ क्या करना चाहिए? माननीय मोदी जी ने प्रधान मंत्री बनने के बाद पाकिस्तान के जिस तरह से दांत खट्टे किए हैं, उस बात को हम सब को मानना चाहिए और जानना चाहिए। इस देश में पहले गरीबों के नाम पर सरकार बनाते थे। गरीबी हटाएंगे, देश बचाएंगे, इस नाम पर ये हर बार गरीबों का वोट लेने का काम करते थे, मगर अब गरीब जाग गया है। आदरणीय प्रधान मंत्री मोदी जी की सरकार आने के बाद जिस प्रकार की सरकारी योजनाएं लागू हुईं, गांव, गरीब, मजदूर, किसान ने आदरणीय प्रधान मंत्री जी के...

MR. CHAIRMAN: Please conclude. ...*(Time Bell rings.)*... Conclude.

श्री मयंक भाई जयदेव भाई नायक: आज सभी लोग जाग गए हैं। कुछ लोग संविधान का नाम लेकर सबको भड़काने का काम कर रहे हैं। आखिर में, मैं एक बात जरूर बताना चाहता हूं कि देश के पूर्व प्रधान मंत्री कहा करते थे कि मैं दिल्ली से एक रुपया भेजता हूं, लेकिन लाभार्थी को 15 पैसे मिलते हैं। मोदी जी ने अब जो खरबों रुपया भेजा है, खरबों रुपया लाभार्थियों को भेजा है...

MR. CHAIRMAN: Thank you.

श्री मयंक भाई जयदेव भाई नायक: सर, एक मिनट। माननीय राहुल जी ने और कांग्रेस ने लोगों को 8,500 रुपए देने का वायदा किया था, अभी लम्बी-लम्बी लाइनें लगी हैं। मेरा निवेदन है कि उन लम्बी-लम्बी लाइनों को पैसा देने का इंतजाम किया जाये।

MR. CHAIRMAN: Thank you, hon. Member. Thank you. ...*(Interruptions)*... Shri Imran Pratapgarhi; five minutes.

श्री इमरान प्रतापगढ़ी (महाराष्ट्र) :

'मैं आईना हूं दिखाऊंगा दाग चेहरों के,
जिसे बुरा लगे वह सामने से हट जाए'।

सभापति महोदय, दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र के महापर्व का चुनाव गुजर चुका है। कांग्रेस मुक्त भारत का नारा लगाने वाले प्रधान मंत्री जी अपनी पथराई आंखों से किंकर्तव्यविमूढ़ होकर समीक्षा में लगे हुए हैं कि आखिर कसर कहां रह गई। सभापति महोदय, सारे प्रसंग किए गए, भाषाई मर्यादा को तार-तार किया गया। एक पूरी कौम को घुसपैठिया पुकारा गया। मछली, मंगलसूत्र, भैंस से होते हुए* जैसे शब्दों से भाषणों को सजाया गया। चुने हुए मुख्यमंत्रियों को जेल भेजा गया। महाराष्ट्र में राजनैतिक दलों को तोड़ा गया, उनके सिम्बल छीने गए, चाहे वह शिव सेना हो, चाहे वह एनसीपी हो। विपक्ष के सबसे बड़े दल के बैंक अकाउंट को फ्रीज़ किया गया, उसके बाद मोदी सरकार चुनाव लड़ने के लिए जनता के दरबार में गई, लेकिन वाह री जनता और जनता ने दिखा दिया,

'दर्द की हद से गुजर तो सभी जाएंगे,
तैरे या डूबे, किनारे तो सभी जाएंगे।
कोई कितनी भी बुलंदी पर चला जाए,
मगर आसमानों से उतारे तो सभी जाएंगे।।'

मैं महामहिम राष्ट्रपति महोदया के अभिभाषण पर चर्चा करने के लिए यहां पर खड़ा हुआ हूं। सरकारी भाषण की मजबूरियां होती हैं। सरकार की तारीफ करनी पड़ती है, लेकिन जिस एक शब्द के इर्द-गिर्द पूरा भाषण बुना गया था, वह था अमृत काल। सभापति महोदय, छात्र नौकरियां मांगने पर लाठियां खा रहे हैं, दो जून की रोटी मुहाल है, पेपर लीक ने लाखों छात्रों का भविष्य चौपट कर दिया है और देश को बताया जा रहा है कि अमृत काल आया है। कभी-कभी मेरा मन करता है कि मणिपुर में निर्वस्त्र करके घुमाई गई बेटियों से पूछूँ कि अमृत काल आया है या नहीं आया है। सभापति महोदय, कभी-कभी मन करता है कि देश के लिए ओलम्पिक में पदक लाने वाली बेटियां, जो इसी जंतर-मंतर पर घसीटी गईं, उनसे पूछूँ की अमृत काल आया है या नहीं

*Expunged as ordered by the Chair.

आया है, कभी-कभी मेरा मन करता है कि रात के 2 बजे बिना परिवार की मर्जी के हाथरस में जलाई गई उस दलित बिटिया, जिसके साथ बलात्कार किया गया था, उसको स्वर्ग में संदेशा भेजूं और उससे पूछूँ कि आया हुआ अमृत काल तुम्हें दिख रहा है या नहीं दिख रहा है! कभी-कभी मन करता है कि मैं बिलक़िस बानो से पूछूँ कि देश में आया हुआ अमृत काल तुम्हें नज़र आ रहा है या नहीं आ रहा है? सभापति महोदय, कभी-कभी मन करता है कि भीड़ के ज़रिए लिंच करके मारे गए पहलू खान की 85 साल की दोनों आँखों से अंधी माँ से पूछूँ कि देश में आया हुआ अमृत काल तुम्हें दिख रहा है या नहीं दिख रहा है, कभी-कभी मन करता है कि ईद के कपड़े खरीदकर लौट रहे 17 साल के हाफ़िज जुनैद से पूछूँ, जिसे बल्लभगढ़ में ट्रेन में लिंच करके मार दिया गया कि देश में अमृत काल आया है या नहीं आया है, कभी-कभी मन करता है कि नजीब की माँ से पूछूँ, कभी-कभी मन करता है कि तबरेज अंसारी की विधवा से पूछूँ, कभी-कभी मन करता है कि सहारनपुर के उन तीन बच्चों से पूछूँ, जिन्हें छत्तीसगढ़ में लिंच करके मार दिया गया। सभापति महोदय, कभी-कभी मन करता है कि मैं गुजरात के चिखोदरा में क्रिकेट मैदान में लिंच करके मार दिए गए सलमान वोहरा के परिवार से पूछूँ कि अमृत काल आया है या नहीं आया है? ..(**व्यवधान**)..कभी-कभी मन करता है कि मैं अलीगढ़ के औरंगज़ेब उर्फ फरीद से पूछूँ, जिसे लिंच करके मार दिया गया और बाद में उसी मृतक के ऊपर डकैती का मुकदमा कायम किया गया।

सभापति महोदय, यह कैसा अमृतकाल है, जिसके अभिभाषण में स्वास्थ्य पर सिर्फ आधे मिनट पर चर्चा हुई? कैंसर के मरीज दिन-ब-दिन बढ़ रहे हैं, हँसते-खेलते बच्चे कभी क्रिकेट के मैदान में, कभी जिम में हार्ट अटैक से जान गँवा रहे हैं और इस सरकार के पास स्वास्थ्य पर बात करने के लिए सिर्फ आधा मिनट है। सभापति महोदय, कोविड वैक्सीन को लेकर लंदन की अदालत से जो तथ्य देश के सामने आए हैं, उन्होंने भय फैला रखा है। कांग्रेस की सरकारों ने भी चेचक, पोलियो और प्लेग जैसी महामारियों के टीके लगवाए, लेकिन न तो कभी सर्टिफिकेट पर अपना फोटो छपवाया और न ही उसके नाम पर कभी वोट मांगे। कांग्रेस की सरकारों ने यह किया है, लेकिन इन सरकारों ने क्या किया है, मोदी जी ने क्या किया है?..(**व्यवधान**).. सभापति महोदय, मैं आपसे अंतिम एक मिनट लूंगा।

श्री सभापतिः आधा मिनट लीजिए। Please conclude. You have made a speech. You know what you have added.

श्री इमरान प्रतापगढ़ीः सभापति महोदय, मैं अंत में यही कहना चाहता हूं कि चुनाव समाप्त हो चुके हैं, सरकार बन चुकी है, लेकिन मुझे इस देश के प्रधान मंत्री जी से यह कहना है कि आप नारे लगाते थे - 'सबका साथ-सबका विकास' ...(**व्यवधान**)..सर, अंतिम बात है। सर, यह * है या सच्ची है, वह बात अलग है। ...(**व्यवधान**)...

*Expunged as ordered by the Chair.

MR. CHAIRMAN: Nothing will go on record. Your time is over. ...*(Interruptions)*... Can't you follow time also? Take your seat now. ...*(Interruptions)*... Shri Jose K. Mani. ...*(Interruptions)*... Nothing will go on record. ...*(Interruptions)*...टाइम नहीं बाकी है, मैं देख रहा हूं। आप उस पर मत देखिए। ..(**व्यवधान**)..Pramodji, on the point of time पर सुन रहे थे।

SHRI JOSE K. MANI (Kerala): Sir, I am losing my time. A dialogue is going on there. ...*(Interruptions)*...

श्री सभापति: आप भी बोल लीजिए, शक्तिसिंह जी भी बोल लें। आपके कितने एडवाइजर्स हैं, मुझे बता दीजिए। ..(**व्यवधान**)..

श्री शक्तिसिंह गोहिल (**गुजरात**): सर, आखिरी के दो मिनट बाकी थे।..(**व्यवधान**)..

श्री इमरान प्रतापगढ़ी: सर, एक बात कहने दीजिए।

MR. CHAIRMAN: No. Nothing will go on record. ...*(Interruptions)*... What is this? Pramodji, you rise, Shri Shaktisinh Gohil rises, and rising has become a habit. The Leader of the Opposition is present here. He has again risen. ...*(Interruptions)*...

SHRI SHAKTISINH GOHIL: Sir, can't I rise? ...*(Interruptions)*...

MR. CHAIRMAN: No. You can't rise unless I say so.

SHRI SHAKTISINH GOHIL: Sir, when a topic is on, I have got the right to rise. ...*(Interruptions)*... There were two minutes left. The Member was speaking. ...*(Interruptions)*...

MR. CHAIRMAN: Mr. Shaktisinh, I have indicated to you that the board was not functioning. I am very particular to ensure that every Member gets the time that is allotted to him. Don't try to become a judge in your own court. And secondly, if your party will give you the authority to say so...

SHRI JAIRAM RAMESH: Sir, we are giving him the authority.

MR. CHAIRMAN: Who are you to give the authority? The Leader of the Opposition has to give the authority.

SHRI SHAKTISINH GOHIL: Sir, my Whip has given me the authority. The Party has given me the authority. Give him two minutes. ...*(Interruptions)*...

MR. CHAIRMAN: Khargeji, what is happening? Look at what is happening. ...*(Interruptions)*... Okay. Take your seat.

SHRI SHAKTISINH GOHIL: Sir, just give him two minutes. It is my humble request to you.

MR. CHAIRMAN: No. Shri Jose K. Mani, please start. ...*(Interruptions)*...

SHRI JOSE K. MANI: Sir, it is my maiden speech in this term. How much time do I have?

MR. CHAIRMAN: Keep to the time, Mr. Jose K. Mani.

SHRI JOSE K. MANI: Sir, India will not be a good place to live in unless we make it a good place for all of us to live in. The President's Address totally failed to address the harsh life realities faced by the majority of Indian population, the poor and the farmers. It is a fantasy tale detached from reality. I rise here to voice the deep frustration and the genuine concerns of people. Our youth are the future of this nation. Their dream of becoming doctors, engineers and teachers has been lost. On-going NEET and NET issue has cast a shadow on their ambition. It is a colossal mess. Around 25 lakh youths are affected by this. I call this issue a national disaster because, as I said earlier, the youth are the future of our nation; they are to be protected. We know that 60 per cent of our population is youth. That is our strength. But their aspirations are being tarnished, trampled, destroyed and literally killed. Just like what we witnessed during the Manipur issue, the Prime Minister's silence on this matter is unacceptable. We demand an immediate action. At this point, I would like to raise an issue that the income gap between the rich and the poor is rocketing to such levels that defy logic. According to the recent UNDP Report, top 10 per cent of the population get 57 per cent of the national income and top 1 per cent get 22 per cent. This is one of the most unequal income distribution anywhere in the world. A recent study in Kerala -- it relates to all the States -- indicated that income increase of the organised sector between 1968 and 2023 is 436 times whereas the price of agricultural produce increased by just 33 times in the same period. It relates to all the States. The income

gap increase is beyond imagination. Instead of addressing their legitimate grievances, the Government brands them anti-national and employs forces to silence their voices.

Another pressing issue is the escalating incidents of human-animal conflicts. It happens in almost all the States, especially in southern India. People in Kerala live in constant fear of sudden wild animal attack in human settlement areas. Even though the life of a human being is guaranteed under the Constitution, wild animals are free to kill human beings when they enter a habitat area. There should be an amendment in the Wildlife Protection Act, 1972. Human-animal conflict is a crisis which is ignored by outdated laws. This should be stopped with immediate effect and the relevant Act should be amended to ensure safety of people.

What about the rising incidents of communal violence and intolerance. What about the targeted attacks on minority communities and suppression of dissenting voices. The Government's silence on these matters speaks volume of its intentions. I conclude by saying that let us not be swayed away by the eloquence of the President's Address, let us, instead, focus on the live experience of our people.

MR. CHAIRMAN: Shri Haris Beeran; it is a maiden speech. Try to be brief.

SHRI HARIS BEERAN (Kerala): Sir, I am very thankful to you for giving me this opportunity. I stand here on behalf of my Party, Indian Union Muslim League, led by Syed Sadik Ali Shihab Thangal. I am thankful to my leader, Shri Abdul Wahab, who have given me this opportunity on the very first day of my swearing-in. This is a day which I will never forget. I have heard the Speech of the Hon'ble President. Now, as we all know, the Hon'ble President is an icon of women empowerment and determination. The way she has come forward in her life and has become the First Citizen of India is exemplary and is a role model for everyone. However, it is very sad to see and note that the Government has made her to read a script which is far from truth and has missed certain vital points.

The first vital point, which I thought was missed, is about the conduct of census and the caste census. Sir, you are an expert in legal field and you are an eminent lawyer. The caste census is a constitutional mandate under Article 16(4), that the Government has to conduct a caste census every ten years. Why is the caste census to be conducted? It has to be conducted because Article 16(4) of the Constitution specifically says that there has to be representation of the backward class communities in the Government. Now, if we see whether the representation of the backward class communities has, in fact, come in the government jobs, it can only be done through a caste census and that is why the Constitution and the statute

have mandated and that is why Mr. Rahul Gandhi, the leader of the Congress Party, has, time and again, asked for the conduct of the caste census. Various States have conducted it. But, unfortunately, the Centre is completely silent on this aspect.

Now, I represent the State of Kerala. As far as the federalism is concerned, the Government is, actually, on a blinking mode. The Government is strangulating my State, as far as the economy is concerned. My State was forced to go to the Supreme Court to get funds from the Centre. Our neighbouring State, the State of Karnataka, was also forced to go to the Supreme Court to get certain drought relief funds released from the Centre. So, it may not be a nice part or a nice feature on the part of the Central Government to strangulate States like this when federalism is the core of the Constitution of India.

Now, attacks on dalits and minorities, in the month of June, post declaration of the general election results, portray a very sorry state of affairs. There have been a lot of instances of hate speech. Now, when the Prime Minister of the country speaks, the whole world listens to the Prime Minister. If the Prime Minister of the country speaks in such a manner that one community gets offended, it emboldens the fringe elements. Now, this emboldening of the fringe elements has led to various attacks on the minority communities post June 2024. There have been instances of casualties in Raipur, Madhya Pradesh, Aligarh and Lucknow in U.P. There have been instances of casualties in Gujarat where a teenager was killed while watching a cricket match. So, these kinds of attacks and hate speeches against the minority communities have been there. Sir, you very well know that the Supreme Court has said that if there is a hate speech, the police has to *suo motu* register an FIR, and that will actually be the starting step of criminal investigation. But nothing is being done by the investigating agencies and the prosecuting agencies. And, as I said, if the Prime Minister speaks in this manner, that will only embolden the fringe elements. Therefore, I would request that the Government should protect its citizens. The Government should uphold the Constitution. The Government should uphold the rule of law and the Government should respect and implement the Hon'ble Supreme Court judgements. I hope that the Prime Minister is listening and he will reply to this.

Now, I will come to the new criminal laws. Sir, now the Indian Penal Code and the Criminal Procedure Code have been replaced and a new set of laws has been implemented from 1st of July. The citizens of this country are very sceptical now. Why are they sceptical? They are sceptical because these particular laws are replacing the laws which had been there for over 100 years and every section of those laws had been interpreted by the Supreme Court. You know very well as to how much time it takes for a Section to be interpreted by the highest court of the country and to make it

as the law of the land. Now, if a new law comes, a citizen of the country will be very sceptical as to whether he has done a crime or has not done a crime; whether he has done a wrong or has not done a wrong. Everything is in a fluid state at this point of time. He will have to go to the court; he will have to get an authority from the court, which will take another 20 to 25 years. Sir, these new criminal laws is giving the police a high handedness. The police will not do even the registration of an FIR itself. The new law says that only if the police is prima facie convinced that an offence has been committed, it will have to register the FIR. It will lead to police raj, police raj and police raj. Therefore, my request to the Government is to reconsider this decision. There is a lot of scepticism in the minds of the citizens of the country and you have to allay the fears in the minds of the citizens of the country as far as new criminal laws are concerned.

Sir, many hon. Members have mentioned about the NEET exam and the kind of malpractices which were committed in the NEET exam, which has been conducted. Sir, 24 lakh students after putting in hard work of around 2 to 3 years appeared in the NEET exam. Because of the malpractices committed by the officials and non-officials in collusion with many other people, the future of these students is in danger.

Mr. Chairman, Sir, you very well know that the Supreme Court has held that if one particular student gets admission through illegal means, the whole examination has to be cancelled because it is not known as to who are the students who got admission through legal means and who got admission through illegal means. In the fitness of things, this House should adopt a Resolution that this particular NEET examination, which was conducted this year, should be scrapped and a new examination has to be conducted because that is the only way to give justice to the students who have appeared in this particular exam after a continuous hard work of around two to three years.

Sir, the National Testing Agency (NTA) which has been conducting this test is doing such malpractices for a couple of years now. Therefore, this NTA has to be scrapped. Why should this NTA be there? The NTA has to be scrapped. Let the work of conducting examination go back to the States. The State Governments were doing a much better job. Let the State Governments conduct the entrance examinations and let the students continue with the entrance examination conducted by the respective States.

On the aspect of voting, the caption of the Election Commission is "Let Everyone Vote'. As far as migrant workers are concerned, there are a huge number of migrant workers. Mr. Chairman, Sir, there are crores and crores of migrant workers

who are unable to vote. In this regard, there was a Bill in the Lok Sabha to give the voting rights, the distant voting rights to the migrant workers. There are lakhs and lakhs of Non-Resident Indians also. These citizens of India who are migrant workers as well as the Non-Resident Indians are unable to vote. I think, it is high time that there should be an amendment of the Representation of the People Act so that this section of the society can also vote.

Mr. Chairman, Sir, having got the indication from you to conclude my speech, I am concluding it with one or two small observations. I am so grateful that you have given me this much time. First point is regarding infrastructure. The infrastructure, about which the Government has tall claims, is collapsing on daily basis and the Government has to reply on this aspect. On the point of economy reaching from the fifth largest to the third largest economy, the farmers are having issues over here, the youth is having issues over here, and, I think, the Prime Minister will reply to all these issues in his speech. In the end, I once again thank you for giving me the opportunity to participate in the discussion.

MR. CHAIRMAN: Thank you. Now, Shri Ramdas Athawale. Please be brief.

सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री रामदास अठावले): सभापति महोदय,

"माननीय मोदी जी ने दिया है 80 करोड़ लोगों को राशन,
इसीलिए माननीय राष्ट्रपति जी का बहुत ही अच्छा था अभिभाषण।
मोदी जी कर रहे हैं मजबूत नेशन,
इसलिए मैं दे रहा हूँ आपके सामने मेरा भाषण।
नरेन्द्र मोदी जी प्रधान मंत्री बने हैं तीसरी बार,
क्योंकि कांग्रेस और इंडिया अघाड़ी की हो गयी है हार।
मोदी जी प्रधान मंत्री बनेंगे बार-बार-बार,
और कांग्रेस की हो जाएगी हार-हार-हार।
संविधान बदलेगा यह प्रचार झूठा था,
क्योंकि कांग्रेस ने सारा देश लूटा था।

...(व्यवधान)...

SHRI JAIRAM RAMESH (Karnataka): Sir, he is not a Member of this House. *...(Interruptions)...*

MR. CHAIRMAN: One minute. *..(Interruptions)..*

श्री प्रमोद तिवारी: महोदय, परम्परा यही है कि जो व्यक्ति दूसरे सदन का सदस्य हो, उसके बारे में यहाँ कोई आक्षेप नहीं लगाया जा सकता। ...(**व्यवधान**)... उसके बारे में यहाँ कोई आक्षेप नहीं लगाया जा सकता और उसकी चर्चा नहीं हो सकती, क्योंकि वह अपनी बात की सफाई देने के लिए यहाँ पर मौजूद नहीं है। मेरा विनम्र निवेदन है कि चूँकि इन्होंने * का नाम लिया है, तो उसे कार्यवाही से निकाल दिया जाए। ...(**व्यवधान**)...

MR. CHAIRMAN: I will look into it. Hon. Minister, please avoid. ..*(Interruptions)*.. Please take your seat.

श्री रामदास अठावले: सर, मैंने इतना ही बोला था कि सपना तो हर आदमी का होता है। सपना तो होना चाहिए। ...(**व्यवधान**)... सपने में जीना - यह अपना काम ही है। ...(**व्यवधान**)...

MR. CHAIRMAN: No, no. Hon. Minister, please avoid. Go ahead.

श्री रामदास अठावले: सर, इसीलिए मैं इतना ही बताना चाहता हूँ कि संविधान के संबंध में बहुत बड़ा * करने का काम किया था, जनता में फूट पैदा करने का काम किया था। जिन लोगों को जेल में डाला था, ये सब लोग एक साथ आए थे। हमारे संजय जी यहाँ बैठे हैं। संजय जी, हमने आपको जेल में नहीं डाला था। ...(**व्यवधान**)... हमने वहाँ नहीं डाला था, ईडी ने डाला था। ...(**व्यवधान**)... आपके बारे में हमें आदर है। अन्ना हजारे जी हमारे महाराष्ट्र से हैं। अन्ना हजारे साहब के साथ मेरे संबंध बहुत अच्छे हैं। अरविंद केजरीवाल जी उनके आन्दोलन से आगे आए हैं और आपने भ्रष्टाचार के खिलाफ आवाज भी उठाई है। आपकी पार्टी आम आदमी पार्टी है। आपने अच्छा काम किया था, लेकिन थोड़ी गड़बड़ हो गई, इसीलिए ऐसा हो गया। ...(**व्यवधान**)... यह ठीक बात नहीं है, इसीलिए संविधान के बारे में हमारा इतना ही कहना है कि बाबा साहेब अम्बेडकर जी ने संविधान लिखा है। जिस बाबा साहेब अम्बेडकर जी ने संविधान लिखा, आज बाबा साहेब का नाम लिया जाता है, संविधान की किताब दिखाई जाती है, लेकिन मैं इतना बताना चाहता हूँ कि इस कांग्रेस पार्टी ने बाबा साहेब को दो बार हराया था। ...(**व्यवधान**)... 1952 में मुम्बई में लोक सभा मतदार संघ से बाबा साहेब को हराया था, 1954 में भंडारा से बाबा साहेब को हराया था और बाबा साहेब अम्बेडकर जी को 'भारत रत्न' नहीं दिया था, बाबा साहेब का फोटो सेंट्रल हॉल में नहीं लगाया था और आज बाबा साहेब की बात करते हैं, आज आप संविधान दिखाते हैं! संविधान दिखाओ, लेकिन संविधान के जैसा आपको बर्ताव करने की जरूरत है। इसीलिए संविधान को कोई नहीं बदल सकता है। नरेन्द्र मोदी जी माथा टेक कर शपथ लेते हैं। 26 नवम्बर, 1949 को संविधान का ड्राफ्ट बाबा साहेब ने दे दिया था, उस दिन मोदी जी 'संविधान दिवस' मनाते हैं और आप बोलते हैं कि वे संविधान बदलेंगे! मोदी जी ने बाबा साहेब के बहुत से काम पूरे किए हैं। मुम्बई में इंदु मिल की जगह पर 3,600 करोड़ रुपये की जमीन बाबा साहेब के लिए उन्होंने ली है। वहाँ 1,200-1,300 करोड़ रुपये का एक मेमोरियल बन रहा है। डा. अम्बेडकर फाउंडेशन

*Expunged as ordered by the Chair.

आपने बनाया था, कांग्रेस पार्टी ने बनाया था, लेकिन वह सिर्फ एक ऑफिस ही था, मोदी जी के आने के बाद वहाँ बहुत बड़ी बिल्डिंग बन गई है। जहाँ बाबा साहेब ने संविधान लिखा, उस 26 अलीपुर रोड पर बहुत सुन्दर मेमोरियल बन चुका है। इतने काम करने वाले मोदी जी संविधान कैसे बदल सकते हैं? वे कांग्रेस को बदल सकते हैं, लेकिन संविधान नहीं बदल सकते हैं। ...(**व्यवधान**)... संविधान बदलना इतना मामूली काम नहीं है। उसमें अमेंडमेंट करने का मतलब संविधान बदलना नहीं है। बाबा साहेब अम्बेडकर जी ने संविधान सभा में ही अमेंडमेंट करने का अधिकार पार्लियामेंट को दे दिया है। जब कोई नया कानून बनाना होता है या पुराने कानून में कोई अमेंडमेंट करना होता है, वह पूरा अधिकार हमें होता है। मुझे लगता है कि हम उसे संविधान बदलना नहीं बोलते हैं। लेकिन आप लोग ख़्वाह-मख़्वाह इस तरह का प्रचार कर रहे हैं। मोदी जी को हराने के लिए आप सब लोग इकट्ठा हुए हैं, लेकिन आप लोग मोदी जी को हरा नहीं सकते हैं, क्योंकि मैं मोदी जी के साथ हूँ। यह ठीक है कि आपको लोकतंत्र में अधिकार है। आपकी सीटें ज्यादा आई हैं, यह अच्छी बात है। आप इतनी ही सीटें लाएँ कि आप उधर ही रहें और हम इधर ही रहें। अगर ऐसा भविष्य में होगा, तो यह ठीक बात है। आप अगली बार भी ट्राई कीजिए। जो रिपब्लिकन पार्टी ऑफ इंडिया है, वह बाबा साहेब अम्बेडकर जी के द्वारा स्थापित हुई पार्टी है, मैं इस पार्टी की तरफ से राष्ट्रपति जी के अभिभाषण के धन्यवाद प्रस्ताव का समर्थन करता हूँ और अपोज़िशन को इतना ही बताना चाहता हूँ कि मोदी जी स्ट्राँग नेता हैं, मजबूत नेता हैं और उनके साथ हमारे इतने लोग हैं, इसलिए आप कितनी भी कोशिश करें, लेकिन मोदी जी हारेंगे नहीं, वे आपको हराएँगे।

श्री सभापतिः श्री महेंद्र भट्ट। फाइव मिनट्स।

श्री महेंद्र भट्ट (उत्तराखंड)**:** आदरणीय सभापति महोदय, मैं अपने वरिष्ठ नेता आदरणीय डा. सुधांशु त्रिवेदी जी द्वारा राष्ट्रपति जी के अभिभाषण के धन्यवाद प्रस्ताव के समर्थन में बोलने के लिए खड़ा हुआ हूँ। महोदय, इस महान उच्च सदन में यह मेरा पहला सम्बोधन है। मुझे यह अवसर देने के लिए मैं अपनी पार्टी, पार्टी नेतृत्व एवं आदरणीय प्रधान मंत्री जी का ह्रदय से आभारी हूँ। मुझ जैसे सीमान्त क्षेत्र के साधारण कार्यकर्ता को इस महत्वपूर्ण राजनैतिक भूमिका हेतु अवसर दिया गया है।

सभापति महोदय, आपके निरंतर मार्गदर्शन और संरक्षण में मुझे सीखने का अवसर मिलेगा और अपने वरिष्ठ अनुभवी साथियों का सहयोग मिलेगा। महोदय, मैं देवभूमि उत्तराखंड से आता हूँ। भगवान बद्रीविशाल और बाबा केदारनाथ की भूमि तथा माँ गंगा एवं माँ यमुना की उद्गम स्थली पूरे विश्व के सनातनियों की आस्था का केंद्र है। मैं अपने पहले सम्बोधन में पृथक उत्तराखंड राज्य के आंदोलन में बलिदान देने वाले तथा सीमाओं पर माँ भारती के लिए बलिदान देने वाले वीर सैनिकों को नमन करता हूँ।

सभापति महोदय, आदरणीय प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में सम्पूर्ण भारत में जिस तरह आमजन के जीवन में खुशहाली, बदलाव तथा सुविधापूर्ण जीवन और आशा का संचार हुआ है, उससे उत्तराखंड भी अछूता नहीं है। पूरे देश में जिस तरह केन्द्रीय योजनाओं का लाभ आमजन को मिल रहा है, उसी तरह इन योजनाओं ने उत्तराखंड वासियों के जीवन में उम्मीदों का

संचार किया है। मैं सार्वजनिक स्थलों पर कहता भी हूँ कि भले ही मोदी जी का जन्म गुजरात में हुआ हो, परंतु उनका हृदय उत्तराखंड में वास करता है और यही कारण है कि हमने पाँच कमल की माला प्रधान मंत्री जी को समर्पित की है।

महोदय, मैं उत्तराखंड की चर्चा इसलिए करना चाहूँगा क्योंकि भौगोलिक रूप से दुर्गम, अति पिछड़े, विदेशी सीमाओं से लगे इस क्षेत्र को प्रधान मंत्री जी के नेतृत्व में बनी लोकप्रिय सरकार ने मुख्यधारा से जोड़ने का साहसिक कार्य किया है। पहली बार उत्तराखंड के जनमानस में विश्वास पैदा हुआ है कि एक वोट की ताकत से अच्छी सरकार जीवन में खुशियाँ और उम्मीद ला सकती है। प्रधान मंत्री जी के इन 10 वर्षों के कार्यकाल में उत्तराखंड राज्य के गठन में देखे गए सपने साकार होने की ओर बढ़े हैं।

सभापति महोदय, मैं प्रधान मंत्री जी के प्रति अपनी सरकार का आभार व्यक्त करता हूँ कि आज उत्तराखंड के प्रत्येक परिवार में रसोई गैस सिलेंडर है। 'सौभाग्य योजना' से दुर्गम गाँवों को मिलने वाले विद्युत कनेक्शन का विशेष महत्व है क्योंकि पहाड़ी दुर्गम क्षेत्रों में बिजली कनेक्शन पहुँचाना बहुत कठिन कार्य होता है और आज मुझे यह बताते हुए खुशी है कि प्रधान मंत्री जी के आशीर्वाद से आज मेरे राज्य उत्तराखंड के प्रत्येक परिवार में विद्युत कनेक्शन है। उत्तराखंड का पानी उत्तराखंड के काम नहीं आता - इस कहावत को भी प्रधान मंत्री जी ने बदला है और आज 'जल जीवन मिशन योजना' से हर घर में पानी पहुँचाने का भागीरथी प्रयास उत्तराखंड के अंदर हुआ है। 'प्रधान मंत्री ग्रामीण सड़क योजना' के तहत 200 आबादी वाले गाँव भी सड़क से जुड़े हैं। नेशनल हाईवे से उत्तराखंड की अनेकों सड़कों को जोड़ा गया है और जो 6 अन्य सड़कें हैं, उनके बारे में मुझे पूरा विश्वास है कि भविष्य में उनको भी स्वीकृति मिलेगी। ऑल वेदर रोड हमारे लिए वरदान साबित हुई है।

महोदय, 'आयुष्मान योजना' उत्तराखंड के लिए वरदान साबित हुई है। वहाँ दूरदराज के क्षेत्रों में स्वास्थ्य का अभाव रहता था, लेकिन मुझे बताते हुए खुशी है कि छोटे से राज्य में 55 लाख से अधिक आयुष्मान कार्ड बनाए गए हैं और 9 लाख 11 हजार मरीजों का निःशुल्क उपचार हुआ है। ...(**समय की घंटी**)... महोदय, मैं दो मिनट में अपनी बात समाप्त करूँगा। महोदय, आदरणीय प्रधान मंत्री जी के मार्गदर्शन में 2013 में आपदा से ग्रस्त हो चुके बाबा केदारनाथ धाम का भव्यतम रूप हम सबके सामने है। अब केदारनाथ के लिए रोपवे का भी उद्घाटन माननीय प्रधान मंत्री जी ने कर दिया है और जहाँ जाने में पहले सात-आठ घंटे लगते थे, अब रोपवे के माध्यम से मात्र 28 मिनट का समय लगेगा।

इसी प्रकार गंगोत्री से केदारनाथ के लिए पर्वतमाला प्रोजेक्ट को स्वीकृत करने के लिए मैं माननीय प्रधान मंत्री जी का आभार व्यक्त करता हूँ।

MR. CHAIRMAN: Please conclude.

श्री महेंद्र भट्ट: महोदय, मैं तुरंत समाप्त कर रहा हूँ। महोदय, मुझे यह बताते हुए खुशी है कि उत्तराखंड के पवित्र धर्म स्थल हेमकुंड साहिब के लिए भी 13 किलोमीटर के रोपवे की स्वीकृति दी गई, जिसके लिए मैं माननीय प्रधान मंत्री जी का आभार व्यक्त करता हूँ। ...(**समय की घंटी**)...

महोदय, मुझे एक बात बताते हुए खुशी है कि अभी 50 दिनों के अंदर 30 लाख यात्री उत्तराखंड में आए हैं, जब कि 2022-23 में लगभग 56 लाख यात्री आए थे।

MR. CHAIRMAN: Thank you. Now, Dr. Sonal Mansingh.

श्री महेंद्र भट्ट: सर, मैं एक अंतिम बात कहकर विषय को समाप्त करूंगा। ...(**व्यवधान**)...

MR. CHAIRMAN: Please. ...(*Interruptions*)... Dr. Sonal Mansingh. ...(*Interruptions*)...

SHRI MAHENDRA BHATT: *

MR. CHAIRMAN: Nothing will go on record now. ...(*Interruptions*)... Now, Dr. Sonal Mansingh; five minutes.

डा. सोनल मानसिंह (नाम निर्देशित): सभापति महोदय, मैं आपका धन्यवाद करती हूँ। यह मेरा आखिरी सेशन है और 13 जुलाई को मैं रिटायर हो रही हूँ। इस गरिमामयी, गौरवशाली सदन की सदस्या रहने का मुझे परम आनंद और सौभाग्य प्राप्त हुआ। मैं राष्ट्रपति, महामहिम द्रौपदी मुर्मू जी के अभिभाषण पर दो ही प्वाइंट चिन्हित करना चाह रही थी। एक यह कि "कृषि सखी" जो एक योजना बनाई गई है, वह अद्भुत है। वैसे ही "श्री अन्नपूर्णा" है। हमारे यहां एक श्लोक है:

"अन्नपूर्णे सदापूर्णे शंकर प्राणवल्लभे।
ज्ञान वैराग्य सिध्यर्थं भिक्षां देहि च पार्वति ।।"

हमारे यहां घर-घर में अन्नपूर्णाएं हैं, जो दाने-दाने को ध्यान से परोसती हैं, तो "कृषि सखी" कृषि और स्त्री, कृषि और अन्न, कृषि और अन्नपूर्णा का संबंध ऐतिहासिक है, सनातन है, शाश्वत है। यह एक बहुत सम्मान की बात है। तकनीकी डेवलपमेंट के लिए "प्रधानमंत्री ड्रोन योजना" भी अद्भुत है। विमेंस डेवलपमेंट की जगह अब women-led development है। मुझे यह भी बहुत ही अद्भुत लगा कि नारी शक्ति वंदन का अधिनियम किस तरीके से, किस सोच से हर जगह, हर एक क्षेत्र में लागू हो रहा है।

सर, इसके पश्चात् मुझे संस्कृति की बात करनी है कि संस्कृति हमारी आत्मा है, सभ्यता की आत्मा है। नालंदा जैसा अपूर्व विश्वविद्यालय, जो ध्वस्त किया गया था, उसका पुनर्गठन किया गया, उसकी पुनर्स्थापना की गई। यह विद्या की देवी सरस्वती का भव्य सम्मान है। कोई भी सभ्यता विद्या और ज्ञान के बिना नहीं पनपती है। सर, मुझे याद है कि जी20 में जब स्टेट डिनर था, रात्रि भोज था, तो जो सारे महामहिम आ रहे थे, उनको हमारे गौरवशाली प्रधान मंत्री घूम-घूम के

*Not recorded.

नालंदा का बैकड्रॉप दिखाकर समझा रहे थे। जिस वक्त विश्व में ऐसी कोई जगह नहीं थी, विश्वविद्यालय नहीं था, तब नालंदा था और अब वह पुनर्जीवित हो उठा है।

सर, मैं तीसरी बात जल्दी कहूंगी कि मैं एक कलाकार हूं और कलाकार होने के नाते मुझे यह गौरव प्राप्त हुआ। कलाकारों का, कला-संस्कृति का सम्मान इस सरकार ने प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भव्य तरीके से किया है। इसके लिए मैं उनका धन्यवाद करती हूं। मैंने देखा है कि कल से आज तक नवरस, जो हमारे नृत्य में है, हमारे श्रृंगार शास्त्र में है, उस नवरस में मैंने देखा कि उसमें श्रृंगार और शांत रस के अलावा सभी रस आ गए। इस सदन में मैंने रौद्र रूप भी देखे, अद्भुत भी देखा, भय भी देखा, वीभत्स भी देखा, हास्य भी देखा। सर, अब जाते-जाते आपके माध्यम से इस सदन से मेरी एक ही विनती है कि श्रृंगार, यानी प्रेम, सौजन्य, सौहार्द और शांति, ये अभी बने रहें और ये और भी आएँ। सर, इसी के लिए मैं आखिर में स्वस्ति वचन कहना चाहती हूं, जो सबके लिए लागू होता है:

"ॐ सर्वेषां स्वस्तिर्भवतु।
सर्वेषां शान्तिर्भवतु।
सर्वेषां पूर्ण-भवतु।
सर्वेषां मंगलं भवतु।
लोकाः समस्ता सुखिनो भवन्तु।
ॐ शांतिः शांतिः शांतिः ॥"

सर, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

MR. CHAIRMAN: Now, Shri Jagat Prakash Nadda.

सभा के नेता (श्री जगत प्रकाश नड्डा): सभापति महोदय, मैं आज महामहिम राष्ट्रपति के अभिभाषण के धन्यवाद ज्ञापन के प्रस्ताव पर धन्यवाद देने के लिए और प्रस्ताव के बारे में चर्चा करने के लिए अपने वक्तव्य को रख रहा हूं। सबसे पहले तो मैं आपको इसके लिए धन्यवाद देना चाहता हूं कि आपने मुझे मौका दिया कि मैं राष्ट्रपति जी के अभिभाषण के धन्यवाद ज्ञापन पर अपना वक्तव्य रख सकूं। यह वह अभिभाषण है, जिसे महामहिम राष्ट्रपति महोदया ने पार्लियामेंट के कक्ष में हम सबके सामने रखा। उसके बारे में मैं यह कहना चाहता हूं कि यह हमारे विकास यात्रा की एक कहानी, एक रोड मैप है, जो माननीय राष्ट्रपति महोदया ने हम सबके सामने रखा है। मैं यह कह सकता हूं कि यह जो अभिभाषण है, यह समग्रता में है, हॉलिस्टिक है और विकसित भारत की विकास यात्रा को कैसे आगे बढ़ाया जा रहा है, इसके बारे में बहुत चिंतन करके उसे वक्तव्य में बहुत डिटेल से लिख दिया है और यह हम सबके लिए बहुत ही प्रेरणादाई भी है, जिसे हम सब लोग विकसित भारत को पूरा करने के लिए लगे हुए हैं। मैं यहां यह भी कहना चाहता हूं कि जो उन्होंने सरकार की पॉलिसीज़, सरकार के प्रोग्राम उद्धृत किए हैं, वे दोनों बातों को प्रतिलक्षित करते हैं। एक तो वे प्रतिलक्षित करते हैं कि वर्तमान में किस तरीके से देश आगे बढ़ रहा है और दूसरा यह कि किस तरीके से ये कार्यक्रम और ये नीतियां देश को विकसित भारत बनाने में

दूरगामी प्रभाव छोड़ रही हैं, उसको भी उद्धृत करता है। यह हम सब लोगों को ध्यान में रखना चाहिए।

हम सबके लिए खुशी की बात है कि हम अमृत काल में प्रवेश कर चुके हैं और जब हमने अमृत काल में प्रवेश किया है, तो आगे हमारे सामने 25 साल की यात्रा है, जिस यात्रा में हम सब लोगों ने अपने देश को डेवलप्ड नेशन, विकसित भारत - इसके संकल्प को आगे बढ़ाने का तय किया है, इसलिए हम सब लोग, चाहे इधर हों, चाहे उधर हों, हम सब लोगों को अपने आप को बहुत सौभाग्यशाली मानना चाहिए कि हम उस गौरवशाली समय के साक्षी हैं, जिन्हें यह कार्य करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मैं यहां यह भी कहना चाहता हूं कि सरकार की नीतियों का सुदूर प्रभाव हम सब लोगों को दिख रहा है और दिखने लगा है। यह ऐतिहासिक पल अमृत काल का है। वास्तव में यह बहुत ही सौभाग्यपूर्ण स्थिति है, जब हम इस अमृत काल में अपने आपको जोड़ रहे हैं और विकसित भारत की यात्रा में हम सब लोग भी शामिल हो रहे हैं। मुझे पूरा विश्वास है कि सभी पार्टियों का हम सबको सहयोग मिलेगा, ताकि इस विकसित भारत के संकल्प को हम पूरा कर सकें। अभी-अभी हम सब लोगों ने 21 जून को दसवां अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाया है, 10th International Yoga Day. 10 साल पहले हमने कभी यह सोचा नहीं था कि भारत यू.एन. जनरल असेंबली में कोई प्रस्ताव लेकर आएगा और उस प्रस्ताव पर 177 देश एक मत से अपना साथ देंगे और वह अंतरराष्ट्रीय योग दिवस बन जाएगा। ...(**व्यवधान**)... उसी तरीके से आज हम सब लोगों के लिए खुशी का विषय है कि भारत और दुनिया 10वां अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मना रही है और भारत को योग का लीडर मान रही है। इस बात को भी हमें समझ लेना चाहिए। हम सबको खुशी है कि 2023 में International Year of Millets, श्री अन्न, जिसे हम मोटा अनाज भी कहते हैं, यह श्री अन्न भारत के agriculture sector को किस तरीके से address करता है। इसीलिए हमने कहा कि प्रधान मंत्री मोदी जी के द्वारा किए गये कार्य का दूरगामी इफैक्ट क्या होता है, उसको भी हमें समझना चाहिए। आज अंतरराष्ट्रीय मिलेट दिवस सारी दुनिया मना रही है। श्री अन्न की तरफ हम अग्रसर हुए हैं और जब हम श्री अन्न की तरफ अग्रसर हुए हैं, तो मैं यह भी बताना चाहता हूं कि हमारे किसान भाई, हमारे agriculture sector से जुड़े हुए लोगों को इसका दूरगामी प्रभाव में लाभ मिलने वाला है। इसको भी हमें ध्यान में रखना चाहिए। जब अंततराष्ट्रीय छवि की बात होती है, तो मुझे खुशी होती है, अपने हाउस के साथ और राष्ट्रपति जी के अभिभाषण के बारे में चर्चा करते हुए इस बात को दोहराने की, कि International Solar Alliance, जो भारत का initiative रहा है, उसमें record number of countries ने अपने आपको शामिल किया है। यह भी हम सबके लिए गौरव का विषय है। अभी पिछले साल देश जी20 के उत्सव का साक्षी रहा है। मैं यहां कहना चाहता हूं कि ऐसा नहीं है कि जी20 या अंततराष्ट्रीय तरीके के कार्यक्रम या समायोजन या आयोजन पहले नहीं हुए। पहले भी हुए हैं। कोई छोटे, कोई बड़े हुए होंगे। मुझे याद है कि शायद 70s की बात होगी, उस समय Non-Aligned Movement की भी यहां चर्चा हुई थी और इस देश में उसका भी कार्यक्रम हुआ था। जब हम जी20 की बात करते हैं, तो हम देश के साथ इस बात को साझा करते हैं कि यह कार्यक्रम देश का कार्यक्रम बन गया, it became the country's programme. चाहे कोई प्रदेश विपक्ष में हो, चाहे पक्ष में हो, चाहे कहीं कांग्रेस की सरकार हो, चाहे कहीं किसी और पार्टी की सरकार हो, चाहे कहीं हमारी पार्टी की सरकार हो, सारे देश ने जी20 को अपने तरीके से आत्मसात किया और जी20 एक national event और national festival

बन गया, तो इसको भी हमें ध्यान में रखना चाहिए। सर, लगभग 200 मीटिंग्स केवल दिल्ली में नहीं हुईं, बल्कि वे 200 मीटिंग्स देश के कोने-कोने में हुईं, 75 स्थानों में हुईं और एक तरीके से इस जी20 में दुनिया ने भी भारत के दर्शन किए, इंडिया के दर्शन किए। यह हम सबको ध्यान में रखना चाहिए। मैं यहां यह भी आपको कहना चाहूंगा कि यही जी20 पहले दूसरे देशों में भी हुआ। हम किसी resolution पर या किसी समझौते पर नहीं पहुंच सकते। हम कोई draft statement लेकर नहीं आ सके, लेकिन मुझे खुशी है कि जी20 में New Delhi Declaration सर्वसम्मति से हुआ और सर्वसम्मति से जी20 का New Delhi Declaration बना - यह भी हमें ध्यान में रखना चाहिए। सर, यह बहुत खुशी की बात है कि भारत के initiative पर, भारत के नेतृत्व में और भारत के निवेदन पर African Union को permanent member के रूप में जोड़ा गया और वह भी हमारा part and parcel बना। यह भी हमारे लिए बहुत बड़ी बात है। इसके साथ-साथ जो एक समझौता हुआ, जिसमें rail और shipping corridor के रूप में India-Middle East Economic Corridor का जो समझौता हुआ, यह भी मैं कहता हूं कि समझौता तो जी20 में हो गया, पर यह दुनिया में भारत को व्यापार में स्थापित करने में बहुत दूरगामी प्रभाव छोड़ने वाला है। इस तरीके का हमारा India-Middle East Economic Corridor बना, वह भी हम सबके ध्यान में है। मैं यहां यह भी कहना चाहता हूं कि हमें याद है कि 2020 में कोरोना आया। किसी को मालूम नहीं था कि इस कोरोना से कैसे लड़ा जाएगा, किसी को मालूम नहीं था कि इस कोरोना का इम्पैक्ट क्या होगा, किसी को मालूम नहीं था कि इस कोरोना से लड़ेंगे कैसे? यह इस शताब्दी की सबसे बड़ी त्रासदी थी, यह शताब्दी का सबसे बड़ा pandemic था। मैं यहां यह कहना चाहता हूं कि West के देश फैसला नहीं कर पाए, वे यह फैसला नहीं कर पाए कि economy जरूरी है या humanity जरूरी है, वे फैसला नहीं कर पाए कि lockdown लगाएं या नहीं लगाएं। उन्होंने lockdown कभी लगाया, कभी हटाया, लेकिन प्रधान मंत्री जी के नेतृत्व में कोरोना में सरकार ने लड़ाई नहीं लड़ी, सरकार के साथ-साथ मोदी जी ने देश को लड़ने के लिए तैयार किया, इस बात को भी हमें समझना होगा। इसीलिए कभी हम हास्य या हास्यास्पद तरीके से खिल्ली उड़ाते थे कि यह कर्फ्यू, जनता कर्फ्यू, यह ताली बजाओ या थाली बजाओ या दीया जलाओ, लेकिन यही ताली बजाओ, यही थाली बजाओ, यही दीया जलाओ ने देश के confidence को बनाकर रखा और हम lockdown को आगे बढ़ाने में सक्षम हुए, यह भी हमें ध्यान में रखना होगा।

मैं यहां पर यह भी कहना चाहता हूं कि कुछ लोग थे, जो पूछते थे कि lockdown क्यों लगाया, क्यों लगाया, क्यों लगाया। जब lockdown हटाया, तो बोला गया कि क्यों हटाया, क्यों हटाया, क्यों हटाया। उनकी जिंदगी 'क्यों' में ही चली गई, उनको समझ में ही नहीं आया। लेकिन मैं उस समय पूर्व स्वास्थ्य मंत्री था, आज वर्तमान स्वास्थ्य मंत्री हूं। मैं यह कहना चाहता हूं कि उस समय हमारे पास गिने-चुने ICU beds थे, उस समय हमारे पास लड़ने के लिए PPE kits नहीं थीं, उस समय हमारे पास लड़ने के लिए दवाई नहीं थी, परंतु प्रधान मंत्री जी के दूरगामी प्रभाव ने देश को तैयार किया, दो महीने में हम तैयार हुए, हमारी बहनें तैयार हुईं, हमारे देश में करोड़ों के हिसाब से मास्क बने, करोड़ों के हिसाब से PPE kits बनीं और भारत ने PPE kits बनाई ही नहीं, इस दो महीने में PPE kits का export करना भी शुरू कर दिया। यह बदलता भारत हमको देखने को मिला, यह हमारे ध्यान में है। मैं यहां यह भी बताना चाहता हूं कि ICU beds और Oxygen की व्यवस्था की गई। मैं वह दृश्य याद नहीं दिलाना चाहता हूं जब कुछ लोगों ने कहा कि घर को

निकल जाओ, सड़कों पर आ जाओ, एक anarchy लाने की कोशिश भी हुई, लेकिन उस सबके बावजूद भारत देश एक खड़ा रहा और कोरोना से लड़ने में सफल रहा, यह भी मैं बताना चाहता हूं।

सभापति महोदय, मैं बड़ी जिम्मेदारी के साथ कहना चाहता हूं, वर्तमान स्वास्थ्य मंत्री और पूर्व स्वास्थ्य मंत्री के रूप में कि इस देश में Tuberculosis की दवा को बनने में 25 से 30 साल लगे, अपने देश में Tetanus की दवा को आने में 30 से 35 साल लग गए, अपने देश में Diphtheria की दवा को आने में 30 साल लग गए, अपने देश में Japanese encephalitis की दवा को आने में 100 साल लग गए, जब 1906 में दवा जापान में बनी और 2006 में National Programme के रूप में हमारे देश में आई, इसको आने में 100 साल लग गए, लेकिन पहला कोरोना का केस January, 2020 को detect होता है, April, 2020 को taskforce बनती है और मोदी जी के नेतृत्व में देश के scientists ने 9 महीने के अंदर एक नहीं, दो-दो vaccines बनाकर दीं - मुझे याद है उस समय कहते थे, बाहर से मंगाओ, हमें इजाज़त दो, हम वैक्सीन खरीदेंगे। प्रधान मंत्री जी ने कहा कि खरीद लो, एक हफ्ते में लौटकर आ गए और कहने लगे कि आप ही बताओ, आप ही दो। मुझे खुशी के साथ बताना पड़ता है कि World's largest and world's fastest vaccination programme 220 करोड़ डोज़, double dose with booster लगाने का काम किया, तो मोदी जी के नेतृत्व में भारत ने किया। यह भी एक तथ्य है।

Take on the lighter vein मैं सुनाना चाहता हूं। हर नेता Twitter पर अपनी बातें कहता है। उस समय जब vaccine बनकर तैयार हुई तो कहा गया कि यह मोदी टीका है, यह मोदी वैक्सीन है।

7.00 P.M.

किसी ने कहा, 'We are not guinea pigs'. हमारे ऊपर experiments मत करो, clinical trials नहीं हुए हैं, लेकिन चुपके-चुपके जाकर मोदी टीका लगा लिया। मैं उनके Twitter देखता रहा, मैंने पूछा, तुम्हारे ट्विटर पर कुछ आया नहीं, टीका लगाया कि नहीं लगाया? वे बोले, चुप-चुप-चुप। इस तरीके के double standards किए गए, लेकिन उसके बावजूद भी 220 crore लोगों ने कोरोना में double dose लगवाई और जो पाश्चात्य देश बहुत समय तक mask लगाकर फिरते रहे, वहाँ घनी आबादी में भी हमारे लोग बिना मास्क के रहे और वे इस कारण से रहे, क्योंकि उन्हें डबल डोज़ लग चुकी थी with booster - यह भी हमें ध्यान है।

महोदय, मैं जब यहाँ इकोनॉमी की बात कर रहा हूं, तो कहना चाहता हूं कि आज दुनिया की इकोनॉमी, देश की इकोनॉमी, हर इकोनॉमी disturbed है। मैं यह आपको आगे आंकड़ों से बताऊंगा। दुनिया की हर इकोनॉमी डिस्टर्ब्ड है। May it be America, may it be European nations, may it be Australia, may it be Japan, may it be Germany, कोई भी देश हो, आज उनकी आर्थिक स्थिति मुसीबत में है, लेकिन मैं भारत के लिए कह सकता हूं कि International Monetary Fund बोलता है - the Indian economy is the only bright spot. अगर कोई आशा की किरण है, तो वह Indian economy है। Morgan Stanley बोलते हैं, 'India is different from 2013.' भारत 2013 का भारत नहीं रह गया है, यह अब different हो गया है। Moody's कहते हैं, 'GDP growth forecast increased to 8 per cent for the year 2024.' हम सभी लोग जानते हैं

कि 10 साल पहले भारत की अर्थ नीति 11th position पर थी, लेकिन आज भारत उस ब्रिटेन को, जिस ब्रिटेन ने हमारे ऊपर 200 सालों तक राज किया, उसको पछाड़कर पाँचवें नंबर की अर्थव्यवस्था बन गया है। We are the fifth largest economy. आप सभी का आशीर्वाद चाहिए और आप सभी की शांति चाहिए, क्योंकि प्रधान मंत्री मोदी जी के नेतृत्व में भारत तीसरे नंबर की अर्थशक्ति बनेगा, earth's largest शक्ति बनेगा। मैं अपनी बातों को प्रूव करने के लिए आपके सामने International Monetary Fund का world economic growth outlook projection बताना चाहता हूं। United States of America, 2.7 per cent; Germany, 0.2 per cent; France, 0.7 per cent; Japan, 0.9 per cent, UK, 0.5 per cent; India, that is, Bharat, 6.8 per cent. यह हमारी growth economy है। मैं यहाँ पर आपको यह भी बताना चाहता हूं कि हमारा growth rate after Covid - 2021-22, 9.1 per cent; 2022-23, 7 per cent, 2023-24, 8.2 per cent. आपको जानकर खुशी होगी और हम सबको भी खुशी होगी कि आज global growth में भारत देश की Indian economy 15 per cent contribution है। जैसा मैंने कहा कि हम तीसरी largest economy की ओर अग्रसर होने में लगे हैं, इसलिए मैं यहाँ पर यह भी बताना चाहता हूं कि प्रधान मंत्री मोदी जी के नेतृत्व में उन्होंने कहा है - reform, perform and transform. इसलिए हम status quoist नहीं हैं, हम रुक जाने वाले लोग नहीं हैं। अगर हमारा कोई विपक्ष for the sake of opposition यह सोचे कि हम रुक जाएंगे, तो हम रुकने वाले नहीं हैं। हम अच्छा करने के लिए, बेहतर करने के लिए क्या कर सकते हैं, उस बात के लिए काम करेंगे और हमारा futuristic vision प्रधान मंत्री मोदी जी के नेतृत्व में है। मैं यहाँ पर यह भी कहना चाहता हूं कि हमारी नीतियाँ far-reaching हों, हम उस पर काम करने के लिए अग्रसर हैं।

महोदय, यहाँ पर mandate की बहुत-सी बातें हुईं, मैं negativism में नहीं जाता। मैं इस बात को कोई निराशावादी तरीके से नहीं रखना चाहता हूँ, बल्कि आशावादी तरीके से रखना चाहता हूँ। आज हमारे देश ने decisive गवर्नमेंट और स्ट्राँग गवर्नमेंट को ट्रस्ट किया है, विश्वास किया है, इसे हमें ध्यान में रखना चाहिए। आज हमारे देश ने देश की सिक्योरिटी और prosperity को विश्वास में रखा है, इसलिए हमारे साथ खड़ी है। आज लास्ट माइल डिलीवरी की गारंटी मोदी की गारंटी है, इसे देश मानता है, इसीलिए देश विकसित भारत को अग्रसर करने के लिए संकल्पबद्ध है, यह मैं कहना चाहता हूँ। हम लोगों ने बहुत से सेक्टर्स के बारे में पूरी ताकत के साथ नीतियों में परिवर्तन करके आगे बढ़ने का तय किया है, फिर भी मैं सारे सेक्टर्स के बारे में चर्चा कर पाऊँ, यह संभव नहीं होगा। यह संभव भी नहीं है कि सारे सेक्टर्स के बारे में जो नीतिगत फैसले लिए गए हैं, कम शब्दों में मैं उनके बारे में मैं बता सकूँ, लेकिन मैं मैन्युफैक्चरिंग के बारे में, सर्विस सेक्टर के बारे में और एग्रीकल्चर के बारे में कुछ बातें जरूर बताना चाहता हूँ। अगर मैं मैन्युफैक्चरिंग के बारे में बात करूँ, तो आज ईज़ ऑफ डूइंग बिजनेस में भारत ने किस तरीके से अपनी इन्वेस्टमेंट को इनक्रीज़ किया है, यह भी रिकॉर्ड मार्जिन के तरीके से हुआ है। प्रोडक्शन के साथ इनसेंटिव्स को लिंक किया है। प्रोडक्शन को बढ़ाने के साथ-साथ किस तरीके से इनसेंटिव्स को जोड़ा गया है, उसने भी हमारे उद्यमियों को ताकत दी है। मुझे याद है कि निर्मला जी उस समय भी फाइनेंस मिनिस्टर थीं, जब कोरोना था। उस समय एमएसएमई सेक्टर के लिए विशेष पैकेज दिया गया था, उसका भी मुझे ध्यान है। उस समय लोग बोलते थे कि पैकेज का मतलब है पैसा, पैसा लाओ, पैसा लाओ, पैसा लाओ। जिन देशों ने कोरोना के समय पैसा बांटा, आज उनकी

अर्थनीति मैंने आपको बता दी है, 0.4 से लेकर 0.7 परसेंट पर सीमित हो गए हैं, लेकिन प्रधान मंत्री, मोदी जी ने कहा कि मैं पैकेज में पैसे नहीं बाटूँगा। मैं उसे विकास के काम में लगाऊँगा, मैं उद्यमियों को दूँगा और विकास के साथ उसे जोड़ूँगा, इसलिए आज हमारी इकोनॉमी आठ परसेंट की ग्रोथ पर खड़ी है, इस बात को ध्यान रखिए। अगर हम सेक्टर की बात करें, तो आज फार्मास्यूटिकल्स में India is number second. आज भारत दुनिया की डिस्पेंसरी बन गया है। सबसे सस्ती और सबसे असरदार दवा आज भारत प्रोड्यूस कर रहा है। अमेरिकंस भी आज भारत की दवाई को ले रहे हैं और ओपनली कहते हैं कि भारत की दवाई हमें अच्छी पड़ती है। अगर कोई दुनिया की डिस्पेंसरी बन गया है, तो भारत बन गया है। अगर हम देखें, तो इलेक्ट्रॉनिक्स में हमारी मैन्युफैक्चरिंग बढ़ी है। स्टील में हम नंबर दो पर आकर खड़े हो गए हैं। इसी तरीके से, हम फार्मास्यूटिकल्स से लेकर अन्य क्षेत्रों में तो बढ़े ही हैं। मैं मोबाइल की चर्चा करना चाहता हूँ। Ten years back, 97 per cent of the mobiles used to come from outside the country. हमारे पास जो मोबाइल होता था, वह made in Japan, made in Taiwan, made in China, made in Korea, made in Vietnam,या कोई और देश होता था, जबकि आज 97 परसेंट मोबाइल्स भारत में बन रहे हैं, यह मेड इन इंडिया हो गया है, इसे भी हमें ध्यान में रखना चाहिए। चाहे इलेक्ट्रिक व्हीकल्स हों या इलेक्ट्रॉनिक गुड्स हों, चाहे ग्रीन हाइड्रोजन हो या बैटरीज़ हों, या फिर एयरक्राफ्ट्स हों या एअर कैरिअर्स हों, या फिर फाइटर जेट्स हों, सभी सेक्टर्स में भारत एक्सपैंड कर रहा है और लीडर के रूप में आगे बढ़ रहा है। अगर मैं सर्विस सेक्टर की बात करूँ, तो आईटी सेक्टर, टूरिज्म सेक्टर, हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर, इसमें भारत ने बहुत बड़ी भूमिका अदा की है। हम हेल्थ सेक्टर में बहुत आगे बढ़े हैं। हम हेल्थ में सिर्फ देश को ही केटर नहीं कर रहे हैं, बल्कि अब दुनिया को केटर कर रहे हैं। हमें इस बात को समझना चाहिए। हमारे बहुत से लोग मिडिल-ईस्ट में, अन्य देशों में हेल्थ वर्कर्स के रूप में काम करने गए हुए हैं। वे वहाँ पर काम कर रहे हैं। सारा यूके, सारा यूएसए हमारे इंडियन डॉक्टर्स से भरा पड़ा है, इसलिए हर दृष्टि से देखा जाए, तो हम लोग हेल्थ सेक्टर में काम कर रहे हैं। भारत में आईटी का तो हब बन चुका है। दुनिया के लोग भारत में आईटी का लोहा मानते हैं।

टूरिज़्म में भी हम expand कर रहे हैं। सर्विस सैक्टर अपने आपमें job opportunities देने में बहुत बड़ी भूमिका अदा कर रहा है। यह भी हमें ध्यान में रखना चाहिए। मैं यहां यह भी कहना चाहता हूं कि agriculture के sector, agro-based industries और fishery-based industries, हमारा blue revolution, इसे हमने priority दी है। इस priority के साथ-साथ हमने गांव को जोड़ने का काम किया है। विकास की दृष्टि से villages को जोड़ने का काम किया है। मुझे खुशी है कि आज Farmer Producer Organisation का एक नेटवर्क बन रहा है, एफपीओज़ का बन रहा है। मुझे खुशी है कि हमारे एफपीओज़ के साथ cooperative organisations, PACS के माध्यम से हमारे लगभग 1 lakh PACS हैं, जिनकी लगभग 13 करोड़ फार्मर्स तक की रीच बनी है और हम उसको आगे बढ़ाने का काम कर रहे हैं। इसलिए फार्मर्स सैक्टर की दृष्टि से भी हम अपने आपको बढ़ा रहे हैं। आपको जानकर खुशी होगी, जैसा मैंने कहा कि हमारा दूरगामी प्रभाव छोड़ने वाली नीतियां हैं, हमें मालूम था कि भारत में स्टोरेज की कमी है और इसलिए मोदी जी के नेतृत्व में agricultural sector में स्टोरेज को बढ़ाने के लिए और उसकी capacity को बढ़ाने के लिए cooperative sector के माध्यम से हम वर्ल्ड की largest storage capacity बनाने वाले हैं और

उसके लिए हम काम कर रहे हैं। कल हमारे प्रफुल्ल भाई धन्यवाद ज्ञापन के वक्तव्य में कह रहे थे कि उस समय शरद पवार जी ने 70 हज़ार करोड़ रुपये फार्मर्स को दिए थे और उस समय वह एक बहुत बड़ा क्रांतिकारी कदम माना जा रहा था। ऐसा उन्होंने कहा और वह बात सही भी है, लेकिन आज मोदी जी ने प्रधान मंत्री किसान सम्मान निधि में 3 लाख 20 हज़ार करोड़ रुपये, if I am not mistaken, please correct me, 18 किस्तों में उसको पहुंचाया है। अभी-अभी कुछ दिन पहले 20 करोड़ रुपये की किस्त पहुंचाई गई है और यह रुकने वाली नहीं है। यह चलने वाली है, यह सतत चलने वाली है, किसानों के बारे में चिंता करने वाली है। हम one-time relief देने वाले नहीं हैं, हम handholding करने वाले हैं और किसान जब तक खड़ा नहीं हो जाता, तब तक उसके साथ खड़े होने वाले हैं। यह भी हमें समझना चाहिए। इसीलिए हम लोगों ने इसके साथ-साथ एग्रीकल्चर में diversify करने के लिए भी जोर दिया। इसके साथ-साथ हमने organic खेती पर भी जोर दिया और नैचुरल फार्मिंग को भी हम strengthen कर रहे हैं। हम alternatives ढूंढ़ रहे हैं और उसके लिए हम प्रेरणा देंगे। अगर मैं इन्फ्रास्ट्रक्चर की बात करूं, तो मुझे आपको बताते हुए खुशी है कि प्रधान मंत्री ग्रामीण सड़क योजना में पिछले 10 सालों में लगभग 3,80,000 किलोमीटर की सड़कें बनी हैं। मैं यहां बताना चाहता हूं और अपने विपक्षी भाइयों के साथ भी यह शेयर करना चाहता हूं। मैं 1993 में विधायक बन गया था और बीजेपी ग्रुप का नेता था। 1993 में मेरी कांस्टिट्यूएंसी में उस वक्त लगभग 40 सड़कें थीं और आपको मालूम है कि उन दिनों बजट कैसे आता था। हमें 40 सड़कों के लिए 40 लाख रुपये बजट मिलता था। जब मैं अपने Executive Engineer से पूछा करता था, 'Mr. Executive Engineer, please tell me how is this going to help me?' उसने कहा कि इसका तरीका यह है कि आप 20-20 लाख दो सड़कों में लगा दो। कम से कम वे तो थोड़ी आगे बढ़ जाएंगी। मैंने कहा कि यह तो ऊंट के मुंह में जीरा डालने की बात है। क्या करेंगे, कैसे करेंगे? मुझे यह बताते हुए खुशी है कि प्रधान मंत्री ग्रामीण सड़क योजना के तहत आज मेरी कांस्टिट्यूएंसी में किसी भी सड़क पर, किसी भी गांव में पैदल नहीं जाना पड़ता है। वहां all-weather roads बन गई हैं, सारे देश में बनी हैं और 3,80,000 किलोमीटर सड़कें बनी हैं। उसी के साथ-साथ अगर हम देखें, चाहे वह अटल जी का जमाना हो, चाहे स्वर्णिम चतुर्भुज हो, चाहे वह मोदी जी का जमाना हो, Golden Quadrilateral का विषय हो, चाहे वह express highways की बात हो, चाहे national highways की बात हो, सब तरीके से expressways, highways बने हैं। आप देखिए कि दिल्ली कितनी बदल गई है। जो बात हो जाती है, वह हमें याद नहीं रहती है। अब जयपुर से आने वाला traffic, जो पंजाब को जाने वाला है, वह दिल्ली नहीं आता है, वह bypass से निकल जाता है। अब राजस्थान के साइड से आना वाला या दिल्ली की तरफ से आने वाला traffic, जिसे दिल्ली से मतलब नहीं है, वह दिल्ली नहीं आता है। वह बगल से निकलकर मेरठ पहुंच जाता है। वह बुलंदशहर पहुँच जाता है। हाईवेज़ पर हाईवेज़, एक्सप्रेसवेज़ बन रहे हैं। एक नहीं, अनेक बन रहे हैं। 2014 से पहले एक टाइम था, जब 12.1 किलोमीटर per day सड़क बनती थी, आज 28.3 किलोमीटर सड़क प्रतिदिन बन रही है, इसलिए connectivity अच्छी हुई है। अभी दिल्ली-मुम्बई एक्सप्रेसवे, कौन-कौन से एक्सप्रेसवेज़, नाम याद रखना मुश्किल है, कहाँ से कौन सा एक्सप्रेसवे चला है, कौन सी connectivity किससे जोड़ रही है!

मैं यहाँ पर नॉर्थ-ईस्ट के बारे में विशेषकर बोलना चाहूँगा। मुझे याद है कि नॉर्थ-ईस्ट जाने का मतलब होता था दूसरी दुनिया में जाना, going to another world. लौट कर आ गए, तो लगा

कि अच्छा, दूसरी दुनिया में आ गए। यह स्थिति थी! आज देखिए, maximum State capitals are now connected with air connectivity. अभी सिक्किम में भी एयरपोर्ट बन गया है, उसका repair चल रहा है। अब वहाँ भी स्पाइसजेट का एयरक्राफ्ट जा रहा है। यह अलहदा बात है कि मौसम, नेचर के साथ तो कोई समझौता नहीं हो सकता है, लेकिन हाँ, सिक्किम में भी यह पहुँच गया। उसी तरीके से अगर हम देखें, तो मेघालय में rail network after 67 years पहुँचा है। नागालैंड ने 100 साल बाद अपना दूसरा रेलवे स्टेशन देखा। 100 साल पहले जब अंग्रेज थे, तब देखा था और उसके बाद अब देखा है। First goods train रानी गाइदिन्ल्यू रेलवे स्टेशन पर पहुँची, तो मणिपुर में वह पहली बार पहुँची, यह भी हमें ध्यान में रखना चाहिए। नॉर्थ-ईस्ट में अब semi-high speed train पहुँच गई है, वंदे भारत ट्रेन पहुँच गई है। इस तरीके से Act East policy, Look towards East, Act towards East, East First, इस तरीके की नीतियों को प्रधान मंत्री जी ने लागू किया है। आज नॉर्थ-ईस्ट mainstream में आ चुका है, mainstream के अंदर पहुँच चुका है। मैं दावे के साथ बोल सकता हूँ कि सुबह जाओ अगरतला, शाम को वापस आओ; सुबह जाओ इम्फाल, शाम को वापस आओ; सुबह जाओ आइजोल, शाम को वापस आओ। ...(**व्यवधान**)... मैं तो जाता हूँ। ...(**व्यवधान**)... आप वहाँ राजनीति के लिए जाते हैं, मैं वहाँ मानवता के लिए जाता हूँ। ...(**व्यवधान**)... मित्रो, इसलिए नॉर्थ-ईस्ट में हम Act East Policy को आगे बढ़ाने का काम कर रहे हैं।

मैं यहाँ आपको यह भी बताना चाहता हूँ, विशेषकर अभी हमारी आदरणीया बहन जी, सोनल मानसिंह जी women development and women-led development के बारे में कह रही थीं, मैं उनको धन्यवाद देना चाहता हूँ। इस women-led development को अगर किसी ने रूप दिया है, तो हमने 'नारी शक्ति वंदन विधेयक' को पारित करके दिया है। It is the political will. आपका समर्थन मिला, बहुत-बहुत धन्यवाद, लेकिन 30 साल से यह बिल पड़ा हुआ था। The political will was not there. प्रधान मंत्री, मोदी जी ने राजनीतिक इच्छाशक्ति दिखाई, 30 साल का बिल तीन दिन में पारित हुआ और 'नारी शक्ति वंदन विधेयक' को हम लोगों ने पारित किया।

मैं यहाँ पर प्रधान मंत्री आवास योजना की चर्चा कर रहा हूँ। इस योजना में 4 करोड़ आवास बने हैं। मैं सभी लोगों से जमीन की बात करना चाहता हूँ। मैं 1993 में जब एमएलए बना -- मैं इसको बार-बार सुनाता हूँ -- तो मेरा ब्लॉक डेवलपमेंट ऑफिसर मेरे पास आता था कि नड्डा साहब, चाय पिलाइए, आपको खुशखबरी सुनानी है। मैं कहता था कि चाय तो पीयो, उसका खुशखबरी से कोई लेना-देना नहीं है। आपका स्वागत है, आप आइए, चाय पीजिए, एक बार नहीं, अनेक बार, पर खुशखबरी क्या है, तो वे कहते थे कि इस बार आपको एक पंचायत में दो इंदिरा आवास योजना मिली हैं, आप बोलो कि किसको दूँ, तो मैं कहता था कि भइया, तू ही रख ले, तू ही बाँट देना, मैं कहाँ बाँट पाऊँगा, एक अनार, सौ बीमार। आज प्रधान मंत्री आवास योजना के तहत एक-एक पंचायत में 40-40, 50-50 मकान बन रहे हैं। मैं जमीन की बात बोल रहा हूँ। एक-एक पंचायत में एक समय में 5 लाख रुपए आ जाएँ, तो बहुत बड़ी बात होती थी। प्रधान जी, प्रधान जी, मेरे पोखर का यह ठीक करा दो, मुझे रास्ता दे दो, मुझे वह कर दो, मुझे वह पहुँचा दो। प्रधान जी हमें बोलते थे, विधायक जी, विधायक जी, ज़रा हमारी चिंता कीजिए। अगर मैं उनको दो लाख रुपए extra दे दूँ, तो मैं बड़ा एहसान जताता था कि देखो, मैंने दो लाख दे दिए, अब इसके बाद मुँह मत खोलना, अपने काम में जुट जाओ, अब अगले साल मिलेंगे। आज एक-एक पंचायत को ढाई-ढाई

करोड़ से लेकर पाँच-पाँच करोड़ रुपये विकास के लिए मिल रहे हैं। फिर भी हमारे पंचायत का प्रधान बोलता है - कुछ और, कुछ और। वह कुछ और इसलिए बोलता है, क्योंकि उसे मालूम है कि मोदी जी बैठे हैं, वे हमारी बात को सुनेंगे और हमारे लिए कुछ करेंगे। ...(**व्यवधान**)... जब मैं प्रधान मंत्री आवास योजना की बात करता हूँ, तो उसमें 4 करोड़ मकान बन गए और उनमें भी महिलाओं को ताकत दी गई। Maximum beneficiaries की जो ownership है, वह महिलाओं के पास है। इसमें महिलाओं द्वारा led development के बारे में ध्यान रखा गया है।

महोदय, उसी तरीके अभी जब पहली कैबिनेट हुई, तो मुझे भी उस कैबिनेट में रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। प्रधान मंत्री मोदी जी ने फैसला किया कि हम चुनाव में जो कह कर आए हैं, 3 करोड़ घर और बनेंगे, इस देश में कोई भी पक्की छत के बगैर नहीं रहेगा - यह हम विकसित भारत की कल्पना को पूरा कर रहे हैं। उसी तरीके से, महिला सशक्तिकरण की दृष्टि से 'लखपति दीदी' - सेल्फ हेल्प ग्रुप्स की तरफ से 3 करोड़ 'लखपति दीदी' बनाई जाएँगी। क्या कभी सोचा था कि हम 'लखपति दीदी' बनाएँगे? और इनकी संख्या क्या है - 3 करोड़। सभापति जी, यह स्पीड, स्केल और स्किल का परिणाम है कि हम स्पीड में भी मोदी जी के नेतृत्व में काम कर रहे हैं, उसके साथ-साथ स्केल को भी बढ़ा रहे हैं। उसी तरीके से अब सबको अच्छा लगना चाहिए, ऐसा मेरा मानना है - 'नमो ड्रोन दीदी।' अभी 1,000 'नमो ड्रोन दीदी' ने प्रधान मंत्री जी के सामने उसका एक रिहर्सल किया, उसका एक डेमोन्सट्रेशन किया, जिसे सारी दुनिया ने देखा। यह महिला सशक्तिकरण की एक कितनी बड़ी जीती-जागती तसवीर है! सबसे बड़ी बात यह है कि 'नमो ड्रोन दीदी' में उसे सिर्फ दीदी ही चलाएँगी। तो हमें यह समझना चाहिए कि महिला सशक्तिकरण के प्रति किस तरीके का कमिटमेंट है। हमें यह भी ध्यान में रखना चाहिए।

मैं आप सब लोगों को, क्योंकि आप सब लोग भी उसके पार्ट होंगे, मैं तो पहाड़ में रहता हूँ। मैंने वह काम कर लिया है। मैं आपसे भी निवेदन करूँगा कि आप भी उसे करिए। वह कार्यक्रम है - 'प्रधान मंत्री सूर्यघर मुफ्त बिजली योजना।' आप कृपा करके इसका उपयोग कीजिए। हमारे कई दल वालों ने यह जो कहा कि हम आपकी बिजली का बिल यह कर देंगे, हम वह कर देंगे, बिजली का बिल माफ कर देंगे, तो अब उसे माफ कराने की जरूरत नहीं है,मोदी जी ने आपको आज़ाद कर दिया है। अब बिजली का बिल ही नहीं आएगा, इस तरीके की परिस्थिति लाकर खड़ी कर दी गई है। ...(**व्यवधान**)... बिजली का बिल ज़ीरो हो जाएगा, ज़ीरो और पैसा कमाएँगे, वह अलग है। टका - वह टकाटक नहीं, वह घर आएगा। ...(**व्यवधान**)... वह घर आएगा। वह बिजली का बिल - पहले तो आपकी बिजली मुफ्त हो गई, फिर आपकी बिजली ग्रिड में जाएगी और ग्रिड में उसका जितना यूज़ होगा, उतनी आपकी आमदनी हो जाएगी। अब आप बोलिए, जो बोलते हैं - आम के आम, गुठली के दाम। यह प्रधान मंत्री मोदी जी ने किया है। मैं चाहूँगा कि आप सब लोग भी इसे अपनाएँ, क्योंकि यह किसी वर्ग-विशेष के नहीं है। यह सबके लिए है, इसलिए आप भी इसका सदुपयोग करें और आप भी उसमें शामिल हों, तो अच्छा रहेगा। ...(**व्यवधान**)...

अगर मैं ट्राइबल भाइयों की बात करूँ और वह भी रिमोट और बैकवर्ड एरियाज़ की बात करूँ, तो उसमें जो 'प्रधानमंत्री जनमन योजना' है, उसमें करीब 24,000 करोड़ रुपये रखे हैं। यह हमारी तसवीर बदलेगा। रेजिडेंशियल स्कूल्स से लेकर, एकल विद्यालय से लेकर बाकी सब तरीके से कैसे डेवलपमेंट हो सकता है और उनको जोड़ने का काम इस कार्यक्रम में चलेगा। मैं साथ में यहाँ आपको यह भी बताना चाहता हूँ कि यह जो 'प्रधान मंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना' है,

जिसमें 80 करोड़ लोगों को 5 किलो गेहूँ या 5 किलो चावल और 1 किलो दाल दिया जा रहा है, इसका इम्पैक्ट क्या आया है? इसका इम्पैक्ट यह आया है, जो नीति आयोग ने बताया है कि भारत के 25 करोड़ लोग अब गरीबी की रेखा से ऊपर उठ चुके हैं। इंटरनेशनल मोनेटरी फंड यह बोलता है कि India's extreme poverty has been reduced to less than one per cent. यह बदलता भारत है। यह आगे बढ़ता भारत है कि आज हमारी extreme poverty less than one per cent हो गई और उस दृष्टि से हम आगे बढ़ने का काम कर रहे हैं। माननीय प्रधान मंत्री जी ने 2014-15 में 'लाल किले' की प्राचीर से 'स्वच्छ भारत अभियान' के बारे में कहा था। उस समय इसकी हेठी हुई थी, हँसी उड़ाई गई थी, इसको मज़ाक में लिया गया था और यह कहा गया था, 'The Prime Minister is speaking about *Swachhata Abhiyan* from the ramparts of the Red Fort!' 'लाल किले' की प्राचीर से प्रधान मंत्री स्वच्छता की बात कर रहे हैं, कोई और बात करने को रह नहीं गई!

सभापति जी, जो सिल्वर स्पून के साथ पैदा होते हैं, उनको गरीबी के बारे में क्या मालूम है। उनको यह क्या मालूम कि आम आदमी का जीवन कैसा दूभर होता है। उनको यह क्या मालूम कि 'स्वच्छता अभियान' का परिणाम क्या होता है। 12 करोड़ शौचालय बने। मुझे याद है कि राम मनोहर लोहिया जी ने 1966 में पार्लियामेंट में कहा था, 'मुझे शर्म आती है, जब मेरी गाड़ी नेशनल हाईवे पर जाती है, तब औरतों के झुंड के झुंड लोटा ले करके अपने दैनिक नित्य कर्म के लिए जाते हैं, मुझे मानवता पर हँसी आती है।' यह राम मनोहर लोहिया जी ने 1966 में कहा था और 1966 से 2014 बीत गया, लेकिन किसी ने चिंता नहीं की। चाय वाले का बेटा, साधारण परिवार से आने वाले नरेन्द्र मोदी, हमारे प्रधान मंत्री जी ने इसकी चिंता की और 12 करोड़ शौचालय बनाए। मुझे आपको बताते हुए खुशी है कि यूनाइटेड नेशन्स के सेक्रेटरी जनरल, Antonio Guterres ने यहाँ भारत में आकर प्रधान मंत्री जी को 'Champions of the Earth' का खिताब दिया था।

श्री सभापतिः नड्डा जी, प्रमोद तिवारी जी ने घड़ी की तरफ इशारा किया है। आपके 40 मिनट्स थे, but your Party has enough time. You may indicate how much time you will take.

श्री जगत प्रकाश नड्डाः सभापति जी, थोड़ा समय लगेगा। मैं कोशिश करूँगा कि जल्दी-से-जल्दी अपनी बात पूरी कर सकूँ। तिवारी जी, मैं तो कभी-कभी ही बोलता हूँ।

मैं यह कह रहा था कि प्रधान मंत्री मोदी जी को 'Champions of the Earth' खिताब से नवाजा गया और वह भी यूनाइटेड नेशन्स के सेक्रेटरी जनरल ने भारत आकर उनको यह खिताब दिया। यह परिणाम हुआ भारत के 'स्वच्छता अभियान' का। इसको हम सब लोग जानते हैं। मैं यहाँ आपको यह भी बताना चाहता हूँ कि मुझे 'आयुष्मान भारत योजना' से जुड़ने का मौका मिला। सभापति जी, जब मैं पहले स्वास्थ्य मंत्री था, तो मुझे विदेश जाने का अवसर मिलता था, वहाँ एक fashionable word बन गया था और वह वर्ड था UHC.

श्री सभापतिः आप मुझे भी थोड़ी राहत दीजिए। जब आप स्वास्थ्य मंत्री नहीं थे, तब भी आप मुझे डॉक्टरों के कार्यक्रम में जाने के लिए बाधित करते थे। आपने कहा था कि डॉक्टर आपका पीछा नहीं छोड़ते और आप उनका पीछा नहीं छोड़ते। अब वह विभाग आपको मिल गया है।

श्री जगत प्रकाश नड्डाः धन्यवाद, सभापति जी।

श्री सभापतिः ऐसे मैंने दो अच्छे कार्यक्रम किए हैं - एक भारत मंडपम में, जहाँ हजारों डॉक्टर्स उपस्थित थे।

श्री जगत प्रकाश नड्डाः सभापति जी, मैं आपका धन्यवादी हूँ कि आपने मेरा निवेदन हमेशा स्वीकार किया और डॉक्टर्स को उससे बहुत प्रोत्साहन मिला तथा उनको अच्छा भी लगा।

मैं 'आयुष्मान भारत योजना' के बारे में कह रहा था। उस समय UHC (Universal Health Coverage) चलता था। मैं स्वीडन गया, World Health Assembly में गया, वहाँ पर मैं यूएचसी के बारे में सुनता था। What are you doing about the UHC? मुझे लगता था कि भारत Universal Health Coverage के लिए क्या कर पाएगा? हम कहाँ खड़े हैं? हम कैसे कर पाएँगे? जब हम भारत आए, तो प्रधान मंत्री जी से इस पर चर्चा हुई। उन्होंने कहा कि इसके लिए कुछ सोचिए, कोई स्कीम बनाइए। मैं निर्मला जी को धन्यवाद देना चाहता हूँ क्योंकि इन्होंने इसमें बहुत योगदान किया। आपको जान कर खुशी होगी कि आज भारत की 'आयुष्मान भारत योजना' दुनिया का सबसे बड़ा Universal Health Coverage है। भारत की 40 प्रतिशत आबादी, यानी 55 करोड़ लोग इसके लाभार्थी हैं। ये कौन लोग हैं? ये गरीब लोग हैं। मैं बार-बार बताता हूँ कि ये लोग by profession, रिक्शा वाला, रेहड़ी वाला, फेरी वाला, सब्जी वाला, ठेला वाला, rag picker, जो rag पिक करते हैं, liftman, बस का ड्राइवर, बस का क्लीनर, ट्रक का ड्राइवर, ट्रक का क्लीनर, बस का कंडक्टर, वेटर, जो होटल में काम करते हैं, बार्बर, जो बाल काटते हैं, ऐसे गरीब लोगों को पाँच लाख रुपए का सालाना हेल्थ कवरेज देने का काम किया गया है। आज आपको जान कर खुशी होगी कि 30 हजार करोड़ रुपए गरीबों की सेवा के लिए लग चुके हैं और 30 हजार करोड़ रुपए उन गरीबों के इलाज के लिए लग चुके हैं। मैं आप सबको खुशी के साथ बताना चाहता हूँ , ,हम सब लोग ,सबको बताना चाहता हूँ ,क्योंकि वह राष्ट्रपति जी के अभिभाषण में उल्लेखित है जो अभी60 से नीचे हैं लेकिन ,70 होने के बाद हम सब लोग "आयुष्मान भारत" में लाख रुपए 5 किसी ,प काकिसी भी इनकम ग्रु ,किसी भी जाति का ,के हेल्थ कवरेज के लिए पात्र होंगे। कोई भी ... ,गरीब हो ,कोई अमीर हो ,भी जेंडर का है(**व्यवधान**)...

एक माननीय सदस्य: यह तिवारी जी के लिए है। ...(**व्यवधान**)...

श्री सभापति: यह केवल तिवारी जी के लिए ही नहीं, बल्कि मेरे लिए भी है। इस मामले में मैं और तिवारी जी एक साथ हैं। ...(**व्यवधान**)... जयराम जी भी हैं। ...(**व्यवधान**)...

श्री जगत प्रकाश नड्डा: सबको 70 साल की उम्र के बाद 5 लाख रुपए का हेल्थ कवरेज मिलेगा। यह आप ध्यान में रखिए, हम चाहेंगे कि आप स्वस्थ रहें, लेकिन 70 साल के बाद जब 80 साल आते है, तो बीमारी होने की परिस्थिति भी बनती है। इंश्योरेंस कंपनी भी 70 के बाद इंश्योरेंस नहीं करती है और यहाँ तो मोदी जी आपको 70 वर्ष से आजीवन तक 5 लाख रुपए का हेल्थ कवरेज दे रहे हैं। यह है "आयुष्मान भवः, आयुष्मान भारत।" हमने उसको आगे बढ़ाने का काम किया है।

उसी तरीके से, मैं यहाँ आपसे "जन औषधि केंद्र" के बारे में भी बात करना चाहूँगा। आजकल ब्लड प्रेशर की, डायबिटीज की, किडनी की, लीवर की कुछ ऐसी दवाइयाँ हैं, जो हमको जीवनपर्यंत लेनी पड़ती हैं। ये सारा जीवन लेनी पड़ती हैं। ब्रांडेड दवा महंगी होती है। ब्रांडेड दवा में कम से कम 80-90 परसेंट का फर्क होता है, लेकिन प्रधान मंत्री मोदी जी ने जन औषधि केंद्र के लगभग 10,000 आउटलेट्स खोले हैं और उन्होंने यह तय किया है कि 25,000 आउटलेट्स खुलेंगे, ताकि कोई भी गरीब व्यक्ति, जो 5 हजार रुपए खर्च करता था, वह आज महीने का 300-400 रुपए खर्च करता है और उसको इलाज के लिए दवाई मिलती है। अब इस तरीके की स्थिति की गई है।

अब हम बैंकिंग सेक्टर की बात करें। हमारे विपक्ष के लोग ही बैंकिंग के बारे में कहते थे कि एनपीए हो गया, यह हो गया, वह हो गया, बैंक्स डूब रहे हैं। सबको मालूम है कि 2014 से पहले बैंकिंग सिस्टम collapse की स्थिति में आ गया था। निर्मला जी ज्यादा अच्छे से बताएँगी। मैं कोई आर्थिक विषय का ज्ञाता नहीं हूँ, लेकिन साधारणतः इतना जानता हूँ कि बैंकिंग सिस्टम collapse कर रहा था। उस समय, उस collapse होने की स्थिति में बैंकिंग में रिफॉर्म्स लाए गए। Insolvency and Bankruptcy Code (IBC) बना। आज आपको बताते हुए मुझे खुशी होती है कि इंडियन बैंकिंग सेक्टर दुनिया में one of the strongest sectors बन गया है। पब्लिक सेक्टर बैंक्स का जो प्रॉफिट है, उसने वर्ष 2023-24 में 1.4 लाख करोड़ cross किया है। यह हमारे पब्लिक सेक्टर बैंक्स की स्थिति है। यह लगभग 35 per cent higher than the last year है। यह last year से 35 प्रतिशत higher है।

विपक्ष के हमारे कुछ नेता, जो किसी और सदन में भी होंगे, उन्होंने एसबीआई के बारे में प्रश्न उठाया था। एसबीआई के काम करने के तरीके पर उन्होंने प्रश्नवाचक चिह्न लगाया था। आज मुझे यह बताते हुए खुशी है कि State Bank of India is earning record profit. इसी तरीके से, एलआईसी की बिल्डिंग के बारे में कहा गया कि यह भूत बंगला बन गया है, यह भूतिया बंगला है, यह एलआईसी की बिल्डिंग भूतिया बंगला बन गई है। इस तरीके से एलआईसी को derogate करने का प्रयास हुआ था, लेकिन प्रधान मंत्री मोदी जी ने कहा था कि मैं सीना तान कर कहना चाहता हूँ, आँखें ऊँची करके सुनाना चाहता हूँ कि आज एलआईसी का शेयर रिकॉर्ड स्तर पर गया है और रिकॉर्ड शेयर हुआ है, यह भी हमको देखना पड़ेगा। यह है बदलता भारत, जिसको हमको समझना चाहिए। सभापति महोदय, मुझे याद है कि एक समय हमारे राजनीतिक दल, विपक्षी दल HAL (Hindustan Aeronautics Ltd.) के सामने धरने पर बैठ गए थे। वहां के employees के साथ बहुत हमदर्दी दिखा रहे थे। जो अंदर जाना चाहते थे, उनके साथ बैठकर उनको भी बाहर खींच कर ला रहे थे। यह टोकनिज़्म चल रहा था कि HAL डूब गया, HAL खत्म हो गया। ये सारी बातें कहने वाले वे लोग थे। आज HAL देश की डिफेंस इंडस्ट्री की रीढ़ की हड्डी बन गया है, इस बात को भी हमें समझ लेना चाहिए। इस तरह से HAL आज strengthen हो रहा है।

इसी तरह से जीएसटी ने हमारी इकोनॉमी को formalize किया है और उसने हमारे बिज़नेस और ट्रेड को आसान बनाया है। अप्रैल का जीएसटी का कलेक्शन 2 लाख करोड़ रुपये क्रॉस कर गया है, यह भी हमको ध्यान में रखना चाहिए। किस तरह से हम informal economy से formal economy की तरफ बढ़ रहे हैं। यह ठीक है कि नारे देने के लिए, राजनीति करने के लिए कोई जीएसटी को कुछ भी कहे, कोई गब्बर बोले, कोई फ़लाना बोले, कोई कुछ बोले - देश ऐसे

नहीं चलता है, देश बहुत बारीकियों से नीतियां बनाकर आगे बढ़ता है, तब चलता है। यह 2 लाख करोड़ रुपए डिपॉज़िट ऐसे ही नहीं आया है। कई लोग चर्चा करते थे कि नोटबंदी हो गई, फ़लाना हो गया। आज भारत इनफॉर्मल इकोनॉमी से फॉर्मल इकोनॉमी की तरफ आ गया। इस बात को भी हमें समझ लेना चाहिए। इसीलिए आज जीएसटी के माध्यम से हम आगे बढ़े हैं।

मैं यहां डिजिटल इंडिया की बात भी करना चाहूंगा। जब हमने डिजिटल इंडिया की तरफ बढ़ने की कोशिश की, तब हमारे भारत की ताकत पर प्रश्न खड़े हुए। मुझे याद है, वे हमारे बड़े learned मेम्बर हैं, अभी चिदम्बरम जी सदन में नहीं हैं। उन्होंने कहा, how will an uneducated lady use the mobile? कैसे काम होगा, कैसे यूपीआई चलेगा, कैसे डिजिटल इंडिया बनेगा? आपने भारत की ताकत को पहचाना नहीं था, लेकिन मोदी जी ने पहचाना था। आज आप सब्जी खरीदने जाओ, तो वहां भी सब्जी वाला बोलता है कि यह मेरा क्यूआर कोड है, इस पर लगा कर पेमेंट कर दो। यह बदलता भारत है। वर्ल्ड का 40 परसेंट डिजिटल ट्रांज़ैक्शन भारत में हो रहा है और इसी तरीके से लगभग हमारे डिजिटल इंडिया के पेमेंट्स हो रहे हैं, वह हम सबके ध्यान में है। मैं डिफेंस के बारे में भी बोलना चाहूंगा। मैं एक पहाड़ी राज्य से आता हूं। साधारण भाषा में कहना हो, तो पुंछ में गोली चलती थी, राजौरी में गोली चलती थी। जब गोली चलती थी - सभापति महोदय, मैं वहां गया हूं। मैं एक बार नहीं, अनेक बार बॉर्डर पर गया हूं। वहां मुझे जवान बोलते थे कि साहब, अपना जीवन बचाना ही बहुत बड़ी बात है। मैं पूछता था, क्यों, तो वे कहते थे कि हमें जवाब देने का अधिकार नहीं है। मैंने पूछा कि ऐसी स्थिति में क्या करते हो? तो वह कहता था कि हम नगरोटा को inform करते हैं, नगरोटा चंडी मंदिर को inform करता है और चंडी मंदिर दिल्ली को inform करता है, फिर दिल्ली बोलती है कि चुप रहो, जब कहेंगे, तब जवाब देना। ये स्थितियां हमने देखी हैं। मैं पार्लियामेंट में ज़िम्मेवारी के साथ बोल रहा हूं। आज प्रधान मंत्री मोदी जी के नेतृत्व में यह तय हो गया है कि जहां से गोली चले, जब तक वह गोली चलाने वाला शांत न हो जाए, तब तक चुप नहीं बैठना, जवाब देते रहना, इस बात को भी हमें समझना होगा।

मैं इंफ्रास्ट्रक्चर की बात करूं तो मैं इतना ज़रूर कहना चाहता हूं कि 40 ऑर्डिनेंस की फैक्ट्रीज़ को रिस्ट्रक्चर किया गया, 7 कोड में उनको डाला गया, उनको 7 डिफेंस के सेक्टर में डाला गया और वे लगभग 1 लाख करोड़ रुपये के हमारे मैन्युफैक्चरिंग डिफेंस इक्विपमेंट्स बना रहे हैं और हमारा डिफेंस इक्विपमेंट 18 प्रतिशत बढ़ गया है। अब हम भारत में हैलीकॉप्टर बना रहे हैं, कर्णाटक में ही बना रहे हैं। अब हम फाइटर जेट्स बना रहे हैं, indigenous Fighter Jets बन रहे हैं। सभापति महोदय, हमारे पास बुलेटप्रूफ जैकेट्स नहीं थे, आज हम बुलेटप्रूफ जैकेट्स एक्सपोर्ट कर रहे हैं। मैं आपको बताना चाहता हूं कि मैं पहाड़ से आता हूं। हमारे यहां मिलिट्री convoy चलता था, आगे हरी झंडी का एक थ्री टनर होता था और 40 गाड़ियों के बाद एक लाल झंडी का वन टनर होता था और यह convoy चलता था। जब यह convoy चलता था, तब सारा ट्रैफिक रोक दिया जाता था, तब जाकर एक ब्रिज पार होता था। एक ब्रिज को पार करने में 6-6 घंटे लगते थे। यहां महेंद्र भट्ट जी बैठे हैं, वे बताएंगे कि आर्मी की फौज कैसे जाया करती थी। आज प्रधान मंत्री मोदी जी के नेतृत्व में दस साल में हजारों किलोमीटर की सड़क टू वे और डबल लेन सीमेंटेड पुल बनकर तैयार हो गया है। बार्डर पर कहीं भी डेढ़ दिन के अंदर हमारी आर्मी पहुंच सकती है। यह परिस्थिति आकर खड़ी हुई है। बार्डर रोड ऑर्गेनाइजेशन ने इस तरीके से काम किया है और इसी तरीके से One Rank, One Pension एक पोलिटिकल स्लोगन बन गया। सर,

जाने वाले पांच सौ करोड़ रुपये रखकर OROP की बात कर रहे थे। वह एक तरीके से symbolism था और आज प्रधान मंत्री मोदी जी ने One Rank, One Pension को लागू किया और एक लाख बीस हजार करोड़ रुपये पेंशनर्स को उनकी पॉकेट में, उनके घर तक पहुंचाने का काम किया। National War Memorial, शायद मेरे ख्याल से तारीख ठीक नहीं होगी, लेकिन 80 के दशक में envisage हुआ था, किन्तु नहीं बन पाया। क्योंकि commitment नहीं था, वह सोच नहीं थी, लेकिन आज National War Memorial हम सबको देखने को मिलता है और वह भी हम लोगों ने देखा है। उसमें भी एक इश्यू खड़ा कर दिया गया कि हमारा जो शक्ति स्थल है, उसको हटाया जा रहा है, उसको खिसकाया जा रहा है। देश के शहीद स्थान को हटाया जा रहा है। मैं बताना चाहता हूं कि वह National War Memorial में ले जाया जा रहा था। पता नहीं इनको हटाने से कैसी तकलीफ हो जाती है। उसको स्थान दिया जाए, उनको इज्जत दी जाए, वही उसकी आवश्यकता होती है। वह हुआ और वह किया गया। इस प्रकार से अगर डिफेंस की दृष्टि से विकास की कहानी कहें, तो कौन सा equipment है, जो भारत में नहीं बन रहा है। हर दृष्टि से हम प्रयास कर रहे हैं और इसमें कोई दो राय नहीं है कि चाहे हवाई का बेड़ा था, हम MIG-21 में खड़े थे, बेचारे हमारे पायलेट्स ट्रेनिंग में ही मिग accident-prone हो गया था, obsolete हो गया था, outdated हो गया था। कोई नया बेड़ा नहीं आ रहा था, फैसला नहीं हो पाता था और जब भी कुछ खरीदारी करने जाओ, तो कमीशन का झगड़ा होता था और कमीशन के झगड़े में स्कैंडल होता था। चाहे AgustaWestland हो, चाहे Chinook हो, चाहे Rafael हो। आज प्रधान मंत्री मोदी जी के नेतृत्व में Rafael का बेड़ा भी आ गया, चिनूक भी आ गया - आज विकास की दृष्टि से उसको आगे बढ़ाने का काम हुआ है। इसलिए मैं आपसे यह कहना चाहूंगा कि हमारी कोशिश रही है, प्रधान मंत्री मोदी जी के नेतृत्व में इस सरकार की कोशिश रही है कि देश लंबी छलांग लगाकर कम समय में विकसित भारत के काम को पूरा करे और इसमें infrastructure हो, defence हो। मैंने कुछ सेक्टर्स के बारे में चर्चा की। सर, सबके बारे में चर्चा करना मुश्किल है, लेकिन मैंने कोशिश की है कि मैं उसके बारे में बताऊं। मैं यहां पर यह भी चर्चा करना चाहूंगा। अब खरगे जी चले गए। वे हमारे बड़े आदरणीय हैं। मैं सोच रहा था कि वे रहेंगे, तो अच्छा रहेगा, लेकिन उनके साथी यहां पर हैं। वैसे भी वे एक्टिव रहते हैं, तो वे हमारी बात सुनेंगे और उन तक मेरी बात पहुंचाएंगे। मुझे कल समझ में नहीं आया कि खरगे जी राष्ट्रपति जी के अभिभाषण पर बोल रहे थे या चुनावी भाषण पर बोल रहे थे। मुझे इसका अंदाजा नहीं मिला, क्योंकि डेवलपमेंट की दृष्टि से राष्ट्रपति जी ने जिन मुद्दों को टच किया, मुझे लगा कि उन पर बोलते हुए अभी भी चुनाव का बैकग्राउंड उनके ध्यान में है, इसलिए वे चुनावी मंच की तरह उसका उपयोग कर रहे थे। यहां भारत रत्न बाबा भीमराव अम्बेडकर जी के बारे में चर्चा हुई। अम्बेडकर जी के बारे में जो उन्होंने कहा, वह मुझे कष्ट देने वाला भी था और विडम्बनापूर्ण भी था। आपने ऐसे भावुक तरीके से बोला जैसे बाबा साहेब अम्बेडकर जी के साथ आपका ऐसा संबंध है।...(**व्यवधान**)...

श्री जयराम रमेश: जैसा देवरस जी के साथ है।

श्री जगत प्रकाश नड्डा: जी, जैसा देवरस जी के साथ मेरा है। वह तो मेरा है ही, इसलिए मुंह से निकला और वह बारम्बार निकलेगा, लेकिन अभी मैं भारत रत्न भीमराव अम्बेडकर जी की बात

कर रहा था। उनके साथ ऐसा संबंध लगा और ऐसा लगा कि जैसे वे बहुत दुखी हैं, जैसे उनकी इज्जत नहीं हुई। मैं उनको याद दिलाना चाहता हूं कि आपकी पार्टी थी, जब भारत रत्न बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर जी ने दुखी होकर नेहरू कैबिनेट से इस्तीफा दिया था, तो उनको इस्तीफे के बाद इसी हाउस में इस्तीफे पर वक्तव्य रखने नहीं दिया गया था, उसकी परमिशन नहीं दी गई थी। He could not place it and he could not speak about the reason of resignation. This is on record कि बाबा साहेब को यहां पर हाउस में ... (**व्यवधान**)...

SHRI JAIRAM RAMESH: Sir, please look at the records of the House and find out*...(Interruptions)...*

MR. CHAIRMAN: Nadda*ji*, one minute.

SHRI JAIRAM RAMESH: Don't distort history. *...(Interruptions)...*

MR. CHAIRMAN: Yes, Jairam*ji*.

SHRI JAIRAM RAMESH: Sir, I just want the hon. Leader of the House to revisit the records of that day and see why that permission was not granted by the Chair. This is all part of the record. This was October 12, 1951. *...(Interruptions)...* Please look at the records. You have a master historian with you. *...(Interruptions)...*
MR. CHAIRMAN: One minute, Jairam*ji*, I thought you were disputing it. You are not disputing it. You are going beyond it. Nadda*ji*, you may continue.

SHRI JAGAT PRAKASH NADDA: Chairman, Sir, I must thank Shri Jairam Ramesh for substantiating that what I am saying is correct.

MR. CHAIRMAN: But, he wants you to say more.

श्री जगत प्रकाश नड्डा : जब इस्तीफा दिया, तो उनको बोलने नहीं दिया गया और भीमराव अम्बेडकर जी को दूसरे दिन press conference करनी पड़ी। खरगे जी के दिल में अभी भी टीस है, मैं उनसे सहानुभूति रखता हूं। उनको अपने कांग्रेस के भाइयों से पूछना चाहिए, जो आप हमारे से पूछ रहे थे कि आपके कांग्रेस के भाइयों ने उनका क्या हाल किया, कैसे उनको देखा?

MR. CHAIRMAN: Nadda*ji*, in 1990, I was a Member of the Lok Sabha. 1990 के दो महीने बहुत महत्वपूर्ण हैं। मार्च के महीने में लम्बे अंतराल के बाद भारत रत्न उनको दिया गया और अप्रैल, 1990 में Central Hall में उनके portrait को unveil किया गया। Portrait को unveil करते समय यह ध्यान रखा गया कि portraits का movement कैसे हो? तब मैंने जानकारी की कि जब

से सेंट्रल हाल में portraits लगे हैं, उनका मूवमेंट होता रहा है, कभी कोई मुद्दा नहीं उठा। आपने 1993 की बात कही है, शायद आप भी उस समय विधायक होंगे, मैं भी विधायक था, जो आपने कहा, वह मैंने भी आंखों से देखा है। मैं कांग्रेस पार्टी का विधायक था और कांग्रेस पार्टी से मेरा गहरा नाता रहा है।

श्री जयराम रमेशः आपने स्वीकार कर लिया, यह बहुत अच्छी बात है।

श्री सभापतिः मैं कभी किसी चीज़ को स्वीकार करने से हिचकिचाता नहीं हूं, पर एक समय था जब मैंने यह कहा था, जिसकी जयराम जी बड़ी कोशिश कर रहे हैं कि जगदीप धनखड़ जब राजस्थान विधान सभा का सदस्य था, तो उसने आरएसएस के बारे में क्या कहा।

श्री जयराम रमेशः सर...

श्री सभापतिः आप मेरी बात सुनिए। मुझे पता है, आपकी पार्टी के अंदर इतनी गोपनीयता नहीं है कि मुझे नहीं पता लगे। माननीय नड्डा जी, मैं बताना चाहता हूं कि आज से करीब 25 साल पहले सदस्य न होने के बाद मैं आरएसएस का एकलव्य बन गया और क्यों बना? तपस्वी लोग हैं, राष्ट्रभक्त हैं, समर्पण की भावना उत्कृष्ट है, दूसरे के विचार को ग्रहण करते हैं और मैं तो आश्चर्यचकित हूं कि खुद के अलावा देश की सोचते हैं, समाज की सोचते हैं, तो आप यह एक्सरसाइज़ बंद कर दो। मैंने कह दिया है।

श्री जयराम रमेशः सर, 5 जनवरी, 1994 को आपने आरएसएस के बारे में क्या कहा था।

श्री सभापतिः मैं यही तो कह रहा हूं। मैं एकलव्य तब नहीं था। मैं 25 साल पहले एकलव्य बना हूं। आप मेरी बात समझ नहीं रहे हैं। आप मेरी बात सुन लीजिए। एकलव्य बनने में मुझे समय लगा। वाल्मीकि जी का भी परिवर्तन हुआ था और जब से मेरा परिवर्तन हुआ - नड्डा जी, जब से मेरा परिवर्तन हुआ, मेरे मन में एक टीस सदा रही कि मैंने प्रथम वर्ष क्यों नहीं किया, द्वितीय वर्ष क्यों नहीं किया, तृतीय वर्ष क्यों नहीं किया, मैं कहता रहा। Please continue.

श्री जयराम रमेशः सर, मैं authenticate करूं क्या?

MR. CHAIRMAN: No; please sit down. ...*(Interruptions)*... जयराम जी, आप ज़रा समझिए।

श्री जगत प्रकाश नड्डा: मैं यहाँ पर यह भी बताना चाहता हूं, जिसका जिक्र अभी हमारे चव्हाण साहब ने किया और महादिक साहब ने भी किया कि 1952 का चुनाव, जो अम्बेडकर जी लड़ने गए थे, उनके विरुद्ध नेहरु जी खुद प्रचार में थे। He himself participated in the electioneering against Bhim Rao Ambedkar ji. आप देखिए मज़ा - इनका ईवीएम से जो बैर है, वह बड़ा

पुराना है, उसमें सबसे बड़ी बात यह थी कि उस समय भीमराव अम्बेडकर जी 14 हज़ार वोट से हारे थे और उनमें इनवैलिड वोट 78 हज़ार हुए थे। इसलिए बैलेट पेपर से इनका पुराना प्यार है। यह संख्या 78 हज़ार है। उस समय जयप्रकाश नारायण जी ने कहा था कि इस चुनाव में धांधली हुई है। यह हमने नहीं कहा, यह जयप्रकाश नारायण जी ने कहा कि चुनाव में धांधली हुई है। इसी तरीके से हमारे जो धनंजय कीर हैं, जिन्होंने पुस्तक लिखी है 'डा. बाबा साहेब अम्बेडकर जीवन चरित्र', आपकी सरकार ने पद्म भूषण दिया था। वे इस बात की पुष्टि करते हैं कि किस तरीके से भीमराव अम्बेडकर जी को हराया गया - इस बात को उसमें कहते हैं। उसी तरीके से आपने भी कहा कि 1990 में, जिसका आपने जिक्र किया कि भारत रत्न मिलते-मिलते 1990 हो गया, जब कांग्रेस की सरकार गई - अब खरगे साहब को बाबा साहेब अम्बेडकर जी से बहुत हमदर्दी है, यह व्यक्तिगत रूप में हो सकती है, लेकिन जिस पार्टी में हैं, उसे कभी हमदर्दी नहीं रही। मैं यह जरूर बताना चाहता हूं कि उन्हें कभी हमदर्दी नहीं रही।

विपक्ष के नेता (श्री मल्लिकार्जुन खरगे): मैं अपने रूम में बैठा था, तब साहब का भाषण चल रहा था। ..(**व्यवधान**)..नड्डा साहब सामने बैठे हैं, मैं उन्हें साहब ही बोल रहा हूं। नड्डा साहब का भाषण चल रहा था, खरगे साहब के लिए हमदर्दी बता रहे थे, बाबा साहेब अम्बेडकर के बारे में बहुत कुछ कह रहे थे, लेकिन उन्हें किसने हराया, किसने किया - उन्होंने ये सभी बातें कहीं। नड्डा साहब को यह भी मालूम होगा कि डा. बाबा साहेब अम्बेडकर की पार्टी अलग थी। पहले उन्होंने खुद लेबर पार्टी की स्थापना की। वे उस पार्टी के अध्यक्ष के नाते दूसरी पार्टियों से alliance करते थे। उसके बाद उन्होंने लेबर पार्टी को निकालकर शैड्यूल्ड कास्ट फेडरेशन बनाया। शैड्यूल्ड कास्ट फेडरेशन बनाने के बाद उस वक्त भी उन्होंने अपना अलग ही अस्तित्व रखा। वे कांग्रेस के साथ नहीं थे, वे कांग्रेस के लिए यही कहते थे कि मैं कांग्रेस से दूर हूं। ..(**व्यवधान**)..क्या है ?

MR. CHAIRMAN: No. Please. ...*(Interruptions)*... When the Leader of the Opposition is speaking, why should you disturb him? ...*(Interruptions)*... No. Neither Nadda ji nor Kharge ji can be disturbed. Please keep quiet. Yes, Kharge ji, please continue.

श्री मल्लिकार्जुन खरगे: मैं कांग्रेस से दूर हूं। वे तो यहाँ तक भी बोलते थे कि मैं कांग्रेस के साथ कभी संबंध नहीं रखूंगा, इसीलिए उन्होंने अपनी अलग पार्टी रखी। आज़ादी के वक्त जब ऑल पार्टी गवर्नमेंट बनी, यानी उसमें जनसंघ के नेता भी मिनिस्टर थे, इंडस्ट्री मिनिस्टर थे, उसमें श्यामा प्रसाद मुखर्जी और मुस्लिम लीग के भी लोग थे, पंजाब की पार्टी के भी थे, उसमें ऐसे 6 लोग थे। ..(**व्यवधान**)..हिंदू महासभा बोलो। इनको बोलने के लिए कम से कम इतनी मालूमात तो कर लेनी चाहिए। मैंने देखा है, ये बार-बार यही बात करते हैं कि फोटो हमने लगाया। मैं बोलूं कि फोटो आपने लगाई, और स्टैच्यू तुमने हटाया! क्या मैं यह बात बोलूँ? ..(**व्यवधान**)..

श्री सभापति : एक सेकंड।

श्री मल्लिकार्जुन खरगे: सर, मुझे एक मिनट दीजिए। ...(**व्यवधान**)... उनका टाइम खत्म होने के बाद मैं यहाँ से उठकर गया, लेकिन उसे चलाने के लिए आपने समय दिया।

MR. CHAIRMAN: I will give you time. ..*(Interruptions)*..

श्री मल्लिकार्जुन खरगे: ठीक है, आप बोलिए। ...(**व्यवधान**)... मैंने object नहीं किया।

MR. CHAIRMAN: I indicated that his party had enough time after 40 minutes, and what Nadda *ji* is trying to do, let me tell you; and what I can figure out is, you took 90 minutes and Naddaji is yet to complete 90 minutes. ..*(Interruptions)*.. So, I have reconciled. ..*(Interruptions)*.. I have already sent a message to my wife that I have invited guests, please attend to them.

श्री मल्लिकार्जुन खरगे: आप 90 मिनट्स दीजिए या 100, that is your discretion. I don't challenge it.

MR. CHAIRMAN: No, no; time is at his disposal.

SHRI MALLIKARJUN KHARGE: Even otherwise also, you can extend and give him time. I don't mind that.

श्री सभापति: सर, आपने क्या कहा?

श्री मल्लिकार्जुन खरगे : अगर हाउस को एक्सटेंड करके भी किसी को टाइम देना है...

MR. CHAIRMAN: Otherwise, in which connection?

श्री मल्लिकार्जुन खरगे : अदरवाइज़ का मतलब है कि उनकी पार्टी के पास टाइम ही नहीं है और हाउस को बढ़ाना भी है, तो consent से आप हाउस को बढ़ा सकते हैं।

MR. CHAIRMAN: Let me put on record that in the last Session when Congress Party had run out of time, I gave extra time.

SHRI MALLIKARJUN KHARGE: Thank you, Sir.

MR. CHAIRMAN: And it will be, by any such situation, ahead of any political party, I would try to adjust accordingly.

SHRI MALLIKARJUN KHARGE: Okay, Sir. Thank you. मैं यही बोल रहा था कि बार-बार बाबा साहेब अम्बेडकर के बारे में बोलकर काँग्रेस को कम करने की कोशिश की जा रही है।

MR. CHAIRMAN: You have made your point, Sir.

श्री मल्लिकार्जुन खरगे: मैं समझता हूँ कि उन्हें यह भी मालूम नहीं है कि बाबा साहेब अम्बेडकर कौन-कौन सी पार्टी में थे। उन्होंने कौन-कौन सी पार्टी बनाई। बाद में रिप्बलिकन पार्टी भी बनी थी। ...(**व्यवधान**)... जब वे बॉम्बे में हारे, तब इनकी दोस्ती किनके साथ थी? ...(**व्यवधान**)... तब तो ज्वाइंट पार्लियामेंटरी सिस्टम था। ...(**व्यवधान**)... उस वक्त कम्युनिस्ट और आज जो रिपब्लिकन पार्टी है, जो पहले शैड्यूल्ड कास्ट्स फेडरेशन थी, दोनों मिलकर लड़े। ...(**व्यवधान**)... इस देश में ऐसी मानसिकता है, इसलिए कभी बोलो तो आप लोगों को गुस्सा आता है, लेकिन मेरे में उससे ज्यादा गुस्सा है, क्योंकि मैं हजारों साल से यह गुस्सा सहन कर रहा हूँ। ...(**व्यवधान**)...

MR. CHAIRMAN: Thank you, Sir. *..(Interruptions)..*

श्री मल्लिकार्जुन खरगे: उस वक्त कमयुनिस्ट कैंडिडेट इलेक्ट हुआ, डा. बाबा साहेब अम्बेडकर उनके ally थे, डिफीट हो गए। ...(**व्यवधान**)... काँग्रेस, काँग्रेस, क्या काँग्रेस? ...(**व्यवधान**)... किसको बोलते हैं? ...(**व्यवधान**)... आप पढ़िए। ...(**व्यवधान**)...

MR. CHAIRMAN: Thank you, Sir. *..(Interruptions)..* What is your problem? *..(Interruptions)...*

श्री मल्लिकार्जुन खरगे: आप पढ़िए। ...(**व्यवधान**)... हम तो उनके पोस्टर्स लगाकर आए हैं। ...(**व्यवधान**)...

MR. CHAIRMAN: Okay, Sir. *..(Interruptions)..* Nadda ji, please continue. *..(Interruptions)..* Thank you, Sir. *..(Interruptions)...*

श्री जगत प्रकाश नड्डा: सभापति जी...

MR. CHAIRMAN: Please, please. *...(Interruptions)...* Take your seat. *..(Interruptions)..* Only those persons whom I give permission can speak. I gave permission to the Leader of the Opposition. He has made his point. Now, Nadda *ji* is well within his rights to react. Let me plead with all of you; when Members speak, please do not interrupt. I was happy that when Kharge *ji* spoke, the disturbance was minimal. When you are speaking, Sir, disturbance is minimal. Numbers may not be

there, but Jairam *ji* is present. ..*(Interruptions)*.. So, minimal disturbance is there. ..*(Interruptions)*.. I am looking at the clock also. ..*(Interruptions)*.. One second. The Leader of the Opposition wants to say something.

श्री मल्लिकार्जुन खरगे : सर, नड्डा साहब आपकी तरफ देखकर एड्रेस नहीं कर रहे थे, बल्कि अपनी पार्टी के सभी एमपीज़ की तरफ देख रहे थे और आपकी तरफ कम देख रहे थे। मैंने देखा कि उधर देखकर एड्रेस कर रहे थे। मैं इसे बीजेपी की कोई एग्जीक्यूटिव कमिटी समझकर उठकर चला गया। ...(**व्यवधान**)...

श्री सभापति: नड्डा जी, मेरी तरफ देखिए। ...(**व्यवधान**)...

श्री मल्लिकार्जुन खरगे: फिर बाद में आपके साथ बात कर रहे हैं। ...(**व्यवधान**)...

MR. CHAIRMAN: Hon. Finance Minister, I can assure you that there is coordination. ..*(Interruptions)*..

THE FINANCE MINISTER (SHRIMATI NIRMALA SITHARAMAN): Sir, I fully respect the LoP. I fully respect what he says.

8.00 **P.M.**

We should then look at the Parliament as a whole. The Leader of the Opposition, Lok Sabha, yesterday was showing his back half the time to the Chair. ...(*Interruptions*)... I know that. ...(*Interruptions*)... But I am looking at the entire parliamentary etiquette. ...(*Interruptions*)... I am fully aware of that, Sir. ...(*Interruptions*)... Sir, parliamentary etiquette applies both to the Lok Sabha and the Rajya Sabha.

MR. CHAIRMAN: I will always appreciate this. The Leader of the Opposition and the Leader of the House must share lighter moments and sarcasm. They must be allowed to intervene. ...(*Interruptions*)... Others do not have that privilege. Let me make it very clear.

श्री जगत प्रकाश नड्डा: सभापति जी, मेरी इच्छा है कि मैं आपकी तरफ देखूं और उधर देखूं, पर संख्या नहीं है, क्या करूं, फिर इधर देखना पड़ता है।

श्री सभापति: सर, संख्या हो या नहीं हो, आप तो मेरी तरफ ही देखिए।

श्री जगत प्रकाश नड्डाः ठीक है। अब देखिए, अब मैं आपकी तरफ देखता हुआ बात कर रहा हूं, क्योंकि मुझे ...

श्री सभापतिः एक छोटा किस्सा है। ...(**व्यवधान**)... I was junior Parliamentary Affairs Minister और एक मुद्दा यह आया कि उस समय प्रतिपक्ष के नेता ने कहा कि प्रधान मंत्री जी जब भी कोई बात कहते हैं, प्रेस गैलेरी की तरफ देखते हैं। Obviously, पूरे हाउस के अंदर एक वातावरण बन गया कि जब भी प्रधान मंत्री जी बोलते हैं, प्रेस गैलेरी की तरफ देखते हैं। प्रधान मंत्री जी खड़े हुए और उन्होंने कहा कि हां, जब भी मैं कोई प्वाइंट उठाता हूं, तो प्रेस गैलेरी की तरफ देखता हूं, पर आपकी तरह - उन्होंने प्रतिपक्ष के नेता को कहा - हर बार मैं स्माइल नहीं करता हूं। The Prime Minister said, 'Unlike the Leader of the Opposition, I don't smile every time I look at the Press Gallery.'

श्री जगत प्रकाश नड्डा: सभापति जी, मैं यह कह रहा था कि जिस बात को आपने अभी हाउस में रखा, मैं उस बात को पूरा करना चाहता हूं, पर उससे पहले मैं खरगे साहब को यह जरूर कहना चाहता हूं कि उन्होंने कहा कि मुझे बहुत गुस्सा है। बहुत अच्छी बात है, वह गुस्सा, वह आपकी आग रहनी चाहिए, लेकिन थोड़ी वह अपनी पार्टी पर उतरनी चाहिए, क्योंकि अम्बेडकर जी को छोटा करने का काम, उनको मिनिमाइज़ करने का काम किसी और ने नहीं किया, इस देश की रूलिंग पार्टी ने उस समय किया। ...(**व्यवधान**)... आप बताइए कि भारत रत्न देने के लिए 1947 के बाद 1990 तक क्यों इंतजार करना पड़ा और क्यों जब गैर कांग्रेसी सरकार, जनता दल की सरकार, बीजेपी के समर्थन से चलने वाली सरकार आई, तब जाकर अम्बेडकर जी को भारत रत्न मिला। यह मैं कहना चाहता हूं। ...(**व्यवधान**)...

MR. CHAIRMAN: Please conclude.

श्री जगत प्रकाश नड्डाः मैं यहां यह भी कहना चाहता हूं कि हमारी सरकार ने लिप सर्विस नहीं की, हमारी सरकार ने सही मायने में डा. अम्बेडकर को लंबे समय तक यह देश याद रखे, इसके लिए कार्यक्रमों को लिया है। ये प्रधान मंत्री मोदी जी थे, जिन्होंने पंच तीर्थ बनाए। ये प्रधान मंत्री मोदी जी थे, जिन्होंने महू को जन्म भूमि कहा और लंदन के घर को, वहां भारत सरकार के पैसे से उस जमीन को लेकर, उस जगह को लेकर वहां पर फिर से स्मारक बनाने का काम किया। दीक्षा भूमि नागपुर में, महापरिनिर्वाण भूमि दिल्ली में और चैतन्य भूमि मुम्बई में - यह काम किसी ने किया है, तो भारत के यशस्वी प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने किया है। यह किसी सरकार ने नहीं किया। इसलिए हमें यह कहने का अधिकार है कि सही मायने में लिप सर्विस नहीं की, देश के लिए जिस महान विभूति ने, जो chief architect of the Constitution थे, संविधान को सिर्फ माथे से ही नहीं लगाया, बल्कि संविधान निर्माता को देश याद रखे और युगों तक याद रखे, इस पर काम किया है। उसी तरीके से जैसा मैंने कहा कि 26 नवंबर को संविधान दिवस मनाया गयाजिस दिन ड्राफ्टिंग , किसने ,कमिटी ने फाइनल ड्राफ्ट कर लियाकहा था कि 2014 तक इंतजार करो! Who said that you wait till 2014 when there will be Prime Minister, Shri Narendra Modi, who will

come and declare 26th of November as Constitution Day. ...(**व्यवधान**)... तो यह संविधान दिवस मनाया गयाइसको भी हमें ध्यान में रखन ,ा चाहिए।

मैं यहाँ यह भी कहना चाहता हूँ कि इनके ओवरसीज़ फ्रेंड्स के एक बड़े नेता हैं। जब समय आता है, तो पार्टी से निकाल देते हैं और समय निकल जाता है, तो फिर पार्टी में ले आते हैं। ...(**व्यवधान**)... †

SHRI JAIRAM RAMESH: He is not a Member of this House.

श्री जगत प्रकाश नड्डा: मैंने नाम ही नहीं लिया, मैंने नाम ही नहीं लिया। मैंने कहा कि जयराम रमेश जी से मिलते-जुलते हैं। वे कहते हैं कि ...

श्री सभापति: एक सेकंड। मुझे नहीं लगता कि सृष्टि में कोई भी व्यक्ति जयराम जी से मेल खाता हो। जयराम जी अद्भुत हैं।

श्री जगत प्रकाश नड्डा: ठीक है, I take back my words. मैं यह कह रहा था कि उन साहब ने क्या कहा? उन्होंने कहा कि संविधान बनाने में अम्बेडकर जी से ज्यादा बड़ी भूमिका नेहरू जी की है। ड्राफ्टिंग कमिटी के चेयरमैन अम्बेडकर जी, जिन्होंने दिन-रात मेहनत की। नेहरू जी के contribution को कोई भूल नहीं सकता। ...(**व्यवधान**)...

श्री जयराम रमेश: सर, यह गलत है।

श्री जगत प्रकाश नड्डा: आप उसको correct कर दीजिएगा। ...(**व्यवधान**)...

MR. CHAIRMAN: Mr. Jairam Ramesh, I have not given the floor to you. ...*(Interruptions)*...

SHRI JAIRAM RAMESH: *

MR. CHAIRMAN: Nothing will go on record. ...*(Interruptions)*... I have not given you the floor. ...*(Interruptions)*... Mr. Jairam Ramesh, please take your seat. ...*(Interruptions)*...

श्री जगत प्रकाश नड्डा: जयराम जी, आप उसको correct कर दीजिएगा। I have got nothing to score. I am here to discuss and deliberate. ...*(Interruptions)*... आप उसको ठीक

---

† Withdrawn by the hon'ble Member.

* Not recorded.

कीजिएगा, फिर मैं authenticate करूँगा। दूसरी बात, जैसा मैंने कहा कि नेहरू जी के बारे में यह कहा गया कि अम्बेडकर जी से ज्यादा contribution था।

कल यहाँ पर मूर्तियों की चर्चा हुई। खरगे साहब ने बिल्कुल प्रेरणा स्थल के बारे में चर्चा करते हुए कहा कि उनको कोने में डाल दिया। मैं चाहता हूँ कि आप भी प्रेरणा स्थल जाइए, सच में प्रेरणा मिलेगी।

श्री मल्लिकार्जुन खरगे: मैं जाकर आया हूँ।

श्री जगत प्रकाश नड्डा: और देखिए वहाँ पर क्या प्रेरणा मिलती है। एक नहीं, अनेक मिलती हैं। लेकिन जब आप कल मूर्तियों के बारे में कह रहे थे, तो मुझे ऐसा लगा कि शायद आप *

MR. CHAIRMAN: The Leader of the Opposition continues to be young even now. इसलिए यह कहना कि जवानी के दिन में, this will not go on record.

श्री जगत प्रकाश नड्डा: उस समय के जवान, ऐसा कह सकते हैं। उस समय जब जवान थे, तो इन सब चीजों को करते होंगे और बहुत अच्छे से देखते होंगे। पर मैं इनको बताना चाहता हूँ कि आपको मूर्तियों की इतनी चिंता हुई, तो आजादी के इतने साल बाद यह जो राजपथ पर जॉर्ज पंचम विराजमान थे, उसके बारे में आपने क्यों नहीं चिंता की! जॉर्ज पंचम, जो वहाँ पर विराजमान थे, आज वह राजपथ कर्तव्यपथ बन गया और जहाँ आज नेताजी सुभाष चन्द्र बोस जी की मूर्ति विराजमान है और यह प्रधान मंत्री जी के द्वारा हुआ है, उसको भी हमको ध्यान में रखना चाहिए।

मैं यहाँ यह भी कहना चाहता हूँ कि आपने विदेश के रिपोर्टर्स के बारे में कहा, विशेषकर वाशिंगटन पोस्ट, फलाना पोस्ट, ढिमकाना पोस्ट, जो भी था। आप भी उसी तरीके से बोल रहे थे, फलाना, ढिमका, चिलका, इस तरीके से आप उन सारी बातों को उसमें रख रहे थे। अच्छी बात है, आपने सब कुछ रखा, लेकिन आप यह भूल गए कि जिस पाकिस्तान के मंत्री ने यह बयान पार्लियामेंट में दिया कि पुलवामा में हमारे लोगों ने घुस कर attack किया, वह कहता है कि राहुल गाँधी अच्छा काम कर रहा है। वह कहता है कि मोदी जी को हराना आवश्यकता है। यह भी छपा था, तो जरा इसके बारे में भी आप चर्चा कर देते। जब आपने चर्चा की, तो आप इस बात पर भी चर्चा करते कि एक महानुभाव, जो बहुत बड़े ज्ञाता हैं, अंग्रेज़ी में ही बात करते हैं, यह अच्छी बात है, इसमें कोई दो राय नहीं हैं, उनको लिखने का बड़ा शौक है, वे बंगलादेश के journal में एक लेख लिखते हैं कि "Modi has to go." वे विदेश की धरती के journals में लिखते हैं, तब हमें तकलीफ नहीं होती है। इसलिए पराए क्या, अपने भी ऐसे निकले, इस बात को भी हमें समझ लेना चाहिए। इसीलिए जब ये सारी बातें आती हैं, तो मुझे लगता है कि इसको भी हमको detail में समझ लेना चाहिए और जान लेना चाहिए।

यहाँ राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के बारे में भी बातचीत हुई। वैसे आपने जिस तरीके से बताया कि वे ध्येयनिष्ठ हैं, राष्ट्र के लिए हैं, समर्पित हैं, वे सारी बातें आपने बतायी और उन्होंने संघ के

* Not recorded.

बारे में बताया। मैं यह पूछना चाहूँगा कि यदि RSS से इतनी ही तकलीफ थी, तो जवाहरलाल नेहरू ने हमारे यहाँ जो गणतंत्र दिवस की परेड होती है, उसमें RSS को क्यों निमंत्रण दिया था? मैं यह पूछना चाहूँगा कि 1965 की लड़ाई में consultation के लिए शास्त्री जी ने गुरु गोलवलकर जी को क्यों बुलाया था? इसका मतलब एक बात तो साफ है कि कांग्रेस को भी यह समझ में आता है कि जब देश खतरे में है, तो संघ की पुकार होती है, संघ की बात ...(**व्यवधान**)... बाकी समय राजनीति, लेकिन जब देश खतरे में होता है, तो उनको संघ की याद आती है और संघ को याद करना पड़ता है।

मैं यहाँ यह भी बताना चाहता हूँ कि आप सब लोग आजकल संविधान के बहुत बड़े रक्षक बने हैं। इन दिनों you are the champions of the Constitution. सबके पास वह तुरंत ready material के रूप में रहता है। देखिए, जयराम जी निकाल रहे हैं, दिखा रहे हैं। ...(**व्यवधान**)... बिल्कुल। संविधान-संविधान - यह अच्छी बात है।

श्री सभापतिः नहीं, नहीं। To show this is inappropriate, Jairam*ji*. *...(Interruptions)...* No. *...(Interruptions)...* Nothing can be shown in the House. *...(Interruptions)...* नहीं, नहीं। *...(Interruptions)...* Let us follow the rules. *...(Interruptions)...* Nothing can be shown. *...(Interruptions)...*

श्री जगत प्रकाश नड्डा: सभापति जी, मैं यह पूछना चाहता हूँ कि..

MR. CHAIRMAN: But your connection with Jairam needs to be investigated. *...(Interruptions)...* You said about Constitution and he had a book ready.

SHRI JAGAT PRAKASH NADDA: He was the Chairman of the Standing Committee on Health in my previous regime.

MR. CHAIRMAN: So, I know, there is a connection.

श्री जगत प्रकाश नड्डा: सभापति जी, मैं संविधान के बारे में यह कहना चाहता हूँ कि मैंने संविधान के बारे में कई बार बोला कि यह संविधान सबके हाथ में तो थमा दिया, क्या उसके अन्दर पढ़ने के लिए भी कहा है? क्या कभी बताया है कि संविधान की धज्जियाँ किसने उड़ाईं और एक बार नहीं, अनेकों बार उड़ाईं? सभापति जी, यह संविधान लेकर चलना और संविधान की रक्षा करना तथा संविधान के लिए तिल-तिल कर जलना - इसमें बहुत अन्तर है। संविधान को जीना बड़ा कठिन है, इस बात को भी हमें ध्यान में रखना चाहिए। इसलिए यह ठीक है, अच्छी बात है कि ये संविधान लेकर चले हैं और उसको आगे रख रहे हैं।

मैं यहाँ पर आपसे पूछना चाहता हूँ कि आप संविधान के रक्षक ही थे, मैं संविधान में कुछ किए गए हस्तक्षेपों के बारे में बताना चाहता हूँ। 25 जून, 1975 को जयप्रकाश नारायण के आन्दोलन के दौरान जब इलाहाबाद हाई कोर्ट ने इंदिरा गांधी जी के चुनाव को गलत बताते हुए

रद्द किया था, तो इंदिरा गांधी जी ने 25 जून, 1975 को आपातकाल या Emergency थोप कर लोकतंत्र की हत्या की थी। ...(**व्यवधान**)... एक और चीज़ देखिए। 22 जुलाई, 1975 को संविधान का 38वाँ संशोधन करके, 38th Amendment लाकर आपातकाल पर न्यायिक समीक्षा के रास्ते को बन्द कर दिया गया था। ये डा. अम्बेडकर की दुहाई देते हैं? इनके जो नेता हैं, मैं उनके बारे में कहना नहीं चाहता हूँ। उन्होंने कितनी पढ़ाई-लिखाई की होगी, मुझे मालूम नहीं है। लेकिन यह तो एल्डर्स हाउस है, यहाँ तो पढ़े-लिखे लोग हैं। संविधान की कॉपी लेकर घूम रहे हैं! ये मुझे बताएँ कि 38वाँ संशोधन किस लिए लाया गया था? इसको इसलिए लाया गया था कि भारत के जनमानस के गले को बाँध दिया जाए, रोक दिया जाए, उनकी ज़बान को बंद कर दिया जाए। आप इसको इस मकसद से लेकर आए थे। मैं यहाँ आपको बताना चाहता हूँ कि इसके तहत 7 सितम्बर, 1976 से प्रधान मंत्री, राज्यपाल, राष्ट्रपति, पद छोड़ने के बावजूद भी उनके खिलाफ कोई मामला दर्ज नहीं हो सकता। आप बताइए? अम्बेडकर जी ने कहा, 'Equality before the Law. Law is equal for everybody.'

MR. CHAIRMAN: But, the Vice-President was not included?

SHRI JAGAT PRAKASH NADDA: Yes, the Vice-President was not included. यह सेलेक्टिव काम था, लेकिन दिनदहाड़े संविधान की आत्मा को समाप्त करने का काम किया। इसकी शब्दावली भी देखिए - पद पर रहते हुए नहीं, पद छोड़ने के बाद भी उन पर कोई केस नहीं हो सकता है। इस तरह का उन्होंने इंतजाम किया था। ये संविधान के रक्षक हैं!

उसी तरीके से 1977 में 42वाँ संविधान संशोधन आया।...(**व्यवधान**)... मैं आपके संविधान पर बोल रहा हूँ। आपने कल जो मुद्दे उठाए हैं, उन्हीं पर मैं बोल रहा हूँ।...(**व्यवधान**)...

MR. CHAIRMAN: Please continue.

श्री जगत प्रकाश नड्डा: सभापति जी, 42वें संविधान संशोधन के द्वारा संविधान की मूल संरचना को ही बदल दिया गया। मौलिक अधिकारों की कटौती करते हुए मौलिक कर्तव्यों को लागू करने के लिए संविधान की मूल संरचना को बदल दिया गया। यह 1977 में इंदिरा गाँधी जी के द्वारा हुआ। धारा 356 was implemented 90 times. 90 बार राष्ट्रपति शासन लगाया गया। उनमें से 50 बार इंदिरा गाँधी जी ने लगाया, 8 बार जवाहरलाल नेहरू जी ने लगाया और बाकी बार राजीव गाँधी जी ने लगाया। ये संविधान के रक्षक हैं! चुनी हुई सरकारों को, एक नहीं, बल्कि 90 बार गिराया है। प्रजातंत्र का गला घोंटा है। ये संविधान के रक्षक बन गए। डायरीनुमा कंस्टीट्यूशन को रख लेने से संविधान के रक्षक नहीं बनते, बल्कि संविधान के रक्षक बनने के लिए उसकी आत्मा को जीना पड़ता है और हम यह कह सकते हैं कि मोदी जी ने 10 साल बतौर प्रधान मंत्री देश को चलाया है, लेकिन सिवाय जम्मू-कश्मीर में, वह भी कंडीशनल और पार्लियामेंट में कह करके, एक भी जगह राष्ट्रपति शासन नहीं लगाया। सब जगहों पर चुनी हुई सरकार थी।

सभापति जी, आप वैस्ट बंगाल के गवर्नर रहे हैं। आपको मालूम है कि वैस्ट बंगाल में क्या-क्या हो रहा है। आप उसको अच्छी तरीके से जानते हैं कि वहाँ किस तरीके से मानवता का गला

घोंटा जा रहा है, किस तरीके से law and order को jeopardize किया जा रहा है, किस तरीके से hostage बनाया जा रहा है। अभी-अभी flogging की एक ताजा मिसाल है, लेकिन विपक्ष से इसके बारे में एक शब्द नहीं बोला जाता है and they are called as the champions of democracy. ये अपने आपको प्रजातंत्र के चैंपियन कहते हैं, लेकिन उसके बारे में एक शब्द नहीं कहते हैं। मैंने यह बताया कि धारा 356 का किस तरह से दुरुपयोग हुआ। मैं यहाँ यह भी बताना चाहता हूँ कि ये विचार कैसे होते हैं। 1987 में प्रेस की स्वतंत्रता को प्रतिबंधित करने के लिए एक कानून बनाया गया था और अनुच्छेद 19 में विवादास्पद 1951 संशोधन पेश किया गया था। यह किसके द्वरा पेश किया गया था? यह उस समय के तत्कालीन प्रधान मंत्री राजीव गाँधी जी के द्वारा पेश किया गया था। उस समय अपोज़िशन, प्रेस, मीडिया ने उसका विरोध किया था, लेकिन आपकी नीयत तो छलक कर आ ही गई थी। आपने तो संविधान की अभिव्यक्ति को, ताकत को रोकने का काम किया। उसी तरीके से 1988 में राजीव गाँधी जी के द्वारा मानहानि विरोध कानून को भी पेश किया गया और भारी विरोध के बाद उनको वह भी वापस लेना पड़ा। इस तरह से एक बार नहीं, बल्कि अनेकों बार आपने संविधान का.....

सभापति जी, मैं यहाँ आपको बताना चाहता हूँ कि इमरजेंसी की बात चल रही है, मैं matriculation पास करके intermediate का विद्यार्थी बना था, I am an eyewitness to it. You will not believe twice I was arrested. The whole class was arrested twice.कैंपस में आकर सीआरपीएफ इसलिए कि किसी ने बस ,बीएसएफ ने सारी क्लास को अरेस्ट कर लिया , ,आप इमैजिन कीजिए कि कैसे देश चल रहा होगा !का नारा लगा दिया "इंकलाब जिंदाबाद" मैं इंटरमीडिएट का विद्यार्थी था। !र रहे होंगेकिस तरीके से लोग काम क1 लाख 25 ,हजार लोगों को Maintenance of Internal Security Act में अंदर डाल दिया गया ,Defence of India Rules के अंतर्गत डाल दिया गया। आप जो आरएसएस की बात बोल रहे हैंये आरएसएस के लोग ही थे , जिनकी संख्या ,और ये जनसंघ के लोग थे75,000 से ज्यादा थी जो ,19 महीने जेल में रह करके आएयह हम ,वे खड़े रहे ,लेकिन वे झुके नहीं ,हमारे परिवार और हमारे रिश्तेदार रह करके आए , आपको बताना चाहते हैं। उनके चलते आज हमें यह आज़ादी मिली हैआपके चल ,ते नहीं मिली है , यह याद रखिएगा। वह उनके कारण मिली है। ...(**व्यवधान**)... यह प्रजातंत्र आज इतना मजबूत हुआ, इतना मजबूत हुआ कि अब कांग्रेस पार्टी भी हिम्मत नहीं कर सकती है कि कभी इमरजेंसी लगा करके दिखाए। यह आज प्रजातंत्र की मजबूती हुई है इसको हमको ध्यान में रखना चाहिए। ,

महोदय, ये सारी बातें मैंने आपको कहीं। आजकल पता नहीं ये राष्ट्रवादी ताकतों को बताने वाले लोग किस तरीके से खड़े हो रहे हैं ? सनातन को गाली दो और सेकुलर बन जाओ। हिंदू को गाली दो और सेकुलर बन जाओ। हिंदू हिंसक, हिंदू हिंसक! ...(**व्यवधान**)... यह कैसी स्थिति आ गई? ...(**व्यवधान**)... हिंदू हिंसक...(**व्यवधान**)... No, I am not going to...*(Interruptions)*...

MR. CHAIRMAN: Please conclude. ...*(Interruptions)*...

श्री जगत प्रकाश नड्डा: हिंदू, हिंसा, हिंसा, हिंसा। ...(**व्यवधान**)... हिंदू हिंसक। ...(**व्यवधान**)... अच्छा, एक बात बताइए, आपके allied partner ने कहा कि नहीं कहा कि सनातन डेंगू है?

आपके allied partner ने कहा कि नहीं कहा कि सनातन मलेरिया है? क्या आपके allied partner ने नहीं कहा कि सनातन HIV है? आप बताइए। ...(**व्यवधान**)...

MR. CHAIRMAN: Or else, we will continue tomorrow..(Interruptions)...

SHRI JAGAT PRAKASH NADDA: No, only five-ten minutes, ज्यादा नहीं है।

अब, उसी तरीके से देश में नफरत फैला रहे हैं! नफरत! ये कहते हैं कि मैं तो प्रेम की गंगा बहा रहा हूँ। वाह रे वाह, प्रेम की गंगा! हिंदू हिंसक! ...(व्यवधान)...सनातन मलेरिया! ...(**व्यवधान**)... सनातन मलेरिया! ...(**व्यवधान**)...सनातन HIV! ...(**व्यवधान**)...

MR. CHAIRMAN: Please. ...*(Interruptions)*... No. ...*(Interruptions)*... ये क्या कर रहे हैं? ...(**व्यवधान**)... What is this? ...*(Interruptions)*...

श्री जगत प्रकाश नड्डा : सनातन मलेरिया! ...(**व्यवधान**)...

MR. CHAIRMAN: No, first control your Members. ...*(Interruptions)*... You are addressing and your own people are rising. ...*(Interruptions)*...

SHRI JAGAT PRAKASH NADDA: Sorry! ...*(Interruptions)*... सनातन डेंगू! यह तो प्रेम की भाषा है और आप चूँ तक नहीं बोलते, आप कुछ बोलते भी नहीं। मैं आपको याद दिलाना चाहता हूँ कि 1984 के बाद आपके वरिष्ठतम स्वर्गीय नेता, जो हमारे भी इज्जत के हैं, मैं भी इज्जत करता हूँ - जब बड़ा पेड़ गिरता है तो जमीन हिलती है। ...(**व्यवधान**)... मैं यह बताना चाहता हूँ। आपने कहा कि हम प्रेम फैला रहे हैं और भारत जोड़ो, भारत जोड़ो, भारत जोड़ो कर रहे हैं और हम तोड़ रहे हैं! तोड़ने का चैंपियन तो आप बन गए! ...(**व्यवधान**)... आप बताइए।

कई माननीय सदस्य: भारत जोड़ो! ...(**व्यवधान**)...

श्री जगत प्रकाश नड्डा: हाँ भइया, जोड़ो। मैं आपसे पूछ रहा हूँ कि जब जेएनयू में यह नारा लगा कि "अफजल हम शर्मिंदा हैं, तेरे कातिल जिंदा हैं।" वहां जब यह नारा लगा कि "भारत तेरे टुकड़े होंगे, इंशाल्लाह इंशाल्लाह," तो दूसरे दिन जेएनयू में उन नेताओं के साथ हाथ से हाथ मिलाकर के कौन खड़ा हुआ था? ...(**व्यवधान**)... कौन खड़ा हुआ था? ...(**व्यवधान**)... किसने जोड़ने की बात की? ...(**व्यवधान**)... उस दिन वहाँ पर कौन था? ...(**व्यवधान**)... और सुनिए। सभापति जी, यह "अफजल हम शर्मिंदा हैं," में अफजल कौन था? वह इस पार्लियामेंट पर अटैक करने का mastermind था। ...(**व्यवधान**)...उसको सज़ा-ए-मौत किसने दी थी? ...(**व्यवधान**)... उसको सज़ा-ए-मौत सुप्रीम कोर्ट के जज ने दी थी। यानी सुप्रीम कोर्ट का जज कातिल हो गया! उसको माफी किसने नहीं दी थी! उस समय के राष्ट्रपति सम्माननीय प्रणब मुखर्जी जी ने माफी नहीं दी थी। वे आपकी पार्टी से ही राष्ट्रपति बने थे। उन्होंने उसे माफी नहीं दी तो वे कातिल हो

गए? राष्ट्रपति जी कातिल हो गए, सुप्रीम कोर्ट का जज कातिल हो गया? आप उनके साथ हाथ से हाथ मिलाकर जेएनयू में खड़े थे। फोटोग्राफ्स भी मौजूद हैं, मैं आपको फोटोग्राफ्स भी भिजवा दूंगा। आप उनके साथ खड़े थे। इतना ही नहीं, आपने उनको एक बार नहीं, बल्कि दो बार कैंडिडेट भी बनाया और जनता ने उनको ठुकराया, वह भी हमने देखा है। ...(**व्यवधान**)... जयराम रमेश जी, सच्चाई कड़वी होती है, तीखी लगती है, मिर्ची लगती है, तकलीफ होती है, मैं समझ सकता हूं, लेकिन सच्चाई dilute नहीं होती, सच्चाई, सच्चाई ही रहती है। आप बताइए कि नेता जेएनयू कैम्पस गया था या नहीं गया था, हां या न? ...(**व्यवधान**)... गए थे तो आप उनकी solidarity में खड़े हुए थे या नहीं हुए थे? ...(**व्यवधान**)... अगर खड़े हुए थे, तो उसने नारा क्या दिया था? ...(**व्यवधान**)... नारा दिया था, अफ़ज़ल हम शर्मिंदा हैं, तेरे कातिल ज़िंदा हैं। भारत तेरे टुकड़े होंगे, इंशाअल्लाह-इंशाअल्लाह।

MR. CHAIRMAN: Two more minutes!

श्री जगत प्रकाश नड्डा: इसलिए ये जिस तरीके की भाषा की बात करते हैं, इसके साथ-साथ मैं अंत में एक बात और कहना चाहूंगा। आज-कल क्या होता है, अब जयराम रमेश जी को सुनते हैं तो अच्छी बात है, कुछ पोलिटिकल इन्पुट आएगा। खरगे जी की भी सुन लेते तो भी अच्छी बात थी कि कुछ पोलिटिकल इन्पुट आएगा, वे जवानी के दिन याद कराएंगे तो सब लोगों को समझ में आएगा, लेकिन अब क्या होता है कि वोट पाने के लिए अगर आप किसी एनजीओ से इन्पुट लें तो वह इन्पुट हर तरह से नुकसानदेह होता है, तकलीफदेह होता है। आजकल आपने नया नारा ले लिया, ओबीसी-ओबीसी। जैसे वैतरणी पार कराने के लिए ओबीसी का सहारा लेकर चलने की आप बात करते हैं। आपको कोई हमदर्दी नहीं है। आपको ओबीसी से कोई हमदर्दी नहीं है, लेकिन राजनीतिक दृष्टि से आजकल आप ओबीसी-ओबीसी कर रहे हैं। मैं आपसे पूछता हूं कि आप ही की सरकार में काका कालेलकर की रिपोर्ट कहां पड़ी थी, इंदिरा गांधी जी के टाइम पर वह क्या कर रही थी? मैं पूछना चाहता हूं कि यह मंडल कमीशन इंदिरा गांधी जी और राजीव गांधी जी के टाइम पर क्या कर रहा था, कहां धूल खा रहा था? ...(**व्यवधान**)...

श्री जयराम रमेश: आपने कमंडल शुरू किया।

श्री जगत प्रकाश नड्डा: वह तो जब जनता दल की सरकार आई, तो पहली बार रिज़र्वेशन मिला और 27 परसेंट रिज़र्वेशन मिला। मैं यहां यह भी बताना चाहता हूं कि वह रिज़र्वेशन तो मिला ही और उस रिज़र्वेशन के साथ-साथ अभी प्रधान मंत्री मोदी जी ने ओबीसी कमिशन को कांस्टीट्यूशनल स्टेटस दिया है। वह किसी और ने नहीं दिया है। वह कांस्टीट्यूशनल स्टेटस प्रधान मंत्री मोदी जी ने दिया है। इसलिए हम कहते हैं, We don't do lip service, we deliver. We don't do lip service, we don't play politics. हम राजनीति नहीं करते हैं, धरती में जाकर ओबीसी की तकलीफ को समझ कर, उसका निदान करके, उसको आगे बढ़ाने का काम मोदी जी करते हैं। इस बात को हमें समझना होगा। मैं अंत में...

श्री सभापति: यह सेकंड अंत है।

श्री जगत प्रकाश नड्डा: सर, यह लास्ट है। हमारे रिज़र्वेशन पर कई लोग चैंपियन बनने की कोशिश कर रहे हैं, लेकिन वे अपना अतीत और अपना इतिहास नहीं पढ़ते हैं। मैं इसको authenticate कर दूंगा, जो मैं पढ़ रहा हूं। जवाहरलाल नेहरू जी ने कहा था।

श्री सभापति: वे ही documents authenticate करने होते हैं, जिनके बारे में मैं कहता हूं।

श्री जगत प्रकाश नड्डा: सर, आपसे ज़्यादा ready reference कहां आ सकता है, लेकिन Letters to the Chief Ministers में उन्होंने कहा, "This necessitates our getting out of the old habit of reservation and particular privileges being given to this..."

MR. CHAIRMAN: What are you reading?

SHRI JAGAT PRAKASH NADDA: I am reading JawaharLal Nehru's letters.

MR. CHAIRMAN: What is the date?

SHRI JAGAT PRAKASH NADDA): Sir, the date is 10th-11th June, 1961.
"This necessitates our getting out of the old habit of reservations and particular privileges being given to this caste or that caste or that group. The recent meeting that we held here, at which the Chief Ministers were present, to consider national integration, laid down that help should be given on economic considerations and not on caste basis. It is true that we are tied up with certain rules and regulations and conventions about helping the Scheduled Castes and Tribes. They deserve help but, even so, I dislike any kind of reservation, more particularly in the services. I react strongly against anything that leads to inefficiency and second-rate standards. I want my country to be a first class country in everything. The moment we encourage the second-rate, we are lost".

MR. CHAIRMAN: This may be authenticated.

श्री जगत प्रकाश नड्डा: मैं इसलिए कह रहा हूं कि आपकी नीयत क्या थी और आज आपको ओबीसी की चिंता हो गई, आज आपका हृदय परिवर्तन हो गया। देर आए, दुरुस्त आए, सही रास्ते पर आए। चलो, हम अभी भी देश को मजबूत बनाने के लिए साथ चलेंगे।

MR. CHAIRMAN: Please conclude.

श्री जगत प्रकाश नड्डा : मैं आपसे एक कमिटमेंट लेना चाहूंगा कि आप सब लोग विकसित भारत में जुड़े। मैं इन्हीं शब्दों के साथ अपनी बात खत्म करता हूं। आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

MR. CHAIRMAN: The House stands adjourned to meet at 11 a.m...*(Interruptions)*... One second; very briefly.

श्री मल्लिकार्जुन खरगे: सर, very brief का क्वेश्चन नहीं है।...(**व्यवधान**)...

MR. CHAIRMAN: One second. ...(Interruptions)... Please sit down. ...(Interruptions)...

श्री मल्लिकार्जुन खरगे: देखिए, सदन में...(**व्यवधान**)... किसी को जाना है, तो जाइए, लेकिन मुझे क्लैरिफाई करना है।...(**व्यवधान**)...

MR. CHAIRMAN: One second. ...(Interruptions)... I have given permission to the Leader of the Opposition and by his position; he has every right to make a statement. I have only prayed to him to keep it brief.

श्री मल्लिकार्जुन खरगे: महोदय, नड्डा साहब ने जो चंद चीज़ें बताई हैं, वह गलतफहमी भी हो सकती है। वे खुद उसके बारे में धनंजय कीर की किताब पढ़ें, तो उनको मालूम होगा। जो उन्हें सूट करता है, उसे वे क्वोट करते हैं। दूसरी चीज यह है कि बाबा साहेब अम्बेडकर जी को, जिनके लिए बहुत पहले से ही as मल्लिकार्जुन खरगे हम लड़ते आए हैं और आज हर बात पर वे कांग्रेस को टोकने की, मुझे टोकने की और नेहरू जी के खिलाफ बोलने की, ये सब बातें करते हैं। आरएसएस के लोग...मैं सुन रहा था और मुझे दुख हुआ, इसलिए मैं उठकर आया। आपने कहा कि मैं आरएसएस का एकलव्य था।

श्री सभापति: मैं हूं। मैंने 'था' नहीं कहा था।

श्री मल्लिकार्जुन खरगे: तो फिर कांग्रेस के कब थे, फिर कांग्रेस के कब थे? अगर आरएसएस के एकलव्य थे, तो फिर कांग्रेस के कब थे? ...(**व्यवधान**)...

श्री सभापति: सर, आपने बहुत अच्छा प्रश्न पूछा है। जब मैंने कांग्रेस से नाता तोड़ा और एकलव्य बना, वह एक ही साल था। In the same year it happened. सर, आपने पूछा, मैंने बता दिया कि मैं एकलव्य हूं। मैं आपको एक बात और बताना चाहता हूं। एक सेकंड, एक सेकंड। खरगे जी, मैंने भी आपकी तरह बहुत कष्ट सहे हैं। मैंने भी पढ़ाई स्कॉलरशिप से की है, मेरी पढ़ाई में बहुत लगन रही है और ठीक क्या, बहुत अच्छा रहा है। जब मुझे एक बार बुद्धि आ गई, enlightenment आ गया - मैं यह तो नहीं कह सकता कि बुद्ध जैसा enlightenment मुझमें आया, लेकिन पहले मैंने

जो कुछ कहा, उसके बाद जब मैंने जानकारी ली, तो मैंने वास्तव में महसूस किया। मैं आपको बता रहा हूं और मैं निश्चित रूप से कह सकता हूं कि कुछ भी हो जाए, किसी भी जीवित मानव के प्रति मैं इतना आदर नहीं रख सकता कि वह बहुत बड़ा हो जाए।। just think on merit. मुझे लगा बहुत तपस्वी आदमी है, बहुत तपस्या करते हैं, बड़ा कमिटमेंट है, समाज का हित देखते हैं, कोई लक्ष्य नहीं रखते देश हित के अलावा, राष्ट्रीय भावना से ओत-प्रोत हैं, तब मैंने यह कहा। अब भी मैं यह भावना रखता हूं और यह भावना हर दिन बढ़ती जा रही है, यह भावना निरंतर बढ़ती जा रही है।

श्री मल्लिकार्जुन खरगेः सर, मैं आपसे हाथ जोड़कर कहता हूं कि आप इस सदन के मुखिया हैं। आपने हम सबकी रक्षा करनी है, किसी एक फिलॉसफी, आईडियोलॉजी का प्रचार नहीं करना है।

श्री सभापतिः मैं प्रचार नहीं कर रहा हूं..।

श्री मल्लिकार्जुन खरगेः सर, मैं आपको बताता हूं।

श्री सभापतिः मैं तो खूबी बता रहा हूं।

श्री मल्लिकार्जुन खरगेः सर, देखिए, अगर आप ये चीज़ें उस सीट से बोलते हैं, तो इसका गलत मैसेज जाएगा और पूरे देश में जाएगा। ...(**व्यवधान**)... इसीलिए मैं यह बात कर रहा हूं।

श्री सभापतिः सकारात्मक मैसेज, सार्थक मैसेज जाएगा।

श्री मल्लिकार्जुन खरगेः सर, मैं यह बात सुनने के बाद ही यहां पर आया हूं। जब वे बात कर रहे थे, तो मैं neglect कर रहा था।

श्री सभापतिः अब आप कन्क्लूड कीजिए।

श्री मल्लिकार्जुन खरगेः लेकिन आप बोले, यह अच्छा नहीं है। आगे भी आप इसके बारे में राय मत दीजिए। आप अलग हैं। कभी-कभी ऐसा होता है कि भ्रम में बोल देते हैं, लेकिन मैं आपसे विनती करूंगा कि एक चीज़ ...

श्री सभापतिः सर, आपमें और मुझमें एक मतभेद है। मैं बोलते समय बहुत नाप-जोख करता हूं।

श्री मल्लिकार्जुन खरगेः लेकिन यह गलत बोला है।

श्री सभापतिः मैं कोशिश करता हूं कि मैं किसी को आहत नहीं करूं। जब मुझे बहुत पीड़ा होती है तो खून के घूंट भी पीता हूं और बरदाश्त ही करना चाहता हूं। यह जो मैं कह रहा हूं, जो मैंने

संविधान के तहत शपथ ली है, इससे पूरा मेल खाती है। यह मेरी शपथ के बिल्कुल विपरीत नहीं है। जो मैंने कहा है, वह सदन में कहा है।

श्री मल्लिकार्जुन खरगेः सर, इसकी आवश्यकता नहीं थी। इसीलिए मुझे बोलना है। मैं आपसे विनती करता हूं कि इन्होंने जो गलत बातें यहां पर रखी हैं, इनका मैं खंडन करता हूं। बाबा साहेब के बारे में और एक बार पढ़कर आइए, फिर आप डिस्कशन करिए।

MR. CHAIRMAN: The House stands adjourned to meet at 11.00 a.m. on 3rd July, 2024.

The House then adjourned at thirty-seven minutes past eight of the clock till eleven of the clock on Wednesday, the 3rd July, 2024.